@NewsRotary /RotaryNewsIndia March 2019

रोटरी समाचार

Vol.18, Issue 5 | Annual Subscription ₹ 420

Rotary

अध्यक्ष निर्वाचित मार्क मलोनी

रोटरी न्यूज़ पढ़ते हैं

कोलकाता में, रो ई मंडल 3250 के PETS और SETS सम्मेलन को संबोधित करने के बाद रो ई अध्यक्ष निर्वाचित मार्क मलोनी ने *Rotary News* पढ़ने के लिए कुछ समय निकाला।

चित्रः रशीदा भगत

विषयसूची

12 रोटरी के लिए अवरोध का निर्माण न करें
RIPE मार्क मलोनी PETS और SETS बैठकों को संबोधित करते हुये पूरे भारत का दौरा करते है।

22 वापी में रोटरी अस्पताल बाल हृदय सर्जरियाँ करता है
औद्योगिक क्षेत्र में स्थित यह अस्पताल 150 वर्ग किमी के क्षेत्र में औद्योगिक दुर्घटना के शिकार लोगों की एकमात्र उम्मीद है।

28 एक मदद भरा हाथ
750 लोगों को LN4 हाथ लगाकर रोटरी क्लब मेत्तुपलायम ने रिकॉर्ड तोड़े।

32 दान देना और भलाई करना एक आनुवांशिक बाध्यता
एस्टर डीएम हैल्थकेयर ग्रुप के अध्यक्ष आज़ाद मूपेन को नजदीक से जानिए और पता लगाईये कि उन्हें परोपकार पर खर्च करने के लिए क्या प्रेरित करता है।

38 एक रोटरी रैली पहुँची हिमालय
एक कार रैली पर पीडीजी सुबोध जोशी और उनके दल के साथ नेपाल, भूटान और फिर वापसी की उनकी हिमालय यात्रा के साथ जुड़िये।

46 उत्तर-पूर्व में विश्वास का निर्माण
मणिपुर के बच्चों की भलाई के लिए रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्ड्स के अध्यक्ष डी रविशंकर का परिवर्तनकारी निवेश।

60 कथकली-नृत्य की गतिविद्या
केरल का एक अभिन्न नृत्य रूप।

78 सेहत हेतु सचेतन
इस पल में पूरी तरह मौजूद रहने की कला को सीखें।

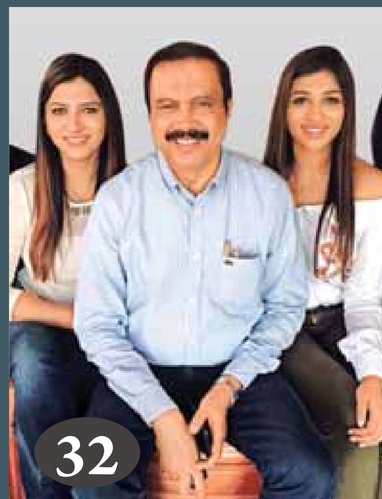

कवर पर : RIPE मार्क मलोनी और RIDE कमल संघवी Saving Little Hearts परियोजना के एक लाभार्थी बच्चे और उसकी माँ के साथ कोलकाता में।

चित्र: रशीदा भगत

आपके पत्र

खुशियाँ फैलाना

फरवरी अंक की कवर तस्वीर पर डी. रविशंकर और उनकी पत्नी पाओला के साथ मणिपुर के स्कूली बच्चों, जिनके लिए स्कूलों के निर्माण हेतु युगल ने ₹1 करोड़ की एक बड़ी राशि दी है, के मुस्कुराते चेहरों को देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। तस्वीरों और लेख ने हम सभी को प्रोत्साहित किया है क्योंकि उन्होंने जरूरतमन्द एवं सुविधाओं से वंचितों के लिए उनकी संपत्ति का दान किया है। यह एक सच्चाई है कि केवल वो जो अपनी संपत्ति साझा करते है उन्हें ही जीवन में खुशियाँ एवं संतोष की प्राप्ति होती है।

संपादक के लेख से मैं उन अवांछित लड़कियों के बारे में पढ़कर दुखी हुआ जिन्हें जन्म से ही महाराष्ट्र में *नकुशी* या *धोंडा* कहा जाता है और आज भी राज्य में ऐसी हज़ारों लड़कियां है जिन्हें इन नामों से पुकारा जाता है।

रोई अध्यक्ष बैरी परिवर्तनकारी सेवा की बात करते है जो दुनिया भर में रोटरी क्लबों के सफल संचालन के लिए समय की मांग है।

यह अच्छी खबर है कि केरल के बाढ़ पीढ़ित इलाकों में घरों के निर्माण के लिए एस्टर ग्रुप और रोटरी ने एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है।

लेख *अध्यक्ष बनने का मार्ग* अत्यंत सूचनाप्रद है एवं मार्गदर्शन के लिए सभी रोटेरियनों द्वारा पढ़ा जाना चाहिए और टीसीए श्रीनिवासा द्वारा लिखित *भूतपूर्व छात्र सम्मेलन* की अग्नि परीक्षा हास्यपूर्ण एवं तथ्यों से परिपूर्ण है।

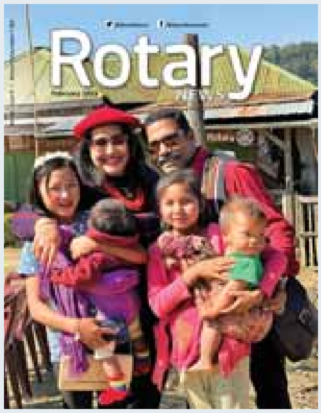

बाकी अन्य सभी लेख प्रभावी है एवं तस्वीरें अनोखी है। इतनी कोशिशों से हर माह एक अच्छी पत्रिका तैयार करने के लिए धन्यवाद।

एम टी फिलिप
रोटरी क्लब त्रिवेन्द्रम सबअर्बन – रो ई मंडल 3211

प्रेरक लेख *एक रोटेरियन और एक कर्नल उत्तर-पूर्व में जीवन परिवर्तित* कर रहे है के लिए धन्यवाद जो कर्नल क्रिस्टोफर रीगो और उनके दल द्वारा मणिपुर में किए जा रहे कार्यों की जानकारी देता है। हम आपसे आग्रह करते है कि आप हमें उनकी संपर्क जानकारी दें ताकि उनकी कुछ परियोजनाओं में हम साझेदारी कर सकें।

रोटेरियन पंकज वर्मा

कर्नल रेगो से फोन नंबर : 70222 60784; 94362 34587 पर संपर्क किया जा सकता है। ई-मेल: chrisrego@sunbirdtrust.com – संपादक।

एक रंगबिरंगी पत्रिका लाने के लिए मेरी तरफ से बधाइयाँ। मेरा गैर रोटेरियन स्टाफ रोटरी न्यूज़ से प्रभावित है और उनका कहना है कि यह शादी के एल्बम की तरह ही रोचक एवं दिलचस्प है, क्योंकि यह इतनी रंगबिरंगी एवं सकारात्मक ऊर्जा से भरी हुई है।

वी पशुपति
रोटरी क्लब इरोड
रो ई मंडल 3202

फरवरी अंक में *रोटरी न्यूज़* दल की प्रशंसा करते हुये इतने सारे पत्रों को देखकर मैं बहुत खुश हुआ।

संपादकीय – *लड़की को शिक्षित करना स्कूल खोलने के समान है;* मजबूत क्लबों की जरूरत के लिए अध्यक्ष बेरी रेसिन का संदेश; रो ई निदेशक सी भास्कर का *सेवा के माध्यम से शांति;* जयश्री का *सूरत ने किया मलोनी का स्वागत;* रशीदा का *निकट भविष्य में एक नई रोटरी एस्टर साझेदारी; ट्रांसजेंडर्स को रोटरी का सहयोग; लड़कियों का सशक्तिकरण;* और *अनोल्ड* गृहल का *दुनिया को जोड़ना* शानदार थे।

बाढ़ से तबाह हुये केरल में घरों के निर्माण के लिए मैं एस्टर ग्रुप और रो ई मंडल 3201 को बधाई देता हूँ।

डेनियल चित्तीलापिल्ली
रोटरी क्लब कलूर
रोई मंडल 3201

सही मुद्दा छेड़ना

फरवरी अंक प्रशंसनीय है। संपादक का सन्देश लड़की को शिक्षित करना स्कूल खोलने के समान है, में रशीदा भगत ने नकुशी (मराठी में अवांछनीय) और धोंदा (पत्थर, या एक बोझ) जैसे शब्दों का उद्धरण दिया है जो तप्त भूमि में पानी की तलाश करने वाली ग्रामीण लड़कियों की दुर्दशा का वर्णन करते है। लेकिन ये सभी उपनाम अब इस दुनिया को पिछड़ेपन से मुक्त करने और बालिकाओं को शिक्षित करने के महत्व के बारे में जागरूकता फ़ैलाने की रोटरी की प्रतिज्ञा को नहीं रोक पाएँगे।

अन्य लेख जैसे रोई अध्यक्ष बेरी रेसिन का सन्देश *मजबूत क्लब परिवर्तनकारी परियोजनाओं को लागू करते है;* और रोई निदेशक सी भास्कर का सन्देश *सेवा के माध्यम से शांति* रोटरी क्लबों के लिए सूचनाप्रद है। और सभी चित्र और लेख प्यारे है एवं विचार करने योग्य है।

ए के संदवार
रोटरी क्लब धनबाद मिडटाउन
रो ई मंडल 3250

आपके पत्र

बालिका शिक्षा पर सम्पादकीय एक उत्कृष्ट जागरूकता पैदा करती है जो हमारे समुदाय के लिए बहुत आवश्यक है। आमतौर पर बालिकाओं को गृहकार्य या निर्माण स्थलों पर श्रम कार्य हेतु भेजा जाता है। इसलिए माता-पिता को उनकी बच्चियों को स्कूल भेजने हेतु शिक्षित करना आवश्यक है। हमारा ध्यान बच्चों की शिक्षा के लिए अच्छे संस्थानों को विकसित करने पर अधिक होना चाहिए।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में ना केवल शिक्षा बल्कि स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों की भी आवश्यकता है क्योंकि वहाँ उपचार के लिए पर्याप्त चिकित्सीय सुविधाएँ नहीं है। पूर्वोत्तर से बहुत से लोग इलाज करवाने हेतु बेंगलुरु, हैदराबाद और चेन्नई आते है।

इम्फाल में एक शानदार अखिल महिला बाज़ार इस अंक में एक अन्य रोचक कहानी है। महिलाओं को स्वरोजगार की जरूरत है और रोटरी को हमारे समुदाय के ऐसे जरूरतमंद लोगों के लिए सेवा परियोजनाएं करनी चाहिए। ऐसे शानदार और सूचनाप्रद लेखों को प्रकाशित करने के लिए संपादकीय दल को बधाइयाँ।

पीआरएन चंद्र मौली,
रोटरी क्लब बेरहामपुर मिडटाउन
रो ई मंडल 3262

फरवरी अंक बहुत बढ़िया है। इसके लिए बधाइयाँ। कृपया पृष्ठ 80 के लेख *मैसूर में एक रोटरी सर्कल* को देखें। क्लब के मंडल का नंबर 3181 के बजाए 3180 छपा है। यह आपकी जानकारी के लिए है।

आ चा अशोक कुमार
रोटरी क्लब मैसूर नॉर्थ - रो ई मंडल 3181

बेंगलुरु की इंटरेक्टर तन्वी रॉय ने नौकरों और वाहन चालकों के बच्चों की दिन में देखभाल करने हेतु एक शिशु सदन बनाने के विचार को प्रोत्साहित किया जो बहुत ही प्रेरणात्मक है। बच्चों की वर्तमान पीढ़ी पहले से ही अपने-अपने समुदाय की समस्याओं को सुलझाने की कोशिश कर रहे है जो रोटरी आन्दोलन और देश के लिए अच्छा शकुन है। तन्वी और हमारे इंटरेक्टरों को और शक्ति मिले।

गोपीनाथ एन
रोटरी क्लब बेंगलोर इंदिरानगर
रो ई मंडल 3190

जनवरी अंक में लेख *रोटरी शहीदों को सलाम करती* है को पढ़कर मैं भावुक हो गया क्योंकि मैं एनसीसी में था और अपने कॉलेज के दिनों में बेनट युद्ध करने में एक 'सी' प्रमाणपत्र धारक था। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि कैसे भारतीय सैनिक राष्ट्र और उसके नागरिकों की सुरक्षा करने हेतु अपनी सर्वोत्तम सेवा प्रदान कर रहे है, चाहे मौसम बहुत अधिक गर्म हो या बहुत अधिक ठंडा। प्रत्येक नागरिक को उनके और उनके बलिदान के बारे में गर्व महसूस करना चाहिए। चेन्नई के रोटरी क्लब द्वारा हमारे शहीदों को श्रद्धांजलि देने पर एक उत्कृष्ट लेख पेश करने के लिए आपका धन्यवाद।

वेणु गोपाल यालामंचिली
रोटरी क्लब गुंटूर
रो ई मंडल 3150

एक शक्तिशाली सन्देश

जनवरी अंक में रो ई निदेशक सी भास्कर द्वारा लिखित एक प्रेरणात्मक सन्देश, जिसका शीर्षक था *चौतरफा परीक्षण,* में वह कहते है, ''मदद करने वाले हाथ प्रार्थना करने वाले होठों से बेहतर होते है।'' जिससे उनका मतलब था कि समाज की सेवा करना वास्तविक जीवन में सबसे शक्तिशाली नैतिकता है।

दूसरा, फ्रैंक ब्युर्स द्वारा लिखित लेख *सीमाओं से परे सेवा के 20 वर्ष* मानवता के लिए कुछ अच्छा करने हेतु रोटरी की भावना और जूनून के जादू की व्याख्या करता है। झठखझ राजेन्द्र साबू, जिन्होंने अफ्रीकी राष्ट्रों में चिकित्सीय मिशन किए, दिखाते है कि कैसे उन्होंने रोई अध्यक्ष के रूप में अपनी ही थीम 'स्वयं से परे देखिये' का अनुसरण किया है। इस तरह के मिशन के दौरान उनके चिकित्सीय दल ने कई खतरों का सामना किया, और 20 वर्षों के बाद, उन्होंने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में 67,000 से भी अधिक सर्जरियों के आयोजन को सुनिश्चित किया है। साबू और उनकी पत्नी उषा की भूमिका हमेशा याद रखी जाएगी और रोटरी में दूसरों को प्रेरित करेगी।

शीला नाम्बियार का लेख *40 के बाद फिट रहें* पढ़ने योग्य है क्योंकि यह प्रत्येक रोटेरियन से संबंधित है। यह हमें हमारे जीवन को चिंता-मुक्त, शांत रखने और एक स्वस्थ जीवन के महत्व के बारे में बताता है।

नवीन आर गर्ग
रोटरी क्लब सुनाम
रो ई मंडल 3090

सशक्त महिलाएं

रशीदा भगत द्वारा लिखित लेख इम्फाल में एक अखिल महिला बाज़ार एक शानदार कृति है। यह महिलाओं को स्व-निर्मित उद्यमी बनने हेतु प्रेरित करता है, इस प्रकार वे स्वयं अपना आर्थिक उत्थान कर सकती है। साथ ही, यह कि वे 10 प्रतिशत के कमीशन पर पुराने मुद्रा नोटों को नए मुद्रा नोटों के साथ बदल रही है, एक दिलचस्प खबर है।

एस. बालासुन्दरराज
रोटरी क्लब शिवकाशी सेंट्रल
मंडल 3212

अपने विचार संपादक को भेजें: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**
Click on Rotary News Plus in our website www.rotarynewsonline.org to read about more Rotary projects.

Governors Council

RI Dist 2981	DG	S Piraiyon
RI Dist 2982	DG	Nirmal Prakash A
RI Dist 3000	DG	RVN Kannan
RI Dist 3011	DG	Vinay Bhatia
RI Dist 3012	DG	Subhash Jain
RI Dist 3020	DG	Guddati Viswanadh
RI Dist 3030	DG	Rajiv Sharma
RI Dist 3040	DG	Gustad Anklesaria
RI Dist 3053	DG	Priyesh Bhandari
RI Dist 3054	DG	Neeraj Sogani
RI Dist 3060	DG	Pinky Patel
RI Dist 3070	DG	Barjesh Singhal
RI Dist 3080	DG	Praveen Chander Goyal
RI Dist 3090	DG	Dr Vishwa Bandhu Dixit
RI Dist 3100	DG	Deepak Jain
RI Dist 3110	DG	Arun Kumar Jain
RI Dist 3120	DG	Stuti Agrawal
RI Dist 3131	DG	Dr Shailesh Palekar
RI Dist 3132	DG	Vishnu S Mondhe
RI Dist 3141	DG	Shashi Sharma
RI Dist 3142	DG	Dr Ashes Ganguly
RI Dist 3150	DG	Ramesh Vangala
RI Dist 3160	DG	Konidala Muni Girish
RI Dist 3170	DG	Ravikiran Janradan Kulkarni
RI Dist 3181	DG	Rohinath P
RI Dist 3182	DG	Abhinandan A Shetty
RI Dist 3190	DG	Suresh Hari S
RI Dist 3201	DG	A Venkatachalapathy
RI Dist 3202	DG	Dr E K Ummer
RI Dist 3211	DG	E K Luke
RI Dist 3212	DG	K Raja Gopalan
RI Dist 3231	DG	C R Chandra Bob
RI Dist 3232	DG	Babu Peram
RI Dist 3240	DG	Dr Sayantan Gupta
RI Dist 3250	DG	Kumar Prasad Sinha
RI Dist 3261	DG	Nikhilesh M Trivedi
RI Dist 3262	DG	Bhabani Prasad Chowdhury
RI Dist 3291	DG	Mukul Sinha

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
RIPN	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee	Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RIDE	Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RIDE	Kamal Sanghvi	RI Dist 3250

Executive Committee Members (2018–19)

DG Rajiv Sharma — RI Dist 3030
Chair – Governors Council

DG Pinky Patel — RI Dist 3060
Secretary – Governors Council

DG Subhash Jain — RI Dist 3012
Secretary – Executive Committee

DG A Venkatachalapathy — RI Dist 3201
Treasurer – Executive Committee

DG Shashi Sharma — RI Dist 3141
Member – Advisory Committee

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India. Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by P T Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by P T Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

मुश्किल हालात में शांति की बात करना आसान नहीं है

जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में सीआरपीएफ के एक काफिले पर हुए दिल दहला देने वाले बर्बर और घिनौने आतंकी हमले में 40 जवानों की दर्दनाक मौत हो गई, जिसने हमारे पूरे देश को शोक और अवसाद की लहर में डुबो दिया है। इस त्रासदी के बाद द रोटरी फाउंडेशन का शान्ति कार्यक्रम (झशरलश ीसिीराश) एक बार फिर से सुर्खियों में है कि आखिर इस कार्यक्रम के द्वारा वो क्या प्रयास कर रहा है, जिसके तहत इसने आपसी साहचर्य के लिए विश्व के सात प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के साथ शांति और संघर्ष के संकल्प *(Peace and Conflict Resolution)* में सहभागिता की है। इसके द्वारा प्रायोजित पीस फेलो का चयन, विभिन्न क्षेत्रों से, शांति और संघर्ष के समाधान करने में सक्षम उत्कृष्ट व्यक्तियों में से किया जाता है। हाल ही में PRIP और TRF ट्रस्टी के आर रविन्द्रन की अध्यक्षता वाली एक समिति ने पीस फेलो पाठ्यक्रम में छोटे मोटे सुधार करने का फैसला किया ताकि इसे कम शैक्षणिक और अधिक व्यावहारिक बनाया जा सके जिससे अपने अध्येताओं को रोजगार के बेहतर अवसर मिल सकें। ''हम ऐच्छिक विषय भी दे रहे हैं जो हमारे छह फोकस क्षेत्रों से संबंधित हैं ताकि स्नातक रोटरी क्लबों के साथ संयुक्त परियोजनाओं पर काम कर सकें क्योंकि हम चाहते हैं कि वे रोटरी परिवार का हिस्सा बनें।''

आज इतनी ज़्यादा संघर्ष और हिंसा व्याप्त है जो हमारी दुनिया के टुकड़े कर उसमें दरार पैदा कर रही है । सीरिया का शरणार्थी संकट यकीनन आज सबसे बड़ा शरणार्थी और विस्थापन संकट है। 2011 के बाद से, सीरिया के गृह युद्ध ने तकरीबन 5.5 मिलियन लोगों को सीरिया में अपने घर से पलायन करने के लिए मजबूर किया है। कभी स्वाभिमानी और समृद्ध रहे सीरिया के नागरिकों का सैलाब, अनजान देश में शरण मांगने को मजबूर हैं, जहां अक्सर वे अनधिकृत नौकाओं में सार्डिन मछलियों की तरह ठूंस दिए जाते हैं। उन खतरनाक समुद्री यात्राओं में कई डूब जाते हैं; लेकिन गिनता कौन है।

एक अत्यंत महत्वपूर्ण सवाल यह है कि शांति कार्यक्रम जैसे टीआरएफ, हिंसा और संघर्ष को समाप्त खत्म करने और हमारी अशांत दुनिया में विवेक और शांति स्थापित करने में कितने सहायक हो सकते हैं ।अपने छह पीस सेन्टर के माध्यम से रोटरी, हर साल 50 लघु और50 दीर्घकालिक शांति कार्यक्रमों के लिए, कुल 100 छात्र प्रायोजित करती है, ।

TRF ट्रस्टी गुलाम वहानवटी का कहना है कि TRF ने भारत और पाकिस्तान सहित दुनिया भर में पीस फैलो प्रायोजित किये हैं, जो स्वैच्छिक संगठनों के साथ-साथ सरकार में विभिन्न स्तर पर कार्य कर रहे हैं, ''और हमारे पीस कार्यक्रमों के माध्यम से, उचित कौशल और प्रशिक्षण के साथ, दुनिया में समस्याओं को सुलझाने और शांति का प्रसार करने के लिए तैयार हैं। महाराष्ट्र के एक पुलिस अधिकारी, जिन्होंने बाद में पुलिस में सर्वोच्च, पुलिस महानिदेशक का पद प्राप्त किया - ड्यूक यूनिवर्सिटी / यूनिवर्सिटी ऑफ़ नॉर्थ कैरोलिना सेंटर से स्नातक, प्रवीण दीक्षित - हमारे पहले पीस फैलोज़ में से एक थे। उन्होंने विभिन्न मंच से इस बात को स्वीकार किया है कि पीस फैलो के पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण का पुलिस अधिकारी रहते हुए उनके काम काज पर कितना प्रभाव पड़ा है।

हाल के वर्षों में, जहां एशियाई, मध्य पूर्वी और अफ्रीकी देशों ने इतना अधिक संघर्ष देखा है इसीलिए TRF के निर्णय - अफ्रीका, मध्य पूर्व और लैटिन अमेरिका में अधिक शांति केंद्र स्थापित करने का महत्व बढ़ जाता है।

इस संघर्ष और भू-राजनीतिक समस्याओं के हल व शांतिपूर्ण समाधान के लिए झूझते रहने की ज़रुरत है, क्योंकि भरोसा कायम करने में वक़्त ज़्यादा लगता है। हमारी दुनिया में सुख और शांति की तलाश के लिए और भी कई संगठनों को रोटरी से जुड़ने की आवश्यकता है। कौमपरस्ती और जंग सिर्फ ज़्यादा खून खराबे, ज़्यादा तकलीफों, ज़्यादा दुर्गति और सिर्फ लोगों के विस्थापन के हालात ही पैदा हो सकते हैं, लेकिन आतंक की ताज़ा करतूत के बाद, भारत में जहां इतना ज़्यादा आक्रोश और पीड़ा है अमन शांति की बात करना आसान नहीं है।

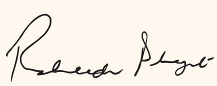

रशीदा भगत

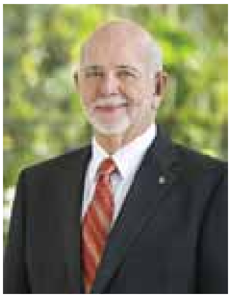

रोटरी के लिए रोटरेक्टरों को प्रेरित करें

BE THE INSPIRATION

प्रिय साथी रोटेरियनों,

रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के अध्यक्ष के रूप में सेवारत होने के नाते जिस चीज़ की मैं सबसे ज्यादा सराहना करता हूँ वह वे लोग है जिनसे मिलने का मौका मुझे मिलता है। मेरा अधिकांश समय दुनियाभर के रोटरी क्लबों की यात्रा और दौरा करने में जाता है। एक रोटेरियन का स्वागत कुछ खास होता है। लेकिन मैं आपको बता दूं कि मेरे लिए रोटरेक्टरों द्वारा किये जाने वाले गर्मजोशी से भरे स्वागत से बढ़कर स्वागत और कहीं नहीं होता। ये ऐसे युवा लोग है जो रोटरी आदर्शों के लिए प्रतिबद्ध है, जो सेवा में अपनी जी-जान लगा रहे, और जो, इस प्रक्रिया में आनंद उठाना नहीं भूलते।

हाल ही में मेरे द्वारा की गई यात्राओं में से एक विशिष्ट यात्रा घाना की थी, जहाँ मैंने एक मंडल का दौरा किया जिसमें कुछ 60 रोटरेक्ट क्लब थे। वे अपनी संख्या से संतुष्ट नहीं थे, बल्कि - वास्तव में, वे उसे दोगुना करने की योजना को लेकर उत्साहित थे। वे ऐसा भी करेंगे।

रोटरेक्टर बच्चों को पोलियो की दवा पिला रहे है। जहाँ पर खून की आपूर्ति गंभीर रूप से कम है वहाँ वे रक्त दान भी कर रहे है। वे उन विद्यालयों को हाथों की धुलाई की सुविधाएं प्रदान कर रहे है जहाँ पहले बच्चों के पास सफाई का कोई साधन नहीं था। संक्षिप्त में, वे सभी परिवर्तनकारी सेवाएँ दे रहे है: ऐसी परियोजनाएं कर रहे जो वास्तव में समुदायों की ज़िंदगियों में परिवर्तन लाती है।

नाकिवेल, यूगांडा, में एक विशेष रोटरेक्ट क्लब अपने समुदाय - जो एक शरणार्थी बस्ती है - में परिवर्तन ला रहा है। ये युवा दूसरों के द्वारा नुकसान के रूप में देखे जाने वाली चीज़ों को उन लोगों के लिए सेवा के अवसरों में तब्दील कर रहे है, समुदाय का निर्माण कर रहे है और नई संभावनाओं को खोल रहे है, जिन्हें इसकी बहुत अधिक आवश्यकता है।

तुर्की में, रोटरेक्टर अस्पताल में बच्चों से हर बुधवार मिल रहे है ताकि उनके साथ खेल खेलकर उनका उत्साहवर्धन कर सकें। वे उनके विश्विद्यालय में नए विद्यार्थियों को परामर्श दे रहे है और उन्हें नेतृत्व कौशल सिखा रहे है।

रोटरेक्टर सेवा की इस नई सदी में अधिक प्रासंगिक होने के लिए रोटरी की राह को रोशन कर रहे है। और विश्व रोटरेक्ट सप्ताह, जिसे हम 11-17 मार्च तक मनाते है, अपने स्थानीय रोटरेक्टरों को जानने और इस बारे में बात करने का सही मौका है कि उनके साथ मिलकर आपका क्लब कैसे कार्य कर सकता है। यदि आपके रोटरी क्लब ने पहले से किसी रोटरेक्ट क्लब को प्रायोजित नहीं किया है, तो जान लीजिए कि आपको ऐसा करने के लिए किसी कॉलेज या यूनिवर्सिटी के नजदीक होने की आवश्यकता नहीं है: समुदाय-आधारित रोटरेक्ट क्लब एक बढ़िया विकल्प है। और याद रखिये कि रोटरेक्टर रोटरी परिवार का ही हिस्सा है।

जब रोटरेक्टर उनके रोटरेक्ट क्लब को छोड़ने हेतु तैयार होते है, तो हम नहीं चाहते कि वे उस रोटरी परिवार को भी पीछे छोड़ दें। मैं सभी रोटेरियनों से रोटरी क्लब में उनके पारगमन या एक नए क्लब की शुरुआत करने में उनकी मदद करने का आग्रह कर रहा हूँ: मुझे उतने नए क्लबों को चार्टर करने में ख़ुशी होती है जितनों की हमें आवश्यकता उन सबको ऐसी जगह प्रदान करने के लिए है जहाँ उन्हें दुनिया को बेहतर बनाते हुए घर जैसा एहसास हो। सेवा मज़ेदार होना चाहिए, प्रेरणात्मक होनी चाहिए, और यह सबके लिए खुली होनी चाहिए।

यदि कोई ऐसी चीज़ है जिसमें रोटरी हमेशा से उत्कृष्ट रही है, तो वह है इसकी विविधता। पूर्व में, अक्सर इसका मतलब होता था पेशे, राष्ट्रीयता और दृष्टिकोण की विविधता। जब हम उम्र और लिंग की विविधता की बात करते है, तो हमने काफी उन्नति की है, और जब हम अपने संगठन में अधिक रोटरेक्टरों को शामिल करते है, तो हम पहले से अधिक मजबूत बनते है।

रोटरी शक्तिशाली है। रोटरेक्ट के साथ, यह अजेय है। कंधे से कंधा मिलाकर चलने पर, हम में समाज के हर हिस्से और हर उस व्यक्ति के लिए *प्रेरणा बनने* की क्षमता है जिससे हम मिलते है।

बेरी रेसिन

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

रो ई निदेशक

का संदेश

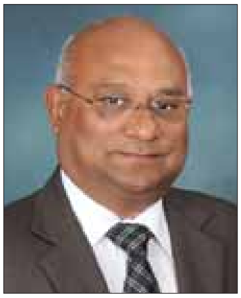

स्वच्छता का पूर्ण चक्र

प्रिय रोटेरियनों,

मानव अस्तित्व पानी की पहुँच पर निर्भर करता है। जब सूखे की मार पड़ती है तो कृषि आधारित अर्थव्यवस्थाओं के लिए परिणाम विनाशकारी होते है। उपज कम हो जाती है, खाद्य आपूर्ति कम हो जाती है, कीमतें बढ़ती है, किसान अपनी आजीविका खो देते है। अधिक गंभीर मामलों में, सूखे से भुखमरी और मौतें हो सकती है। यहाँ तक कि जहाँ पानी उपलब्ध भी होता है, हो सकता है वह स्वास्थ्यकर ना हो और इससे गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती है। दुर्भाग्य से, यह मुद्दा नहीं है। करोड़ों लोग फिर भी सफाई की कमी एवं खराब स्वच्छता आदतों के कारण होने वाली जलजनित समस्याओं से पीड़ित होते है एवं मरते है।

जहाँ हम शौचालयों तक पहुँच के बारे में अधिक बारे करते है, वहीं समग्र स्वच्छता प्रबंधन, जिसमें मल प्रबंधन के निपटान जैसा मुख्य मुद्दा शामिल है, पर दिया जाने वाला ध्यान पर्याप्त नहीं है। इन ऑन-साइट प्रणालियों से निकालने वाला असंसाधित अपशिष्ट अक्सर खुली नालियों, जल स्त्रोतों एवं खाली ज़मीनों जैसी अनचाही जगहों पर जाता है और भूजल प्रदूषण एवं जल आपूर्ति के मल-संदूषण जैसे खतरों को बढ़ाता है। फीकल स्लज एवं सेप्टेज मैनेजमेंट पर बनी राष्ट्रीय नीति के अनुसार, फीकल स्लज ट्रीटमेंट (एफ़एसटी) में सुरक्षित निपटान या पुनःप्रयोग के लिए चार चरण होते है जो जल स्त्रोतों के प्रदूषण एवं दूषित जल से फैलने वाली बीमारियों को रोकने में महत्वपूर्ण है। संसाधन के दौरान, ठोस एवं तरल अपशिष्ट को अलग किया जाता है, और तरल अपशिष्ट पौधों एवं कंकड़ के माध्यम से प्राकृतिक छनाई से गुजरता है, जिसके बाद वह परिपाक कुंड में जाता है। एक बार जल के संसाधित होने के बाद, वह निपटान करने या पुनःप्रयोग करने के लिए सुरक्षित होता है। ठोस अपशिष्ट का पृथक संसाधन होता है, जिससे दुर्गंध एवं विषाक्त पदार्थों से मुक्त खाद मिलती है जिसे उर्वरक के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है।

करुंगुजही तमिलनाडू का पहला और शायद भारत का भी पहला नगर है जिसने एफ़एसटी सुविधा का निर्माण किया है। इस प्रकार से 'स्वच्छता के पूर्ण चक्र' - शौचालय तक पहुँच, सुरक्षित संरोधन, परिवहन (नालियों या ट्रकों के माध्यम से), और अंततः मल के संसाधन एवं निपटान - को अपनाने वाले भारत के कुछ शहरों में से करुंगुजही एक बन गया है। स्थानीय प्रशासन एवं इस नगर के निवासी हमारी प्रशंसा के हकदार है।

दो हिन्दी फिल्मों, *टॉयलेट: एक प्रेम कथा* और *पैडमैन,* ने स्वच्छता एवं मासिक धर्म स्वच्छता की समस्याओं पर रोशनी डालते हुये लोगों में जागरूकता पैदा की। फ़िल्में और मीडिया जन संचार के शक्तिशाली साधन है। आज रोटरी द्वारा समुदाय को 'स्वच्छता का पूर्ण चक्र' एवं पानी के उचित प्रयोग एवं उसके संरक्षण के बारे में बताने की आवश्यकता है। ऐसा करके, हम रोटरी की सार्वजनिक छवि में भी वृद्धि करते है।

रोटरी के थळपड कार्यक्रम के शुरू होने और भारत सरकार के प्रयासों के बाद, हमारे देश में स्कूली बच्चों की सेहत की रक्षा करने के लिए बड़े सुधार किए गए है। करोड़ो स्कूली बच्चों के पास अब शुद्ध पेय जल, शौचालयों एवं बुनियादी स्वच्छता तक पहुँच है।

अब सही समय आ गया है कि हम पानी की उपलब्धता को बढ़ाने, बर्बादी को कम करने, व्यर्थ उपयोग की पहचान करने और कार्यक्षम उपयोग को बढ़ाने के लिए अभियानों एवं संगोष्ठियों को आयोजित करके शहरी एवं ग्रामीण लोगों में जागरूकता फैलाये और साथ ही पानी के पुनःप्रयोग को बढ़ाए, जैसा कि सिंगापुर और इस्राइल में बड़े पैमाने पर किया जा रहा है।

रोटरी जिन समुदायों की सेवा करती है उनके लिए रोटरी की गतिविधियां हमेशा एक प्रेरणा होनी चाहिए।

सी भास्कर

निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

District Wise TRF Contributions as on January 2019

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
			India				
2981	29,218	3,029	0	8,000	40,247	190	4.2
2982	42,254	4,424	0	243	46,921	254	8.8
3000	10,631	1,000	72,766	29,265	113,661	18	0.4
3011	61,865	5,668	19,261	19,930	106,723	105	3.2
3012	64,222	150	269,069	8,800	342,241	73	2.2
3020	14,375	58,875	2,625	5,000	80,875	54	1.4
3030	13,747	0	0	0	13,747	6	0.1
3040	2,509	0	19,245	0	21,755	3	0.1
3053	44,857	0	0	0	44,857	13	0.5
3054	(18,582)	0	88,214	0	69,633	30	0.5
3060	12,100	796	145,229	102,381	260,506	588	14.3
3070	77,128	300	0	0	77,428	266	9.2
3080	71,272	8,702	15,657	5,000	100,631	57	1.8
3090	26,635	0	0	0	26,635	69	3.4
3100	19,623	475	0	0	20,098	76	4.6
3110	24,229	2,630	29,215	0	56,075	41	1.1
3120	53,960	0	217,897	0	271,857	53	1.7
3131	234,767	5,263	205,346	33,203	478,579	715	14.0
3132	10,002	310	14,571	40,000	64,884	19	0.5
3141	448,114	8,383	749,075	26,286	1,231,858	552	11.0
3142	239,566	50	(438)	0	239,178	476	15.1
3150	66,844	2,043	61,487	313,467	443,841	446	12.8
3160	49,081	580	0	9,287	58,949	112	4.7
3170	58,215	2,610	16,486	0	77,311	175	3.3
3181	70,530	691	0	103	71,324	239	7.9
3182	58,427	100	11,367	0	69,894	227	7.2
3190	67,178	4,197	10,530	1,449,359	1,531,264	487	10.2
3201	43,168	10,236	180,987	0	234,391	124	2.4
3202	14,034	19,762	0	0	33,796	38	0.8
3211	34,859	2,423	0	1,515	38,797	172	3.9
3212	87,032	6,530	5,250	24,000	122,812	99	2.5
3231	24,489	2,480	4,286	3,500	34,755	223	7.5
3232	99,622	785	122,867	1,000	224,274	129	3.0
3240	52,075	208	525	0	52,808	98	3.4
3250	17,086	1,834	9,216	0	28,136	39	1.1
3261	11,718	1,100	(1,492)	2,000	13,327	16	0.6
3262	27,244	1,429	900	6,213	35,786	100	3.1
3291	91,626	0	79,028	800	171,455	191	5.3
India Total	**2,355,720**	**157,062**	**2,349,170**	**2,089,351**	**6,951,303**	**6,573**	**4.7**
3220 **Sri Lanka**	72,096	2,725	2,626	7,000	84,447	128	7.1
3271 **Pakistan**	33,122	27,799	2,275	0	63,196	20	1.4
3272 **Pakistan**	18,308	2,141	0	0	20,449	25	0.9
3281 **Bangladesh**	106,949	2,900	48,132	15,756	173,737	169	3.1
3282 **Bangladesh**	36,550	910	0	3,000	40,460	84	2.1
3292 **Nepal**	190,029	12,711	91,632	0	294,372	282	6.5
South Asia Total	**2,812,774**	**206,248**	**2,493,835**	**2,115,107**	**7,627,965**	**7,281**	**4.6**
World Total	**65,948,448**	**16,631,160**	**10,465,887**	**16,146,916**	**109,192,411**		

Source: RI South Asia Office

NiveshGuru™
SAMPATTI KI UNATTI

GROW YOUR WEALTH

NiveshGuru, a one-stop solution for all your investment needs.

KshetraGuru® PROPERTY

SwarnaGuru® GOLD

FDGuru® FIXED DEPOSIT

VyaparGuru® STOCK BROKING

ShuruGuru™ IPO

YojanaGuru® GOVERNMENT BONDS

NidhiGuru™ MUTUAL FUND

AmulyaGuru™ PRECIOUS STONES

Nivesh Guru Advisors Private Limited
68-B, Nariman Bhavan, Nariman Point, Mumbai - 400021

+91 22 2288 0808 | info@niveshguru.in | www.niveshguru.in

रोटरी के लिए अवरोध का निर्माण न करें

रशीदा भगत

एक महत्वपूर्ण संदेश, जो रो ई अध्यक्ष - निर्वाचित मार्क मलोनी ने 3291, 3232 और 3030 मंडलों के आगामी अध्यक्षों और सचिवों को दिया, वो ये कि ऐसे ''अवरोधों'' का निर्माण न करें जो लोगों को रोटरी में शामिल होने से रोकें।

इन तीन मण्डलों के PETS - SETS सत्र को संबोधित करते हुए, उन्होंने बार-बार पारिवारिक संबंधों के महत्व पर ज़ोर दिया और कहा, ''हमें अपने सदस्यों से, अपने परिवार और रोटरी में से एक को चुनने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। आइए, मौजूदा संस्कृति में परिवर्तन लाने के लिए कुछ व्यावहारिक कदम उठाएं, अपनी अपेक्षाएं वास्तविक रखें और रोटरी के सभी कार्यक्रमों, आयोजनों में बच्चों का अभिनंदन करें।''

उन्होंने रोटरी क्लबों से संबंधित एक और महत्वपूर्ण बात बताई ''समाज-सेवी युवा पेशेवरों का स्वागत करें, और नई पीढ़ी के नेताओं के निर्माण के लिए उनको जोड़ें।। एक व्यस्त पेशेवर के लिहाज से, क्लब के अध्यक्ष को समय से पाबन्द करने पर बहुत ज़्यादा ज़ोर नहीं देनी चाहिए। स्वयंसेवी के पद को हम पूर्ण जवाबदेही वाला पद बनाकर, उन लोगों के लिए दरवाजे बंद कर रहे हैं जिनकी हमें रोटरी में सबसे ज्यादा जरूरत है, जो कई दशकों तक सेवा और नेतृत्व की क्षमता रखते हैं।''

2019-20 के अपने थीम *रोटरी दुनिया को जोड़ती है,* पर प्रकाश डालते हुए मलोनी ने कहा

RIPE मार्क मलोनी, RID सी भास्कर, माला, DGE जी चंद्रमोहन मंजुला, PRID पी टी प्रभाकर और नलिनी, निर्वाचित महिला अध्यक्षों के साथ चेन्नई में संचालित रो ई मंडल 3232 के PETS/SETS में।

कि रोटेरियन्स को भी सदस्यों के लिए नए रास्ते खोलने की जरूरत है, ''नए और अधिक सम्बन्ध बनायें । हमें रोटेरेक्टर्स को शानदार भागीदारों के रूप में अपनाने की आवश्यकता है जो कि वो हैं।'' उन की योग्यता और कौशल रोटरी के लिए और अधिक प्रभावशाली हो सकता है। पहले से ही रोटरी के कई मुद्दों पर उनकी पकड़ अच्छी है और ''आपको उन्हें केवल दिशा दिखाने की आवश्यकता है।'' सामाजिक मुद्दों को लेकर उनमें उत्साह था और समाज की जरूरतों को ढूंढने में काफी अच्छे थे, लचीले थे, सोशल मीडिया से भली - भांति जुड़े थे और जानते थे कि बदलाव कैसे लाना है।

आगामी रो ई अध्यक्ष ने कहा कि जब वह रोटरी क्लब डिकेटर, अलबामा के अध्यक्ष बनने वाले थे, उस समय अमेरिका के केवल कुछ ही हिस्सों में PETS होती थी, लेकिन उनके मंडल में नहीं। ''यह 1985 की बात है ; लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं बहुत बूढ़ा हूं। सिर्फ इतना ही है कि रोटरी में मेरी शुरुआत जल्दी हुई और 30 की उम्र में ही क्लब अध्यक्ष बन गया था।'' अध्यक्ष के रूप में उन्होंने जो सीखा, अपने बाद के पदों डीजी, रो ई निदेशक और ट्रस्टी पद पर वही लागू किया है। ''और आज भी मैं हर

स्वयंसेवी के पद को हम पूर्ण जवाबदेही वाला पद बनाकर, उन लोगों के लिए दरवाजे बंद कर रहे हैं जिनकी हमें रोटरी में सबसे ज्यादा जरूरत है, जो कई दशकों तक सेवा और नेतृत्व की क्षमता रखते हैं।

RIPE मार्क मलोनी

जयश्री

जब 'नेतृत्व के उदाहरण बनो' ने पंड्या को मुसीबत में डाला

ऊ 3030 के क्लब के अध्यक्षों और सचिवों को संबोधित करते हुए ठखउऋ भरत पंड्या ने उनसे आग्रह किया नेतृत्व के रूप में स्वयं उदाहरण पेश करें जो कि नेतृत्व का सार है। ''यदि आप चाहते हैं कि आपके सदस्य नए सदस्यों को शामिल करें और परियोजनाओं में मौजूद रहें, तो सबसे पहले यह सब आपको करना होगा। यदि आप चाहते हैं कि वे टीआरएफ में योगदान दें, तो सबसे पहले आपको और मुझे हमारी जेबों में हाथ डालना होगा और देना होगा। *'Lead the way'* बिल बॉयड का थीम था, जब वह रो ई अध्यक्ष थे और मैं उनका गवर्नर।''

माहौल की गंभीरता को कम करते हुए पंड्या ने कहा कि कभी-कभी ऐसा मंत्र आपको मुसीबत में भी डाल सकता है। जैसा कि उनके गवर्नर काल में उनके साथ हुआ था जब वह इस सिद्धांत की वकालत करते थे। ''हमारे मंडल में रोटरी सेवा सप्ताह मनाया जाता है ... समाज पर प्रभाव डालने के लिए। पहले दिन एक शतरंज टूर्नामेंट का आयोजन किया गया और इसका उद्घाटन एक अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी द्वारा किया गया था, और क्लब ने कहा कि पहला गेम आपको उसके साथ खेलना होगा। अगले दिन रो क्लब मुंबई मिडटाउन इस्कॉन के साथ मिडडे मील प्रोजेक्ट के लिए साझेदारी कर रहा था, मुझे इसका उद्घाटन पहले कुछ चम्मच खाकर करना पड़ा था। तीसरे दिन, पीआरआईडी अशोक महाजन के रो क्लब मुलुंड ने मुझे एक श्मशान का शिलान्यास करने के लिए बुलाया और परियोजना सचिव जो बहुत उत्साही था, उसने कहा: ''सर, हम पूरी मेहनत करेंगे और आपको आश्वासन देते हैं कि आपका साल खत्म होने तक हम इस परियोजना को पूरी कर लेंगे और उद्घाटन आपके साथ करेंगे!''

उन्होंने कहा, ''तब से मैं उदाहरण के लिए 'स्वयं उदाहरण पेश करें' के सन्दर्भ में थोड़ा सचेत हो गया हूं।''

RIPE मार्क मलोनी।

कौशल, अनुभव और दृष्टिकोण की विविधता ने ही रोटरी को महान बनाया है। ''लेकिन मेरा मानना है कि हम रोटरी को सदैव और श्रेष्ठतर बना सकते हैं।''

रोटरी में सामुदायिक सेवा परियोजनाओं पर पहले से ही बढ़िया काम हो रहा है। ''हम उस में बहुत अच्छे हैं, लेकिन जब क्लब के आंतरिक मामलों की बात आती है, जैसे सदस्यता बनाये रखना या इस में वृद्धि करना, मुझे लगता है कि क्लब वैसी ही संगठनात्मक कुशलता नहीं दिखाते । मैं रोटरी क्लबों की आंतरिक सेवाओं में भी उसी स्तर के नवाचार, उत्साह और संगठनात्मक कौशल देखना चाहता हूं जो वे अपनी बाह्य सेवाओं में दिखाते हैं।''

रोटरी का विस्तार करें

मलोनी ने कहा, ''हम सभी जानते हैं कि हमें किस पर काम करना है। हमें रोटरी का विस्तार करने की रोज़ रोटरी के सकारात्मक संपर्कों के बारे में सीख रहा हूं; यह उम्र भर चलेगा।''

रोटरी का सार संपर्क में था; क्लब रोटेरियनों को एक वैश्विक समुदाय से जोड़ता है, लेकिन इसकी दिशा क्लब अध्यक्ष निश्चित करता है। ''अगर स्वयं प्रेरित नहीं है तो क्लब बढ़िया नहीं करेगा। मैंने ऐसे क्लब भी देखे हैं जहां अध्यक्ष उत्तराधिकार पर ध्यान नहीं देते, सदस्यों से जुड़े हुए नहीं थे और क्लब में जो चल रहा था उस पर ध्यान नहीं दे रहे थे। शुरुआत में तो पता नहीं चलता; कभी कभार एक दो सदस्य क्लब छोड़ जाते हैं, फिर अचानक नाटकीय रूप से सदस्यता कम होती जाती है। मैंने ऐसे क्लब भी देखे हैं जो बहुत अच्छा कर रहे हैं, अपने सदस्यों के साथ अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं, बेहतरीन प्रोजेक्ट कर रहे हैं और उसका आनंद भी ले रहे हैं। अध्यक्ष के रूप में आपकी भूमिका बड़ी होती है और हम सभी का प्रयास होना चाहिए कि 30 जून को रोटरी थोड़ी बेहतर हो, 1 जुलाई की अपेक्षा जब हमने कार्यभार संभाला था।''

ज़िम्मेदारी सौंपे

लेकिन ''प्रभाव छोड़ना और सब कुछ अपने आप करना एक ही बात नहीं है।'' वास्तव में नेतृत्व के लिए, एक नेता को अपने आसपास के लोगों को अधिक से अधिक हासिल करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। ''आपको यह अकेले ही नहीं करना है। हम रोटेरियन साथ मिल कर काम करने और समस्या का समाधान ढूंढने में अच्छे हैं। अध्यक्ष के रूप में, आपके सदस्य आपकी सबसे बड़ी संपत्ति हैं, उनका कौशल, रुचि, उनका जुनून। आपको इसमें पारंगत होना चाहिए कि वो क्या है जो आपके सदस्यों को प्रेरित करता है ताकि आप उन्हें बेहतर तरीके से प्रेरित कर उनका सर्वश्रेष्ठ हासिल कर सकें।''

प्रत्येक व्यक्ति को कुछ अलग करने के लिए प्रेरित किया गया और सबके अलग अलग हुनर सामने आये। ''अपनी बात करूँ तो, मैं दुनिया का सबसे बड़ा मानवतावादी नहीं हो सकता, पर ठीक है क्योंकि मैं खुद को एक अच्छा प्रशासक मानता हूं। रोटरी गतिविधियों में अपने प्रशासनिक और संगठनात्मक कौशल का इस्तेमाल करके मैंने मानवता की जबरदस्त सेवा की है।''

वहां एकत्रित हुए अध्यक्षों और सचिवों से संगठन व प्राथमिकता जैसे शब्दों को प्रचलन में लाने का आग्रह किया, मलोनी ने क्लब के नेताओं से कहा कि वे आगामी वर्ष में अपने रोटरी दृष्टिकोण को परखें, और यहां बैठे अपने मित्रों अध्यक्ष-निर्वाचित से सीखें।

आवश्यकता है; सदस्यता के बारे में हम बातें बहुत करते हैं, लेकिन पिछले साल, रोटरी में हमने एक ऐसा रिकॉर्ड बनाया था जिसे कोई भी नहीं बनाना चाहता था... हमारे संगठन को छोड़ने वालों की संख्या का । कुछ ने तो इसलिए छोड़ दिया था क्योंकि रोटरी में वो अनुभव नहीं मिला जैसा सोचा था, जिसकी उन्हें उम्मीद थी। वो छोड़ गए, साथ ही अपनी दक्षता, अनुभव और नेतृत्व भी ले गए। लेकिन मैं जानता हूँ कि हम इस चुनौती का सामना एक संगठित, रणनीति बना कर सकते हैं।''

रोटेरियनों को सिर्फ देखने भर की जरूरत है ''जब हम ठान लेते है तो क्या नहीं हासिल कर सकते। जैसे पोलियो को उन्मूलन के कगार पर लाना। इतिहास में यह दूसरी बार है जब किसी मानव रोग को नष्ट कर दिया जाएगा और बहुत जल्द हम पोलियो को जड़ से मिटा देंगे। जब हम एक रणनीति बना कर अपना ध्यान लक्ष्य पर केंद्रित करते हैं, तो हम कल्याण के शक्तिपुँज बन जाते हैं।''

लेकिन वही शक्ति बने रहने के लिए, ''हमें रोटरी का विस्तार करना चाहिए और अपनी सदस्यता में वृद्धि करनी चाहिए ताकि हम अधिक से अधिक हासिल कर सकें। काम करने के लिए हमें और अधिक हाथों की और समस्याओं के समाधान के लिए ज़्यादा दिमाग की ज़रुरत है। हो सकता है कि आपके क्लब के सदस्य क्लब के वर्तमान आकार से संतुष्ट हों और यदि क्लब में वृद्धि होती है तो वे भी इसकी ऊर्जा मे गति लाने के बारे में विचार करेंगे।'' एक अध्यक्ष ये कह सकता है कि उसकी कई जिम्मेदारियों में से एक, सदस्यता भी थी। ''लेकिन सदस्यों के बिना रोटरी का कोई अस्तित्व नहीं है। ज़्यादा हासिल करने और ज़्यादा काम करने के लिए हमें, जो हम पहले से कर रहे हैं, उस पर ध्यान देना चाहिए जैसे लोगों को जोड़ना, जो हमारी ताकत है, हमारा सार है और हमारा सबसे बड़ा उपहार है।''

आगामी रो ई अध्यक्ष ने क्लब के नेताओं से कहा कि वे अपने क्लबों में विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों की एक सक्रिय सदस्यता समिति का गठन करें, वर्गीकरण प्रणाली लागू करें जिसमें व्यापक क्षेत्र के पेशेवरों और नेताओं को क्लबों को मजबूत करने के लिए रोटरी में लाएं। उन्होंने कहा, ''ऐसी समितियों के लिए *rotary.org* पर चेकलिस्ट देखें।''

अंत में, मलोनी ने कहा कि रोटरी को भी संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से दुनिया से जुड़ने की जरूरत है, जो 2019-20 में अपने चार्टर पर हस्ताक्षर के 75 वें वर्ष का जश्न मना रहा है। ''रोटरी के साथ संयुक्त राष्ट्र के संबंध ऐतिहासिक और प्रीतिकर हैं और हमारे फोकस क्षेत्रों के माध्यम से हम अधिक स्वस्थ,

रो ई मंडल 3030 के DG राजीव शर्मा, RIPE मार्क मलोनी, DGE राजेंद्र मधुकर भामरे, PDG गण किशोर केडिया और दत्तात्रेय एस देशमुख (दाएं) की उपस्थिति में RIDE भरत पांड्या को स्मृति चिह्न देते हुए।

रो ई मंडल के 3250 PDG संदीप नारंग ने RIDE कमल संघवी, सोनल, ईवेंट चेयरमेन डॉ आर एन सिंह, DGE गोपाल खेमका और अविता खेमका की उपस्थिति में RIPE मार्क मलोनी को सम्मानित करते हुए।

अधिक शांतिपूर्ण और चिरस्थायी दुनिया के लिए अपनी प्रतिबद्धता साझा करते हैं।''

प्रखर बनो, निर्भय रहो

RIDE कमल सांघवी ने मंडल 3291 के आगामी क्लब अध्यक्षों और सचिवों से कहा कि वह इस स्थान पर ''नया जोश और उत्साह'' महसूस कर रहे हैं। जो जहाँ भी है उसके वहां होने का कोई ना कोई कारण अवश्य रहा है; ''क्या आपको एहसास है कि आपके पास दुनिया को बदलने का दायित्व और सम्मान दोनों है? बहुत कम लोग हैं जिन्हें दूसरे लोगों के जीवन में मुस्कुराहट और खुशी लाने और स्थायी परिवर्तन लाने का अवसर मिलता है।''

उन्होंने क्लब के नेताओं से आग्रह किया कि वे ''इन 366 दिनों (2019-20 एक लीप ईयर) के दौरान जीवन काल में एक बार मिलने वाले इस अवसरका पूरा और उचित उपयोग करें, बड़ा सोचें, आपने जो सपना देखा है, उसे हासिल करें। आप अपने गवर्नर के आंख, हाथ और पैर होने जा रहे हैं।''

लेकिन यहां इकट्ठे हुए अध्यक्ष ''इस वर्ष को RIPE मार्क और अपने DG के लिए सबसे शानदार बनाना चाहते हैं, तो आपको पूरी तरह से उग्र, प्रखर होना पड़ेगा; शेर या बाघ की तरह उग्र, और निडर भी, अपने सपनों को साकार करने के लिए।''

प्रतिभागियों को बड़ा सोचने और बड़े सपने देखने का आग्रह करते हुए, सांघवी ने कहा, ''वो दिन हवा हुए जब रोटेरियन स्कूलों को किताबें और पेंसिल दिया करते थे; आज आपको उन स्कूलों का निर्माण करना होगा। सपने बड़े होने चाहियें; आप में से हरेक को अपने वर्ष के दौरान एक ऐसी विशाल और उस पैमाने की परियोजना हाथ में लेनी चाहिए जो पहले नहीं की गई । इससे हमारी सार्वजनिक छवि को जबरदस्त बढ़ावा मिलेगा... जिस पर हमे विशेष ध्यान देते हैं, और हाथ बढ़ाने के लिए तैयार हैं।''

आप में से हरेक को अपने वर्ष के दौरान एक ऐसी विशाल और उस पैमाने की परियोजना हाथ में लेनी चाहिए जो पहले नहीं की गई । इससे हमारी सार्वजनिक छवि को जबरदस्त बढ़ावा मिलेगा... जिस पर हमे विशेष ध्यान देते हैं, और हाथ बढ़ाने के लिए तैयार हैं।

RIDE कमल संघवी

अंत में, आगामी रो ई निदेशक ने क्लब के नेताओं से कहा कि वे असफलता से कभी न डरें। आप गिरेंगे, लेकिन गिरने के बाद, ''जब आप फिर से उठेंगे, तो निश्चित रूप से सफलता आपके कदम चूमेगी।''

डीजीई अजय अग्रवाल ने कहा कि मंडल में 100 क्लबों के 4,000 सदस्यों में 37 प्रतिशत महिला सदस्य हैं। इसके 102 में से 50 रोटरेक्ट क्लब सक्रिय हैं। इस वर्ष उनका प्रयास सदस्यों को रोके रखने, रोटरी में युवा रक्त का संचार करने, महिला सदस्यता बढ़ाने और निष्क्रिय पड़े रोटरैक्ट क्लबों को पुनर्जीवित करने पर केंद्रित करने पर रहेगा। विजय जालान, सैम पतिबंदला, रवि वडलामानी, जवाहर वर्धमानी और दीपक शिकारपुर जैसे वरिष्ठ भारतीय रोटरी नेता इस सम्मेलन में प्रशिक्षक थे।

सफलता के लिए आवश्यक 3 "E"

अमरावती में आयोजित डी 3030 के लिए PETS-SETS सत्र को संबोधित करते हुए, आगामी

अत्यधिक पुष्पहार

मैं इस का अभ्यस्त हो सकता हूँ! यह टिप्पणी थी RIPE मार्क मलोनी की विभिन्न रोटरी कार्यक्रमों का भ्रमण करने के बाद,कोलकाता और अमरावती में PETS और SETS सहित, जहाँ आयोजकों में एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर, उन्हें बड़ी-बड़ी मालाओं के साथ, बग्गी की सवारी, पारंपरिक महाराष्ट्रीयन पगड़ी फेटा आदि के साथ शुभकामनाएं देने की होड़ लगी थी।

रोटरी क्लब ऑफ़ कलकत्ता महानगर द्वारा आयोजित विशाल परियोजनाओं के लोकार्पण में, जहां उन्हें 'सम्मानित' किया गया था, उन्होंने चुटकी ली: ''अमेरिका में एक स्पीकर का सिर्फ परिचय कराया जाता है, भारत में उन्हें सम्मानित किया जाता है। मुझे उन्हें सिखाना पडेगा कि हमारे यहां ये कैसे किया जाए। क्लब अध्यक्ष ने PRID शेखर मेहता को रो क्लब कलकत्ता महानगर के गौरव के रूप में परिचय दिया। मेरा क्लब, रोटरी क्लब डीकेटर, अलबामा है, और वहाँ ऐसे, 'हे मार्क' कह कर बुलाते है; बस इतना ही।''

मलोनी ने कहा कि उन्हें रो ई अध्यक्ष मनोनीत किया गया था RIPN सुशील गुप्ता से एक साल पहले। ''दो क्लबों द्वारा एक छोटी सी पार्टी दी गई

बाएं से : RIDE कमल संघवी, सोनल DGE गोपाल खेमका, RIPE मार्क मलोनी, डॉ आर एन सिंह और PDG राकेश प्रसाद।

थी डिकेटर में, मेरे नामांकन की घोषणा की अगली रात और इसके अलावा एक कार्यक्रम और था। बस इतना ही। मैं सुशील को देख रहा हूं। वह अभी भी भारत में हर तरफ जा रहा है ... मैं आशा करता हूँ कि उसे अध्यक्ष बनने का समय मिल जाए! बहुत सारे शॉल और फूल मालाएं उसके नाक तक लाद देते हैं। अमेरिका की तुलना में भारत में आप ये सब बहुत अधिक करते हैं। अमेरिका में यह जानते हो, मार्क मलोनी अध्यक्ष बनने जा रहा है? ठीक है, एक दिन इससे निजात मिल जाएगी।''

अगली सुबह कोलकाता में मंडल 3290 के PETS-SETS में, जब उन्हें एक विशाल माला पहना कर मसम्मानितफ किया गया, तो आगामी रो ई अध्यक्ष ने चुटकी ली: ''मैं सुशील को चुनौती देता हूं कि वे इतनी बड़ी माला ले कर दिखाएँ!''

जयश्री

रो ई मंडल 3232 के DG बाबू पेरम और (दाएं) DGE जी चंद्रमोहन, RIPE मलोनी को सम्मानित करते हुए। चित्र में DGN एस मुत्तुपलनियप्पन भी शामिल हैं।

मलोनी चेन्नई के रोटेरियनों से सम्बन्ध जोड़ते है

जयश्री

रोटरी मंडल 3232 के PETS- SETS मीट में, रो ई निदेशक सी भास्कर ने इस साल के प्रदर्शन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि रोटरी विश्व के साथ 16,764 नए सदस्य जुड़े हैं, जबकि भारतीय क्लबों में 8,659 सदस्य आये हैं। ''यह विश्व सदस्यता का 51 प्रतिशत है।''

उन्होंने RIPE मार्क मलोनी को इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय असेंबली में, दुनिया भर से आये 50 आगामी डिस्ट्रिक्ट रोटरी रिप्रेजेन्टेटिव को प्रशिक्षण के लिए आगामी मंडल अध्यक्षों के साथ दी गई सुविधा के लिए बधाई दी। ''जब मैंने 2017-18 में निदेशक का पदभार संभाला था तो उस वक़्त रोटरेक्ट सदस्यता की रिपोर्टिंग केवल 9 प्रतिशत थी।'' रोटरेक्ट क्लबों की ताकत और हालत को समझने के लिए डेटा महत्वपूर्ण है, रो ई के पास कोई विशिष्ट रिपोर्टिंग प्रारूप नहीं था और न ही यह किसी वास्तविक सदस्यता डेटा को परिलक्षित करता था। डीजी, डीआरआर और डीआरसीसी के साथ भास्कर द्वारा प्रवर्तित समन्वय बैठक और उस के बाद आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के उपरान्त, सदस्यता रिपोर्टिंग बढ़कर 78 प्रतिशत हो गई है। ''आज हमारी सदस्यता की रिपोर्टिंग 100 प्रतिशत है और रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन और आगामी रो ई अध्यक्ष मलोनी द्वारा किये जा रहे प्रयासों से, विश्व सदस्यता रिपोर्टिंग में 18 प्रतिशत से 34 प्रतिशत तक सुधार हुआ है।'' भारत में 31 जनवरी तक 333 रोटरेक्ट क्लबों को चार्टर किया गया है।

भास्कर ने आगामी अध्यक्षों से आह्वान किया कि वे अपने वर्ष काल के दौरान ''रोटेरियनों की संख्या दोगुनी करें, जो कि मलोनी के फोकस क्षेत्र की सूची में है। आपके लिए यह कोई मुश्किल काम नहीं है। आप नेता चुने गए हैं। अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए एक प्रभावी टीम बनाएं और आपके पास 366 दिनों की एक निश्चित समय सीमा है।''

पूर्व रो ई निदेशक पी टी प्रभाकर ने कहा कि मलोनी की याददाश्त गज़ब की है। ''सदस्यता समिति में, जब मैं इस का निदेशक था, मार्क पूरी सटीकता के साथ, समिति द्वारा वर्षों पहले लिए गए निर्णयों का हवाला देते थे।''

आने वाले रो ई अध्यक्ष से प्रश्नोत्तर सत्र में, एक आगामी क्लब अध्यक्ष ने युवा रोटेरियनों को आकर्षित करने के लिए विशेष रियायती सदस्यता शुल्क का सुझाव दिया था। मलोनी ने रोटरी के रुख, क्लबों में लचीलेपन की नीति को दोहराया और कहा, ''किसी ख़ास आयु वर्ग या एक निश्चित सदस्य संख्या के लिए शुल्क कम करने को आदेश बना कर पूरे रोटरी विश्व में थोपने के बजाय, क्लबों को वो करने दें जो उन्हें उचित लगता है।''

आगामी क्लब अध्यक्ष विजया भारती द्वारा पहले भी कई बार पूछे गए सवाल, रो ई में शीर्ष स्थान पर महिला की संभावना पर, मलोनी की प्रतिक्रिया थी: ''अगले पांच वर्षों में एक अवश्य होगी। पर ये सिर्फ मार्क मलोनी की राय है। क्योंकि मैं इसको घटित नहीं कर सकता! ''

उन्होंने बताया कि नेतृत्व में रोटरी पदानुक्रम दृष्टिकोण का अनुसरण करती है। तो, रो ई अध्यक्ष बनने के लिए, आपका रो ई निदेशक के रूप में अनुभव होना ज़रूरी है। ''वर्तमान में हमारे यहां लगभग 14 महिलाएं हैं जो पूर्व निदेशक रह चुकी हैं। कुछ की तो इसमें दिलचस्पी नहीं है और कुछ ने हाल ही में अपना कार्यकाल पूरा किया है और अपना अनुभव समृद्ध कर रही हैं। जबकि हमारे पास लगभग 150 पुरुष पूर्व निदेशक हैं। और इस वर्ष बोर्ड में कोई महिला नहीं है। ऐसा हमने नहीं किया है।''

प्रत्येक ज़ोन ने अपना निदेशक नामित किया था और इत्तफ़ाक़ से वे सभी पुरुष थे। 2020-21 में दो और उससे अगले वर्ष पांच महिला निदेशक होंगी।

आगामी DGE जी चंद्रमोहन ने स्वागत भाषण दिया, मनोनीत DGN मुत्तुपलानियप्पन ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। अन्य पीडीजी के साथ, डीजी बाबू पेरम भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

निदेशक भरत पंड्या ने कहा कि व्यक्तिगत रूप से वे RIPE मलोनी को काफी समय से जानते थे क्योंकि वह उनके मंडल सम्मेलनों में RIPR रहे थे, और फिर सिडनी कन्वेंशन कमेटी में भी उनके साथ सेवा का अवसर मिला था। न केवल उनका दृष्टिकोण हर किसी के लिए मित्रवत था, बल्कि उनके पास सफलता के लिए आवश्यक 3 E भी थे; ''*(rich experience; he is enthusiastic and ready for everything)* समृद्ध अनुभव; वह उत्साही हैं और हर चीज के लिए तैयार हैं ... आपने उन्हें पगड़ी पहनाई और उन्हें बग्घी में चढ़ा दिया जो उन्होंने सहजता से कर लिया। तीसरा, रोटरी के लिए उनका दृष्टिकोण नीतिपरक है।''

पंड्या ने क्लब अध्यक्षों को अपने कंधों पर आई बड़ी जिम्मेदारी के बारे में सजग रहने के लिए कहा। ''रोटरी में जो कुछ भी होता है वह क्लब के स्तर पर ही होता है। 2019-20 में हमारी सफलता इस बात पर निर्भर नहीं करेगी कि मार्क या मैं कितनी मेहनत करते हैं बल्कि उस पर करेगी की आप अपने क्लब में क्या करने जा रहे हैं।''

चीनी बांस का उदाहरण देते हुए जो 80 फीट तक बढ़ता है, जिसको बढ़ने में पांच साल लगते हैं, लेकिन शुरुआती 57 महीनों में प्रगति थोड़ी कम दिखती है और 57 वें महीने के बादएकदम से अचानक बढ़जाता है, पांड्या ने समझाया कि होता क्याहै। शुरू के 57 महीनों में, ''धरातल के नीचे हो रहा था। बांस पोषक तत्वों को अवशोषित कर रहा था, अन्य शाखाओं के साथ नेटवर्किंग कर रहा था ताकि जब विकास का समय आए, तो ये तैयार रहे और तीन ही महीनों में 80 फीट पर पहुँच गया। इसी प्रकार, अब वे उस प्रारंभिक चरण में थे जहां; यदि आप 1 जुलाई तक इंतजार करेंगे तो बहुत देर हो जाएगी। योजना बनाने और तैयार होने का समय आज है।''

Saving Little Hearts के एक लाभार्थी द्वारा RIPE मार्क मलोनी का स्वागत। चित्र में RIDE कमल संघवी, PRID शेखर मेहता, रोटरी क्लब कलकाता महानगर की अध्यक्ष चित्रा अग्रवाल, डॉ आर पी विधावान और मंडल 3291 के DG मुकुल सिन्हा भी चित्र में शामिल हैं।

मफ़ यूएस मरीन्स ने '6 झी' मंत्र - *proper planning and preparation prevents poor performance* का पालन किया - उचित योजना और सही तैयारी खराब प्रदर्शन से दूर रखती है। ''तो आपको तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। हमारे क्लब पहले से ही बेहतरीन काम कर रहे हैं। आज ही सुबह, मैंने और RIPE मार्क ने रोटरी क्लब अमरावती मिडटाउन द्वारा किए जा रहे कुछ बेहतरीन प्रोजेक्ट्स देखे हैं।''

अपने DGE राजेंद्र भामरे द्वारा वर्ष के दौरान किये जाने वाले कार्यों का उल्लेख करते हुए, पंड्या ने क्लब के नेताओं से आग्रह किया कि वे यह सब लिख लें ताकि भूल न जाएं ... और आज से उन पर अमल करना शुरू कर दें।

उन्होंने एक मजबूत टीम बनाने का और अपने क्लबों से यह भी सुनिश्चित करने का आग्रह किया की मीटिंग दिलचस्प हों, समयबद्ध हों और भलीभाँति निष्पादित हों। ''आपकी मीटिंग समाज और रोटेरियन को रोटरी की छवि दर्शाती हैं। अगर मैं किसी रोटरी मीटिंग में जाता हूं, वहां प्रवेश द्वार पर मेरा स्वागत किया जाता है, रोटेरियनों के समूह तक ले जाकर परिचय करवाया जाता है, उपेक्षित नहीं किया जाता है और अकेले नहीं छोड़ दिया जाता है, मीटिंग समय पर शुरू होती है और समय पर समाप्त होती है, वो एक अच्छा क्लब है।''

चींटी का फ़लसफ़ा

आगामी निदेशक ने रोटेरियनों को चींटी के फ़लसफ़े का अनुसरण करने के लिए कहा; अपने रास्ते की बाधा को दरकिनार कर, उसके चारों ओर घूम कर या ऊपर से उस पार जाकर; आगे की सोचते हुए, गर्मियों में भोजन इकट्ठा कर, सर्दियों की तैयारी करती है; और कड़ाके की ठण्ड में अपने बिल की गहराई में संतोष से रहती है। उन्हें चींटियों से अपना ध्यान केंद्रित करना सीखना होगा, कभी हार मत मानो और सकारात्मक रहो और जो कुछ कर सकते हो करो। ''आज आप प्रारब्ध के उस मोड़ पर खड़े हैं जिसे आपने अपने दृष्टिकोण से संकुचित कर रखा है। बड़ा सोचो और सपने बड़े देखो, कह कर उन्होंने समाप्त किया।

रोटरी में जो कुछ भी होता है वह क्लब के स्तर पर ही होता है। 2019-20 में हमारी सफलता इस बात पर निर्भर नहीं करेगी कि मार्क या मैं कितनी मेहनत करते हैं बल्कि उस पर करेगी की आप अपने क्लब में क्या करने जा रहे हैं।

RIDE भरत पांड्या

डीजी राजीव शर्मा ने कहा कि मंडल भाग्यशाली था कि 10 साल बाद कोई आगामी रो ई अध्यक्ष आये हैं, पिछली बार PRIP कल्याण बनर्जी ने उन्हें आगामी रो ई अध्यक्ष के रूप में संबोधित किया था।

DGE भामरे ने कहा कि वर्ष के दौरान, उन्हें मिल कर एक साथ स्थायी मानवीय परियोजनाओं करने का लक्ष्य रखना चाहिए जो जीवन में परिवर्तन लाए। ''डीजी के रूप में मेरी ज़िम्मेदारी है अच्छा संचालन देना, श्रेष्ठ मेलजोल को बढ़ावा देना और समाज सेवा। मैं अँधेरे अतीत को पीछे छोड़ते हुए उच्चतम स्तर का प्रबंधन करना चाहता हूं जो भविष्य के लिए मिसाल बने।''

चूंकि उनका मण्डल अकालग्रस्त है उनकी प्राथमिकता में जल-संभर परियोजनाएं, गाँव को गोद लेना और WASH इन स्कूल होंगी।

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

2019 HAMBURG

Rotary | BE THE INSPIRATION

Join the Traditional South Asian Reception

RI Convention, Hamburg

Invite your global partners who support your service projects.

Bring your Rotary friends to show how Rotary works globally.

Opportunity to meet all the world leaders of Rotary.

RID C. Basker
& Malathi Basker

We cordially invite you to the traditional South Asian Reception on Saturday, June 1, 2019 at Hotel Grand Elysee Hamburg between 5.00 pm - 7.00 pm

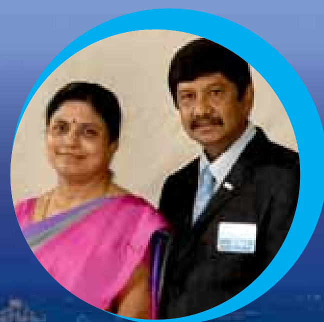

Chairman - PDG Dr. E.K. Sagadhevan
& Dr. Usha

Venue: Hotel Grand Elysee Rothenbaumchaussee 10,
D- 20148 Hamburg, Germany. Tel: + 49 40 41412–748

Registration Fee: INR 5,000 / EUR 65 / US $ 75 per person

Payment can be made by cheque payable at par or DD favouring **E.K. SAGADHEVAN**
payable at ERODE, TAMIL NADU and send to:

PDG Dr. E.K. Sagadhevan, Chairman - South Asian Reception
Lotus Hospital, 90, Thayumanavar Sundaram Street, Kollampalayam, Erode - 638 002 Tamil Nadu, India.
Mob: +91 99944 77725 E-mail: pdgdrsaga@gmail.com

Organisation Development Consultants

WE ADD VALUE TO YOUR EFFORTS

Estd. 22-02-2002

TOWARDS EXCELLENCE ®

Hyderabad

Visit us at : www.odchyd.com

Mr P Seshadri
Management Consultant

Introduces New Services for Micro, Small & Medium Level Enterprises & Start up's on

ORGANISATION DEVELOPMENT

- Building Sustainable Organisations

Services could be availed as per need and maturity of the organisation

BASIC Package
(3 Months)

Professional Fees : Rs 2 Lakhs

Streamlining Systems / Processes in the organisation to meet business requirements

Organisation Development Plan to be provided for one year w.r.t the following aspects based on assessments

- Customer Focus
- Leadership
- Engagement of People
- Process Approach
- Improvements
- Evidence based Decision Making
- Relationship Management

SUPREME Package
(6 Months)

Professional Fees : Rs 5 Lakhs
(Includes BASIC Package Services)

Business Excellence Assessments w.r.t

- Leadership
- Strategy Development & Deployment
- People Management
- Resources & Infrastructure Management
- Process Management
- Customers Results
- People Results
- Social Results
- Business Results

Formulating Blue Print for Change Management within the organisation for one year and training assistance in initiating implementation of changes

PREMIUM Package
(12 Months)

Professional Fees : Rs 9 Lakhs
(Includes BASIC & SUPREME Package Services)

Establishing Integrated Management Systems (based on best practices) with 100+ Key Performance Indicators with focus on organisations :

- Economic Performance
- Environmental Performance
- Social Performance

Preparation of Business Sustainability Report which is useful for accessing finance , global work contracts and improving sustainability initiatives of the organisation.

Professional Profile of Mr. P Seshadri

A qualified Production & Industrial engineer with management specialisation in Industrial Management from Nagpur University has industrial and consulting experience of more than 28 years in the domains of HRD, TQM and OD with Corporates, MSME's and Start-up's.

Practicing as Management Consultant since 2002, he has evolved his core competencies in three areas which include – Developing Management Systems, Facilitating Business Excellence Practices and Establishing Sustainability Reports for Industries and Institutions.

Active with professional / industrial bodies and social organisations, he has held leadership positions in several of such organisation like QCFI, NIPM, ISTD, IMCI, HDCF, FAPCCI, CII, BNI and Rotary International. His current passion as qualified faculty from Rotary Leadership Institute is strengthening Rotary Movement using several initiatives in Clubs, Communities and Corporates.

Contact:

98490 82520

pseshadri29@gmail.com

वापी में रोटरी अस्पताल बाल हृदय सर्जरियाँ करता है

रशीदा भगत

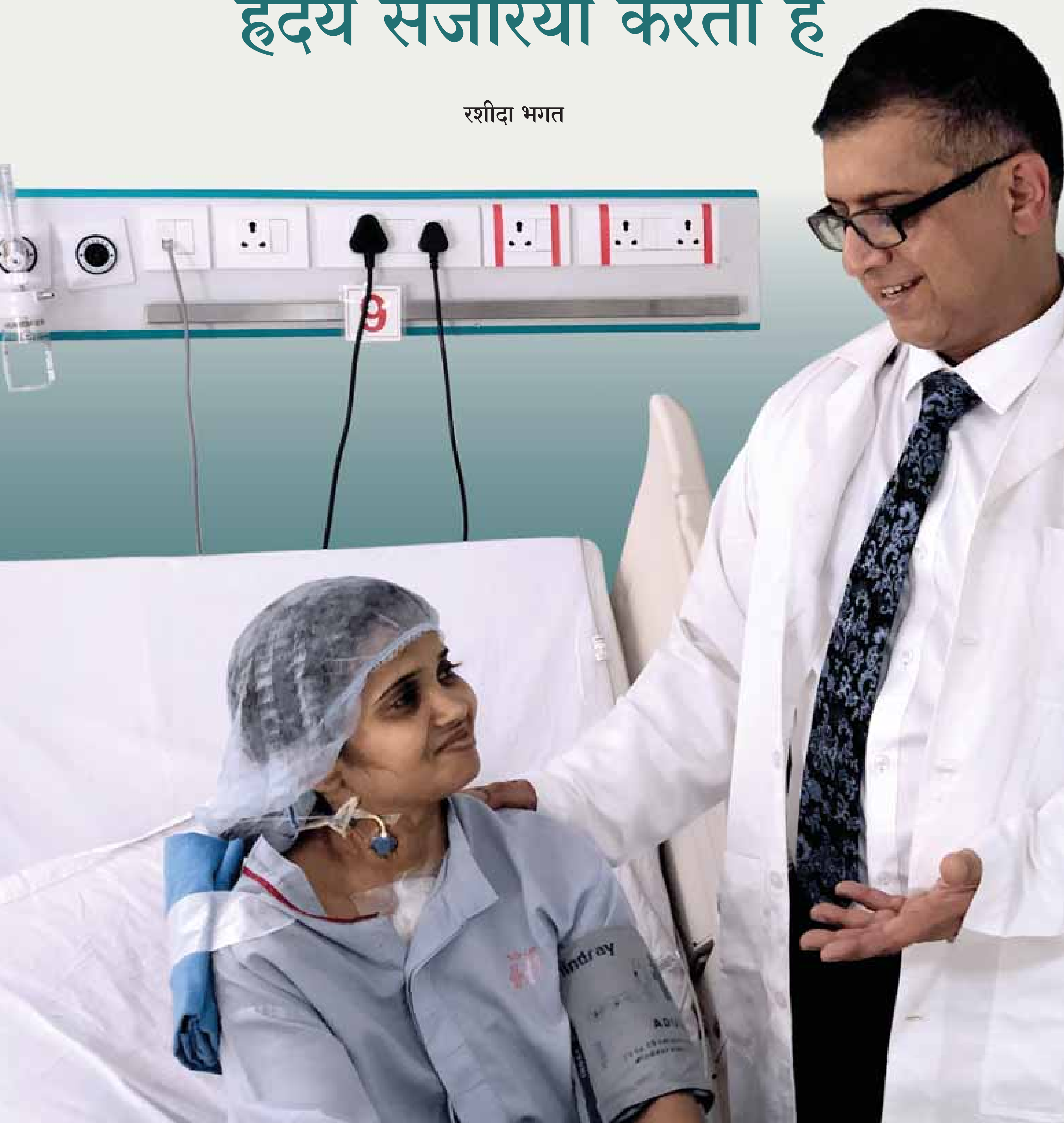

वापी में हरिया रोटरी अस्पताल में हृदय शल्य चिकित्सक डॉ कल्पेश मलिक एक रोगी के साथ बात करते हुए।

वापी में 200 बिस्तरों वाला हरिया रोटरी अस्पताल सूरत और मुंबई के मध्य स्थित सबसे बड़ा अस्पताल है और इसे जोड़ प्रतिस्थापन और अन्य प्रमुख सर्जरियों के अतिरिक्त, बच्चों की ओपन हार्ट सर्जरी करने पर स्वयं पर गर्व है। और इसके हृदय शल्य चिकित्सक, डॉह कल्पेश मलिक, जो बच्चों के हृदय की सर्जरी - 18 माह पहले ही यहाँ हृदय की इकाई स्थापित की गई थी - करने के लिए सात माह पहले ही यहाँ शामिल हुए है, और अधिक करने हेतु अस्पताल की क्षमता को बढ़ाने के लिए उत्साहित है।

उन्होंने अब तक इस अस्पताल में 30 बच्चों की सर्जरियाँ की है, हालाँकि एक हृदय शल्य चिकित्सक के रूप में उनके 20 वर्षों के अनुभव में उन्होंने कुल 8,400 हृदय के ऑपरेशन किये है जिसमें बच्चों के 3,500 ऑपरेशन शामिल है। ''मैं वास्तव में एक बाल चिकित्सा सर्जन के रूप में प्रशिक्षित हुआ था, लेकिन दिल की सभी सर्जरियाँ करता हूँ; बाल हृदय सर्जरी इतनी जटिल होती है कि यदि आप बच्चों के दिल का ऑपरेशन कर सकते है तो आप आसानी से बाईपास सर्जरी भी कर सकते है,'' वह मुस्कुराते है।

हम वापी में रोटरी चैरिटेबल ट्रस्ट, जो इस अस्पताल को चलाता है, के अध्यक्ष PRIP कल्याण बेनर्जी के कमरे में बैठे है। ''1980 के दशक की शुरुआत में हमने इस अस्पताल की शुरुआत की थी; 40 साल पहले जो वापी के रोटरी क्लब रो ई मंडल 3060 के रोटेरियनों द्वारा एक दवाखाने के रूप में शुरू किया गया था वो कुछ ही सालों में एक 24 बिस्तरों वाले अस्पताल में विकसित हो गया। 1982 में, हरिया इंडस्ट्रियल समूह ने हमें ₹7.5 लाख दिए थे जो उन दिनों बहुत बड़ी रकम होती थी। और हम इस अस्पताल को हरिया रोटरी अस्पताल का नाम देने हेतु राजी हुए। आज बेशक ₹7.5 लाख कुछ भी नहीं होते और हमारा मासिक कारोबार ही लगभग ₹3 करोड़ के आसपास का है,'' बेनर्जी कहते है।

अस्पताल के मुख्य चिकित्सक और चिकित्सा अधीक्षक डॉ एस एस सिंह कहते है कि 40 वर्षों से अधिक समय से यह अस्पताल सख्ती से एक सीधा से नियम का पालन करते आ रहा है - हमारे दरवाजे पर इलाज हेतु आने वाले किसी भी मरीज को लौटाना नहीं है चाहे वह दुर्घटना या चिकित्सा-विधिक मामले का मरीज हो या फिर कोई ऐसा मरीज हो जो अस्पताल के शुल्क का भुगतान नहीं कर सकता।''

इस अस्पताल में 60 पूर्ण कालिक डॉक्टर और 60 अतिथि विशेषज्ञ है। ''हमारा सर्जिकल विभाग बहुत मजबूत और सुसज्जित है। हमारे पास एक पूर्ण कालिक न्यूरो सर्जन है; वापी मुंबई से 160 कि मी और सूरत से 120 कि मी की दूरी पर स्थित है, और सूरत एवं मुंबई के मध्य कोई भी पूर्णकालिक न्यूरोसर्जन नहीं है। बेशक रोटेरियनों की वजह से यह अस्पताल विकसित हुआ है, लेकिन साथ ही स्थानीय समुदाय की सद्भावना और संरक्षण के कारण भी, डॉ सिंह कहते है।

यह रोटरी अस्पताल लगभग 150 वर्ग कि.मी. के दायरे में सेवा देता है। वापी के एक औद्योगिक क्षेत्र और मुंबई एवं सूरत को जोड़ने वाले प्रमुख सड़क मार्ग पर स्थित होने के कारण, कारखानों की बहुत सी औद्योगिक दुर्घटनाओं और सड़क दुर्घटनाओं से अभिघात के मामले यहाँ आते है। चूंकि वापी में कोई सरकारी अस्पताल नहीं है और अन्य निजी अस्पताल चिकित्सा-विधिक मामलों को लेने से हिचकिचाते है ''हम इन मरीजों को भर्ती करते है बिना इस बात की परवाह किये कि उन्हें कौन लेकर आता है - रिश्तेदार, पुलिस या राहगीर - और उन्हें तुरंत उपचार देते है। साथ ही, वापी के किसी भी अस्पताल में वैसा पूर्ण विकसित हृदय सर्जरी विभाग नहीं है जैसा हमारे पास है; उनके पास केवल अतिथि हृदय रोग विशेषज्ञ और सर्जन है। जहाँ तक ओपन हार्ट सर्जरी की बात है, सूरत और मुंबई के मध्य केवल हमारा ही एकमात्र अस्पताल है जो यह सुविधा प्रदान करता है,'' डॉ सिंह कहते है।

वह आगे कहते है कि जब बात नवजात शिशु और बाल चिकित्सा सर्जरी की होती है, तो कोकिलाबेन धीरूभाई अम्बानी अस्पताल को छोड़कर मुंबई के बड़े से बड़े अस्पताल भी इन सुविधाओं की पेशकश नहीं करते। ''इसलिए आपको इन ऑपरेशनों के लिए दक्षिण में - चेन्नई या बेंगलुरु - या फिर दिल्ली जाना पड़ता है।''

इस अस्पताल में सामान्य वार्ड में एक ओपन हार्ट सर्जरी करवाने के लिए पूर्ण भुगतान करने वाले

मरीज को ₹1.25 लाख का शुल्क देना पड़ता है। लेकिन यहाँ आने वाले बहुत से मरीज वास्तव में गरीब होते है, तो इसकी निधि आयुष्मान भारत, मुख्यमंत्री कोष, एड्खउ, रेलवे कर्मचारी बीमा, इत्यादि जैसी सरकारी योजनाओं से प्राप्त होती है। ''सरकार से पैसा मिलने में कुछ समय लगता है लेकिन हम उपचार प्रदान करते है और किसी भी मरीज को इंतजार नहीं करवाते है,'' डॉ सिंह कहते है।

8-एकड़ के विशाल परिसर में स्थित इस रोटरी अस्पताल की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यहाँ पर मरीज की गंभीर अवस्था होने पर भी उसे उत्कृष्ट देखभाल प्रदान की जाती है। ''वापी और आसपास के इलाकों में गहन देखभाल उतनी अच्छी नहीं है लेकिन हमारे पास 40 बिस्तरों वाला पूर्ण विकसित आईसीयू मौजूद है। डायलिसिस के लिए हमारे पास 10 मशीनें है, जिसे हम मुफ्त में उपलब्ध करवाते है। पहले हम 300 शुल्क लेते थे लेकिन 2011 से, हमने यह भी लेना बंद कर दिया,'' वह आगे कहते है।

हर माह लगभग 400 डायलिसिस प्रक्रियाएं की जाती है। इससे अधिक, ऐसे मरीज जो अधिकतर उनके परिवार में कमानेवाले होते है और अपनी नौकरी खो देते है, अस्पताल उनके परिवारों को चावल, गेंहू, दाल, तेल, इत्यादि के साथ एक मासिक राशन किट प्रदान करता है।

ओर्थपेडीक विभाग अच्छी तरह से सुसज्जित और संचालित है, और यह 99,000 की उचित लागत में जोड़ों का प्रतिस्थापन भी करता है। ओर्थपेडीक सर्जन डॉ कपिल पवार कहते है कि उन्होंने कूल्हे के प्रतिस्थापन से अधिक घुटने के प्रतिस्थापन किए है। भारतीयों में घुटनों की समस्या केवल फर्श पर बैठने या उकडू बैठने की जीवनशैली के कारण ही नहीं है बल्कि इसलिए भी है क्योंकि ''हमें पश्चिमी देशों की तुलना में घुटने का गठिया अधिक होता है। मुड़े हुए घुटने होना हमारे जीन में ही है, जबकि यूएस या यूके में, कूल्हे का गठिया अधिक सामान्य है।''

वह कहते है कि घुटने को बार-बार मोड़ने की आदत, जैसे नमाज़ पढ़ते वक्त या वज्रासन या पद्मासन करते वक्त आपके घुटनों के लिए अच्छी नहीं होती, विशेष रूप से एक निश्चित उम्र के बाद। यह उनपर अधिक दबाव डालता है; जितना अधिक आप उन्हें मोड़ते है, उतना अधिक वे घिसते है। महिलाओं में, अधिकतर कमर दर्द की समस्या देखने को मिलती है। ''महिलाओं के पास निश्चित समय पर व्यायाम करने की समय सारिणी नहीं होती; वे सोचती है गृहकार्य ही व्यायाम है, जो कि गलत धारणा है क्योंकि कमर की मांसपेशियाँ तब ही मजबूत होती है जब आप कमर को मजबूत बनाने वाले व्यायाम करते है ना कि गृहकार्य।''

डॉ. मलिक कहते है कि वह ऐसे बच्चों का ऑपरेशन करते है जिनके दिल में छेद होता है और वाल्व में भी खराबी होती है। उनकी सबसे छोटी मरीज जिसका उन्होंने ऑपरेशन किया था वह 19 माह की निधि थी, जिसके दिल में छेद था। अस्पताल को उसके मामले या तो आसपास के क्षेत्रों में शिविर लगाकर मिलते है या फिर उसके सामाजिक कार्यकर्ता

यह इसका खर्चा निकाल पाता है। चूंकि हाल ही में अनेक अस्पताल बन गए है, हमें नुकसान हो रहा है क्योंकि हमारे दाम बहुत कम है।

PRIP कल्यान बेनर्जी

मरीजों को यहाँ लाते है। इसके 80 प्रतिशत से भी ज्यादा ह्रदय के मरीजो को सरकारी बीमा द्वारा वित्तपोषित उपचार मिलता है। ''हमारी चुनौती यह है कि जब तक कि यह अस्पताल ह्रदय सर्जरी के लिए अपना नाम स्थापित नहीं कर लेता, तब तक पूर्ण भुगतान करने वाले मरीज यहाँ नहीं आएंगे, क्योंकि मुंबई यहाँ से 2-3 घंटे की दूरी पर स्थित है।''

बेनर्जी बीच में कहते है, ''यहाँ के उद्योगपति मुंबई जाना पसंद करते है क्योंकि वे इसका खर्चा उठा सकते है। जिसपर डॉक्टर मालिक व्यंग्यात्मक रूप से कहते है: और बेशक मुंबई में हर कोई 300-400 सालों तक जीवित रहता है!''

वह कहते है उनकी टीम ''मरीजों को फास्ट ट्रैक पर रखती है और सर्जरी के बाद हम उन्हें तीसरे या चौथे दिन घर भेज देते है।''

क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके पास पर्याप्त बिस्तर नहीं है? ''नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि हमारे पास एक बेहतर टीम है,'' वह कहते है।

अब तक उनके द्वारा की गई सबसे चुनौतीपूर्ण या जटिल सर्जरी कौन सी है, मैं डॉक्टर मलिक से पूछती हूँ।

''वह एक चार-वर्षीय बालक श्यामल मिश्रा की थी। दिल में चार चैंबर होते है लेकिन यह बच्चा केवल दो चैंबर के साथ पैदा हुआ था, और यह जन्म से ही एक ब्लू बेबी था। बच्चा मध्य प्रदेश के एक गाँव से था और उसके पिता मुंबई में काम कर रहे थे। माता-पिता बच्चे को दिल्ली के एम्स ले गए जहाँ उन्होंने कहा कि वहाँ उनके पास पाँच सालों की प्रतीक्षा अवधि चल रही है। दिल्ली के एक निजी अस्पताल ने कहा कि सर्जरी की लागत ₹4.5 लाख आएगी।''

घुटने को बार-बार मोड़ने की आदत, जैसे नमाज़ पढ़ते वक्त या वज्रासन या पद्मासन करते वक्त आपके घुटनों के लिए अच्छी नहीं होती, विशेष रूप से एक निश्चित उम्र के बाद।

ओर्थपीडक सर्जन
डॉ कपिल पवार

प्रफुल देवानी, ट्रस्टी रोटरी चैरिटेबल ट्रस्ट और सेंड्रा श्रॉफ, नर्सिंग कॉलेज के प्राचार्य मेजर जनरल टी के भूटिया और छात्रों के साथ।

चार सालों तक माता-पिता इधर-उधर जाते रहे, जब तक कि वे वापी के रोटरी अस्पताल में ना आए। ''सौभाग्य से वह तक तक जीवित रहा। हमने मुफ्त में उसका ऑपरेशन किया, और तीसरे दिन बच्चा मुस्कुरा रहा था। और अचानक से वह गोरा हो गया, नीले से गुलाबी हो गया,'' डॉक्टर मालिक कहते है, एक गंभीर चेहरे के साथ आगे यह कहते हुये, तो आपने देखा, ''हम यहाँ पर ह्रदयी सौन्दर्य प्रसाधन भी करते है! हम नीले बच्चों को गुलाबी बनाते है!''

वह आगे कहते है कि मुंबई में रोटेरियनों द्वारा एक अस्पताल में बाल ह्रदय सर्जरियाँ आयोजित की जा रही है। ''हमारे पास यहाँ अतिरिक्त क्षमता है, यदि वे कुछ मामलों को यहाँ भेज सके, तो हम एक-तिहाई शुल्क में सर्जरी कर सकते है। सौभाग्य से, यहाँ पर ऑपरेशन किए गए किसी भी बच्चे की मौत नहीं हुई है।''

डॉक्टर सिंह कहते है कि अस्पताल एक दिन में 500 ओपीडी देखता है और हर माह लगभग 1,000 मरीजों को भर्ती करता है। परिसर एकदम स्वच्छ है, जब मैं ऐसा कहती हूँ, वह मुस्कुराते है और कहते है, ''इसके बावजूद भी कि हमारे अधिकतर मरीज निचले तबके से है! शुरुआत में बेनर्जी स्वयं शौचालय की जांच करने जाते थे! इस

जगह को प्रतिदिन साफ करने के लिए हमारे पास 60 लोग है।''

बच्चों को हाथों में लिए कुछ अभिभावकों की ओर इशारा करते हुये डॉक्टर सिंह कहते है कि वे SMILE परियोजना के तहत कटे हुये होठों एवं तालु की सर्जरी करते है। चाहे वह 2 वर्षीय लकी हो या 3 वर्षीय वैदेही, सुधारात्मक सर्जरी होने के बाद बच्चे अब ठीक से बोल पा रहे है।

कार्डियक आईसीयू में, 22 माह की रिद्धी और 11 वर्षीय धनेश्वरी के दिल के छेदों को डॉक्टर मालिक की टीम द्वारा ठीक किया गया था और उनकी माताएँ मुस्कुरा रही थी।

अस्पताल की संवहनीयता पर, बेनर्जी कहते है, ''सब मिलाकर यह इसका खर्चा निकाल पाता है। चूंकि हाल ही में अनेक अस्पताल बन गए है, हमें नुकसान हो रहा है क्योंकि हमारे दाम बहुत कम है। लेकिन हमने अपनी कमर कस ली है, कुछ परिवर्तन किए है, पैसा बचाया है और हानिरहित संचालन करना शुरू कर दिया है। पूर्व में हम कुछ लाभ कमाया करते थे जो हमेशा

PRIP और रोटरी चेरिटबल ट्रस्ट के अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी, डॉ एस एस सिंह जो हरिया रोटरी अस्पताल के मुख्य चिकित्सक और चिकित्सा अधीक्षक के साथ।

हमारी सुविधाओं को बढ़ाने के लिए इस्तेमाल होता था।''

निकटवर्ती सैंड्रा श्रोफ़ नर्सिंग कॉलेज में, बीएससी और एमएससी दोनों में नर्सिंग की डिग्रियाँ प्रदान की जाती है। उसके प्रधानाध्यापक, मेजर जनरल टी के भूटिया, जो भारतीय सेना से सेवानिवृत्त है, मुझे गर्व से उस विशाल परिसर का भ्रमण करवाते है, और कहते है बहुत से विद्यार्थी क्षेत्र के आदिवासी इलाके से है। इस कॉलेज की शुरुआत 2003 में की गई थी और अब तक कुछ 300 नर्सें यहाँ से स्नातक हो चुकी है।

तो क्या उन्हें आसानी से रोजगार मिल जाता है? ''रोजगार? उन सभी को मुंबई के कोकिलाबेन अस्पताल द्वारा काम पर रख लिया गया है,'' रोटरी क्लब वापी के पूर्व अध्यक्ष प्रफुल देवानी कहते, है जो RCT के न्यासी है। उनका शुरुआती वेतन ₹20,000 प्रति माह है, ''जो हम देने में असमर्थ है क्योंकि हम एक चैरिटेबल अस्पताल है, भूटिया कहते है।''

वह आगे कहती है कि उनके लगभग 80 से 90 प्रतिशत विद्यार्थी - कुल 169 विद्यार्थी है - जब यहाँ आते है तो अंग्रेजी का एक शब्द भी नहीं बोल पाते। ''लेकिन उनके चौथे वर्ष में आने तक तो वे धाराप्रवाह अँग्रेजी बोलते है। मैं विद्यार्थियों से बात करती हूँ, जिनमें कुछ पुरुष विद्यार्थी भी शामिल थे, जो अधिकतर किसानों, मजदूरों या उद्योगों के उच्च श्रेणी के कर्मचारियों के बच्चे है।'' उनकी मुस्कान और उनके आत्मविश्वास को देखकर ही यहाँ पर मिल रहे प्रशिक्षण की गुणवत्ता के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है।

2003 में स्थापित, यह गुजरात का पहला निजी/स्व-वित्तपोषित नर्सिंग कॉलेज था, और इसकी वार्षिक फीस, जिसमें प्रबंधन कोटा शामिल है, केवल 85,000 है। ''हमारे बहुत से विद्यार्थी छात्रावास में रहते है और सरकार द्वारा प्रायोजित होते है जो एसटी विद्यार्थियों को एक वजीफा देती है।''

चित्र: रशीदा भगत

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

एक मदद भरा हाथ

जयश्री

ग्यारह वर्षीय नीला का चेहरा देखने लायक होता है जब वह कागज़ पर अपना नाम लिखती है। यह उसके लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है क्योंकि उसे हाल ही में रोटरी क्लब मेत्तुपलायम, मंडल 3202, द्वारा आयोजित किये गए एक विशाल शिविर में एक कृत्रिम हाथ मिला है। ''मेरी बच्ची बहुत होशियार है। वह इस विकृति के साथ जन्मी थी। इसके बावजूद भी, वह साइकिल चलाती है, एक पेशेवर खिलाड़ी की तरह कबड्डी खेलती है और सॉफ्ट टॉयज बनाने में माहिर है - ये सबकुछ केवल एक हाथ से,'' नीला की माँ आँखों में आंसुओं के साथ उसकी प्रशंसा करते हुए कहती है और वह छोटी बच्ची अपने नए हाथ को दिखाते हुए बीच में कहती है: ''अब मैं और अधिक हासिल कर सकती हूँ क्योंकि अब मेरे पास दो हाथ है।''

अगली मेज़ पर कन्नीअम्मल (70 वर्षीय) बैठी है जो शिविर के बारे में जानकर इरोड के समीप स्थित एक दूरदराज के गाँव से आई है। उनका दाहिना हाथ दो साल पहले टूट गया था जब वह अपने घर के बाहर अपने बेटे और कुछ नौजवानों के मध्य हो रही झड़प के बीच हस्तक्षेप कर रही थी। ''क्या अब मैं अपना खाना खुद बना सकती हूँ?'' वह रोटरेक्टर-स्वयंसेवकों से पूछती है जो उनके हाथ को फिट करवाने में मदद कर रहे थे। उनमें से एक तुरंत ही उन्हें अपने मोबाइल फ़ोन पर एक डेमो-वीडियो दिखाता है, जिसमें कृत्रिम हाथों की मदद से एक महिला रोटी बनाने के लिए आटा गूंथ रही है और एक आदमी मोटरबाइक चला रहा है। एक शर्मीली मुस्कान और आँखों में एक उम्मीद के साथ वह कहती है: इस उम्र में मैं बाइक नहीं चलाना चाहती। ''मैं सिर्फ इतना करना चाहती हूँ कि मैं अपनी साड़ी खुद पहन सकूं और अपनी *कंजी* (दलिया) खुद बना सकूं। मुझे बार-बार दूसरों से मदद मांगना अच्छा नहीं लगता...'' लड़के उनका प्रोत्साहन करते हुए कहते है, ''आप वे सब कर सकती है बल्कि उससे भी ज्यादा पाटी,'' और उनसे उनके नए हाथ को आगे बढ़ाकर उनसे हाथ मिलाने का आग्रह करते है, जो वह बड़े अचरज के साथ करती है।

तिरुवन्नामलाई से एल्लुमलाई (45) ने बिजली के एक शोर्ट सर्किट में अपने दोनों हाथ और एक पैर खो दिए थे। वह स्वयंसेवकों से उनके दोनों कृत्रिम हाथों को फिट करने का अनुनय करते है। ''मुझे हर चीज़ के लिए अपनी पत्नी पर आश्रित रहना पड़ता है। वह ही कमाकर घर चलाती है - कुछ घरों में घरेलु कार्य करके। मैं अपने परिवार के लिए कुछ करना चाहता हूँ,'' आँखों में उम्मीद की एक चमक के साथ वह कहते है।

एक रोटरेक्टर, कन्नियम्माल से, जिनको LN4 का तौफा मिला उनसे हाथ मिलाते हुए।

शिविर स्थल, मेट्रो मैट्रिकुलेशन स्कूल, लोगों से खचाखच भरा हुआ था, जिसमें बूढ़े और जवान सभी LN4 हाथ मिलने हेतु अपनी बारी आने का इंतजार कर रहे थे। 1975 में बना यह स्कूल, जिसका नीलगिरी की तलहटी में एक विशाल परिसर है, क्लब का गौरव है और इस क्षेत्र के 2000 बच्चों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए गरीबों को मुफ्त शिक्षा और दूसरों को शुल्क में छूट प्रदान करता है।

शिविर हेतु परीक्षण एक हफ्ते पहले ही कर लिया गया था और क्लब ने रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन, रो ई मंडल 3131, के साथ कृत्रिम सहायकों के लिए समन्वय किया। पुणे से सोलह रोटेरियन भूतल परिवहन के माध्यम से 850 LN4 हाथ भेजने के बाद मेत्तुपलायम के रोटेरियनों की मदद करने हेतु आए है। दो स्वयंसेवकों - रुक्मिणी, सरला कन्नन, मंडल 3000, की प्रभावशाली महिला की सहेली, और डॉ मोनिका, हैदराबाद की एक भौतिक चिकित्सक, ने भी अपनी सेवाएँ दी।

क्लब अध्यक्ष और परियोजना प्रमुख डॉ. अरविन्थ कार्तिकेयन स्थल के चारों तरफ घूमकर यह सुनिश्चित करते है कि फिटमेंट का कार्य बिना किसी रुकावट के पूर्ण हो। ''रो ई मंडल 3131 के गिफ्ट ऑफ़ मोबिलिटी के परियोजना प्रमुख अनिल चड्डा द्वारा LN4 उपकरणों की उपलब्धि की सूचना का हमने उत्तर दिया था। शुरू में हमारा लक्ष्य केवल 50 फिटमेंट का था। लेकिन चड्डा ने एक चुनौती दी। उन्होंने कहा यदि आप 100 से कम लाभार्थी लाते है तो पूरा खर्चा आपको ही वहन करना होगा; और यदि यह संख्या 200 से अधिक होगी, तो हम पूरा खर्चा उठाएँगे। इससे मुझे उत्साह मिला,'' वह कहते है।

एल एस सिद्दुरम परियोजना समन्वयक है। सामाजिक और प्रिंट मीडिया की मदद से बड़े पैमाने पर प्रचार के कारण, 1,200 अक्षम लोगों की जाँच करने के बाद, क्लब ने रिकॉर्ड 750 फिटमेंट के साथ दिन की समाप्ति की। वे लोग जिन्होंने किसी दुर्घटना में अपने हाथ खो दिए थे या जो जन्म से ही विकृत थे, वे सभी खुश थे और एक नए हाथ और इसी के साथ आने वाले

LN4 एम्बेसडर

के वी मोहनकुमार, दक्षिण एशिया के लिए LN4 एम्बेसडर और रोटरी क्लब बैंगलोर प्राइम, मंडल 3190 के एक सदस्य, वर्तमान में देश में LN4 फिटमेंट के परिदृश्य के बारे में विस्तार से बताते है। हालाँकि कृत्रिम पैर अधिक प्रचलित है और बड़े पैमाने पर उपयोग किये जाते है, वहीं LN4 हाथों के लिए जागरूकता को अभी भी प्रचलित होना बाकि है। 2011 की जनगणना के अनुसार, हमारी दो प्रतिशत जनसंख्या नि:शक्त है, और उनमें से केवल पांच प्रतिशत लोगों तक ही सूचना पहुँच पाती है। ''बहुत से लोग नहीं जानते कि किससे संपर्क करें। इन फिटमेंट शिविरों का आयोजन करके रोटरी बहुत बढ़िया कार्य कर रही है। आज हमारे पास देशभर में लगभग 18 स्थायी अंग केंद्र है और लोग प्रत्यक्ष रूप से यहाँ आ सकते है और नि:शुल्क अंग प्राप्त कर सकते है।'' ऊपरी अंग के लिए, एक मोटा अनुमान है कि पांच लाख लोग ऐसे है जिन्होंने विभिन्न कारणों से अपने हाथों को गंवा दिया है। ''हम केवल 14,000 लोगों तक पहुँच पाए है। यह केवल एक छोटा सा हिस्सा है,'' वह कहते है।

मोहनकुमार सक्रिय रूप से देशभर में LN4 फिटमेंट शिविरों का प्रचार कर रहे है। वह याद करते है कैसे 2006 में उनके क्लब ने उचित प्रशिक्षण के बिना फिटमेंट का आयोजन किया था। ''हमने यूट्यूब पर वीडियो देखें। लेकिन अगले वर्ष एलेन मीडोज फाउंडेशन का दल यूएस से आया और उन्होने हमें फिटमेंट करने के साथ-साथ लाभार्थियों द्वारा कुशलतापूर्वक कृत्रिम अंग का उपयोग करने के लिए उन्हें प्रशिक्षित करने हेतु प्रशिक्षण दिया। तब से लेकर अब तक हमने पीछे मुड़कर नहीं देखा।'' यह वर्ष ''अद्भुत'' रहा है क्योंकि रोटरी की वजह से पूरे देशभर में 2,600 से ज्यादा लोगों को LN4 फिटमेंट प्राप्त हुए है।

प्रत्येक शिविर काफी अनूठा है। हाल ही में आयोजित किये गए नीलाम्बुर शिविर में, ''हमें जन्मजात विकृति वाले बहुत से लोग मिले। राजस्थान में, लोगों ने कृषि संबंधी दुर्घटनाओं की वजह से अपने हाथ गंवा दिए थे।'' आमतौर पर, जहाँ कहीं भी सुरक्षा को लेकर जागरूकता की कमी है वहाँ शिविर में आने वाले लोगों की संख्या बहुत बड़ी होती है। आदिवासी क्षेत्रों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए, वह कहते है। सन्देश पहुँचाने के लिए, उन्होंने एक क्लब पर प्रकाश डाला जहाँ रोटेरियन स्कूलों की असेम्बली में जाकर आगामी शिविर के बारे में घोषणा करते है। ''बच्चे सबसे बढ़िया सन्देश वाहक होते है, विशेषकर छोटे गाँवों में।''

अभी भी LN4 उपकरण की जितनी लोकप्रियता है उसके बावजूद भी, लाभार्थियों द्वारा इसके उपयोग को सुनिश्चित करना अभी भी ऐसा क्षेत्र है जिसपर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, वह कहते है। डछ 4 समिति ऐसे लाभार्थियों को कैरियर के विषय में मार्गदर्शन भी प्रदान कर रही है।

रोटरी क्लब निलाम्बुर के रोटेरियनों और एक लाभार्थी के साथ (बीच में) DG ए के उमेर।
चित्र में LN4 के दक्षिण एशिया के एम्बेसडर के वी मोहनकुमार (दाएं) भी शामिल है।

एल्लुमलय, एक लाभार्थी के साथ डॉ अरविंद कार्तिकेयन, रोटरी क्लब मेट्टुपालयम के अध्यक्ष और अध्यक्ष निर्वाचित डॉ विजयगिरि।

बेहतर कल की एक नई उम्मीद के साथ घर लौटने हेतु उत्साहित थे।

सभी लाभार्थियों को एक किट दी गई जिसमें एक उपयोगकर्ता नियम-पुस्तक, प्रशिक्षण सामग्री और प्रायोजक की तस्वीर थी, सभी को एक रंगीन लिफाफे में रखा गया जिसके साथ एक हस्तलिखित नोट या एक LN4 उपयोगकर्ता द्वारा निर्मित चित्रकला थी। ये सभी सहायक दुनियाभर के लाभार्थियों के परिवारों द्वारा प्रायोजित किये गए है, पुणे क्लब की एक सदस्य, सुजाता मलकर कहती है। शिविर स्थल पर लाभार्थियों और उनकी देखभाल करने वालों को भोजन और जलपान प्रदान किया गया।

डीजी ई के उम्मेर, जिन्होंने शिविर का दौरा किया और यहाँ की उपस्थिति के साथ ही पिछले सप्ताह निलाल्म्बुर में रोटरी क्लब स्पंदन बैंगलोर, रो ई मंडल 3190, के साथ रोटरी क्लब नीलाम्बुर द्वारा आयोजित दो दिवसीय शिविर की भी प्रशंसा की। विनोद पी मेनन शिविर के अध्यक्ष थे और दिलीफ, समन्वयक थे। लगभग 400 लोग इस कार्यक्रम से लाभान्वित हुए, क्लब अध्यक्ष गीगी थॉमस कहते है।

चित्र : जेयश्री

टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष का संदेश

रोटरी अक्षय निधि एक वादा आने वाले कल के लिए

रोटरी वर्ष की अंतिम तिमाही करीब आ रही है, और अपनी प्रगति की जांच करने का समय आ गया है। एक वर्ष पूर्व जनवरी में, हमने अनुदान संचयन लक्ष्यों की श्रृंखलाएं निर्धारित की थी, और इस जून में, हम स्वयं को एक रिपोर्ट कार्ड सौपेंगे। वह क्या होगा?

रोटरी संस्थान का न्यासी प्रमुख होने के नाते, मैं आप सभी को रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सभा में वह कहने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिसे हम सभी सबसे अधिक सुनना चाहते है: कि हमने ना केवल हमारे लक्ष्यों को हासिल किया है, बल्कि उनसे आगे निकल गए है।

ऐसा इसलिए क्योंकि उन लक्ष्यों में से प्रत्येक लक्ष्य सीधा हमारे छह ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से प्रत्येक की प्रगति से मेल खाता है।

2017-18 में, हमने 1,300 वैश्विक अनुदानों को स्वीकृत किया है। उन अनुदानों ने बड़ी, अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं को वित्तपोषित किया जिनका बड़ा, दीर्घकालिक परिणाम निकलता है। कुछ नवजात बच्चों को जीवित रखने को लेकर थी। कुछ उनके समुदायों में साफ पेयजल और शौचालय लाने को लेकर थी। और कुछ गरीब इलाकों में आर्थिक विकास करने को लेकर थी। परंतु प्रत्येक पैसे का प्रभाव पड़ा - एक ऐसा प्रभाव जो स्थायी रहता है।

लेकिन कुछ और भी है जो उतना ही महत्वपूर्ण है: इस बात को सुनिश्चित करना कि हम इसे भविष्य में लंबे समय तक करना जारी रख सके।

यहीं पर हमारी अक्षय निधि के लक्ष्य की भूमिका है। हमारी रोटरी अक्षय निधि आने वाले कल के लिए हमारा वादा है - कि मानवता के लिए हमारी सेवा जारी रहेगी, कि हम कभी हार नहीं मानेंगे।

इस वर्ष प्रत्यक्ष दान के माध्यम से अक्षय निधि का हमारा लक्ष्य 26.5 मिलियन डॉलर का है, और साथ में 35 मिलियन डॉलर की प्रतिबद्धताओं का अतिरिक्त लक्ष्य है। लेकिन हमारा लक्ष्य केवल यही नहीं है। हमारा एक दीर्घकालिक लक्ष्य भी है: 2025 तक 2.025 बिलियन डॉलर तक पहुँचने का।

उस स्तर तक अक्षय निधि को पहुँचाना इस बात को सुनिश्चित करेगा कि विश्व कोष में सालों-साल तक संगठन के कार्यक्रमों को वित्तपोषित करने के लिए वार्षिक आय हो। यह पैसा उन कार्यक्रमों के लिए शाश्वतता में जाएगा जिनका आप अक्षय निधि के लिए दिये गए अपने दान के माध्यम से समर्थन करना चाहते है। यदि हम में से प्रत्येक अपनी अक्षय निधि का समर्थन करे, तो हम वास्तव में अपनी विरासत, रोटरी का वादा तैयार कर सकते है।

एक साथ मिलकर, हम अपने संगठन को और भी मजबूत बना सकते है, ताकि हम दुनिया में और भी अधिक अच्छा कर सकें।

रॉन डी बर्टन
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

सम्मेलन

हैम्बर्ग डाइनिंग

गुंड्ला मिट्टके

एक बंदरगाह शहर के रूप में हैम्बर्ग के इतिहास का मतलब है कि यह एक महानगरीय पाक-शैली के लिए प्रसिद्ध है; और इसका प्रभाव पुर्तगाल से चीन तक स्पष्ट दृष्टिगोचर है। परंतु इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि रेस्तरां कौन-सा है, एक बात तो तय है कि: आपको मेनू में समुद्री भोजन के विभिन्न प्रकार के व्यंजन देखने को मिलेंगे है। इसलिए जब आप 1 से 5 जून तक रोटरी इंटरनेशनल सम्मेलन में भाग लेने के लिए शहर में होंगे, तो हैम्बर्ग स्टाइल में डाइनिंग का आनंद लेना मत भूलें।

Fischereihafen रेस्तरां हैम्बर्ग (*fischereihafenrestaurant.de/en*) लगभग चार दशकों से एल्बे नदी के किनारे एक आनंददायक माहौल में (यदि आप रोमांच महसूस करते हैं, तो मीठा-खट्टा ईल सूप का मजा लें) समुद्री भोजन वाले व्यंजन परोसने के लिए प्रसिद्ध हैं।

एक अन्य लोकल संस्थान *Alt Hamburger Aalspeicher (aalspeicher.de)* भी अपने अद्वितीय समुद्री भोजन के लिए प्रसिद्ध है। तले हुए अंडे और तले हुए आलू के साथ स्मोक्ड ईल का ऑर्डर दें; या फिर बेकन आलू के सलाद के साथ तली हुई प्लेस चपटी मछली *"Finkenwerder शैली"* में; या तले हुए अंडे, हेरिंग, चुकंदर और अचार के साथ एक पारंपरिक सेलर शैली के हैश डरलीझरी, का आनंद उठाएं। अपने भोजन को एक अद्वितीय उत्तरी जर्मन की मिठाई: रॉट *Grütze* के साथ समाप्त करें: यह मिठाई एक लाल बेरी का मुरब्बा है जिसे खूब क्रीम के साथ परोसा जाता है।

क्या आप जल्दी में हैं? तो *St. Pauli Landungsbrücke* पर स्नैक बार *Brücke 10 (bruecke10.com)* में एक *Fischbrötchen* (फिश सैंडविच) का लुफ्त उठाएं। *ImbissbeiSchorsch (imbiss-bei-schorsch.de)* में करीवर्स्ट (करी कैचअप के साथ पोर्क सॉसेज) बहुत ही स्वादिष्ट और लजीज व्यंजन है। और *Franzbrötchen* को स्वाद लेना नहीं भूलें, जिसे एक क्रोइसैन और दालचीनी रोल के बीच एक क्रॉस पकवान के रूप में तैयार किया जाता है। खुशी की बात यह है कि सभी बेकरियाँ उन्हें बेचती है।

www.riconvention.org **पर हैम्बर्ग में रोटरी सम्मेलन 2019 (जून 1-5) के लिए पंजीयन कराएं।**

©The Rotarian

दान देना और भलाई करना
एक आनुवांशिक बाध्यता

रशीदा भगत

एस्टर डीएम हेल्थकेयर समूह सालाना 20 मिलियन से अधिक रोगियों का उपचार करता है। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रति वर्ष ये समूह ₹50 करोड़ परोपकार में खर्च करता है, और अगर आपने इस समूह के बारे में ज्यादा नहीं सुना, तो उसकी वजह ये है कि, ''आमतौर पर हम अपनी परोपकारी गतिविधियों का प्रचार नहीं करते। लेकिन हाल ही में, बिल गेट्स जैसे समाज-सेवी लोगों से प्रेरणा लेने के बाद हमें एहसास हुआ कि कि अगर हम

आज़ाद मूपन, अध्यक्ष एस्टर डी एम हेल्थकेयर ग्रुप अपनी पत्नी नासीरा और बेटियाँ ज़ीहम, एलिशा और ज़ेबा के साथ।

ऐसे कार्यों को प्रचारित करें और लोगों से उसकी चर्चा करें तो अन्य लोग भी इस का अनुसरण कर सकते हैं और धर्मार्थ कार्य करने की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं, जिसकी हमारे देश में बहुत ज़्यादा ज़रुरत है।'' ये कहना था एस्टर ग्रुप के अध्यक्ष डॉ आज़ाद मूपन का।

हम कोलिकोड के MIMS मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल में उनके ऑफिस में बैठे हैं। मैं डॉ मूपन से पूछती हूं, निश्चित ही उनके परिवार में दान देने का कोई इतिहास रहा होगा। अभी अभी उन्होंने बाढ़ से क्षतिग्रस्त केरल में लगभग 400-500 घरों के पुनर्निर्माण के लिए रोटरी के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं, जिसमें प्रत्येक सहयोगी 1 मिलियन डॉलर देने के लिए प्रतिबद्ध है। डॉ मूपन मुस्कुराते हुए कहते हैं, ''मेरे पिता स्वतंत्रता सेनानी थे और उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था और स्वतंत्रता के बाद वे सामाजिक कल्याण गतिविधियों में बहुत ज़्यादा व्यस्त रहे। मेरे पूर्वज जमींदार थे और उनके पास बहुत बड़ी ज़मीन थी जहां धान, नारियल इत्यादि की फसल होती थी, और उस समय के शासकों ने हमें *मूपन* की उपाधि दी थी, जिसका मलयालम में अर्थ होता है 'नेता'।''

बचपन से ही अपने सामाजिक कार्यकर्ता पिता को समाज के लिए काम करते हुए देखा है। ''संभवत: मेरे अंदर परोपकार के 'जीन्स', जैसा आप का कहना है, उन्हीं से आये हैं। मैंने यहां के स्थानीय स्कूल में पढ़ाई की है और जब मेरे पिता की मृत्यु हुई तब मैं सिर्फ 15 साल का था।''

दुनिया भर में लोगों की सहायता करने वाले संगठनों में रोटरी का क़द काफी बड़ा है। मैं रोटरी की वास्तव में सराहना करता हूं, एक आंदोलन के रूप में। यह अत्यंत पारदर्शी है और इसकी लेखा प्रणाली ठीक है, और ये सभी बड़े सकारात्मक कारण हैं।

मेरे पूर्वज जमींदार थे और उनके पास बहुत बड़ी ज़मीन थी जहां धान, नारियल इत्यादि की फसल होती थी, और उस समय के शासकों ने हमें *मूपन* की उपाधि दी थी, जिसका मलयालम में अर्थ होता है 'नेता'।

वे पांच भाई हैं और जहां बाकी चार व्यापार में चले गए, ''क्योंकि मेरे पिता चाहते थे कि उनका एक बेटा डॉक्टर बने , मैं बन गया। और निश्चय ही, मैं अपने पेशे से बहुत प्यार करता हूं।''

कई दशकों से डॉ मूपन के करीबी दोस्त रहे रोटरी क्लब केलीकट मिडटाउन के सदस्य आर्किटेक्ट अब्दुल हमीद, स्पष्ट करते हैं कि कोलीकोड के फारूक कॉलेज के बाद, जहां वे एक सक्रिय छात्र नेता रहे , डॉ मूपन ने केलीकट मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस और सामान्य चिकित्सा में एमडी की डिग्री हासिल की। वो आज भी अपने फारूक कॉलेज साथियों के संपर्क में है और नियमित रूप से मिलते हैं। अभी हाल ही में अपने साथियों के साथ वायनाड पहाड़ियों के अपने हॉलिडे होम में एकत्रित हुए थे।''

डॉ मूपन ने कहा कि उन्होंने कोझीकोड में एक डॉक्टर और चिकित्सा शिक्षक के रूप में काम किया, फिर कुछ साल बाद, दो साल के लिए दुबई जाने का फैसला किया, लेकिन फिर उसके बाद वहीं रहने का फैसला कर लिया और आज 30 साल हो गए। ''मेरा दृढ़ विश्वास है कि भगवान हमारे लिए योजना बनाते हैं, आपको तो बस उसके साथ चलना है। मेरे दोस्तों ने मुझे दुबई में एक क्लीनिक शुरू करने के लिए राजी किया था और फिर बढ़ते हुए हम वहां तक पहुँच गए जहां हम आज हैं।''

यह एक स्वास्थ्य-सेवा साम्राज्य है जो भारत सहित मध्य पूर्व, सुदूर पूर्व के नौ देशों में 308 प्रतिष्ठानों में फैला हुआ है।

तो पराये देश में रुपया कमाना कितना मुश्किल रहा? ''दरअसल शुरु में ये काफी मुश्किलों भरा

था और समय तो हमेशा लगता है। मैं बहुत भाग्यशाली था कि मैं दुबई जैसे देश में गया, जो विदेशियों के लिए बहुत अनुकूल है; पता नहीं अगर मैं किसी और देश गया होता तो क्या होता! मुझे लगता है कि अगर आप सही समय, सही जगह पर और सही लोगों के बीच हैं, आधे काम अपने आप हो जाते हैं। और फिर भगवान आपको अवसर देता है। बेशक, आपको कड़ी मेहनत तो करनी ही होगी; उस में कोई समझौता नहीं!''

मैंने डॉ मूपन से अपने पाठकों को अपनी परोपकार की यात्रा पर ले चलने को कहा। उन्होंने कहा कि गल्फ में जाने से पहले भी वे सामाजिक गतिविधियों में संलग्न थे। ''और वहाँ भी, सप्ताह में एक दिन, मैं बिना शुल्क लिए मरीजों को देखता था। दुबई में उस समय पीजी डॉक्टर ज़्यादा नहीं थे। शुरू से ही इस तरह के धर्मार्थ या स्वैच्छिक कार्य करना मेरे डीएनए में रहा है और ऐसे काम करके मुझे हमेशा ख़ुशी मिलती है । मेरा मानना है कि भगवान ने मेरे जैसे लोगों को सब कुछ दिया है: स्वास्थ्य, धन, शिक्षा, एक अच्छे परिवार के साथ पद और प्रतिष्ठा और कई पुरस्कार भी। तो समाज को वापस लौटाना हमारा कर्तव्य है।''

दान के लिए अलग रखे, अपने धन के 20 प्रतिशत के बारे में पूछने पर डॉ मूपन कहते हैं, ''यह एक छोटा सा हिस्सा है, संपत्ति का बाकी हिस्सा मेरे परिवार (उनकी पत्नी और

रशीदा भगत

मैं चाहूंगा कि मेरे समाधि–लेख से लोग मुझे एक अच्छे इंसान के रूप से पहचानें और विश्व का एक ऐसा नागरिक जो हर किसी में अच्छाई देखता था। सौभाग्य से, मैं ऐसे पेशे में हूं जहां बहुत से लोगों की मदद कर सकता हूं।

तीन बेटियों) के लिए है। लेकिन मैं धर्मार्थ गतिविधियों के लिए भविष्य में 80 प्रतिशत समय देने का इरादा रखता हूँ।''

तो धर्मार्थ कार्यों में उनके परिवार, विशेष रूप से उनकी पत्नी का कितना सहयोग रहा है?

''बहुत ज़्यादा; देखा जाए तो मेरे परिवार ने ही मुझे परोपकार में खींचा है। विशेष रूप से मेरी पत्नी ने, वो देने के लिए हमेशा तत्पर रहती है; वो क्या कहते हैं उसके ''हाथ खुले'' हैं और देने में वो बहुत उदार हैं। मेरी तीन लड़कियाँ हैं; मैं एक महिला छात्रावास के वार्डन की तरह हूं और चार बच्चों का नाना हूँ और पांचवा कभी भी आ सकता है! (बच्चे का जन्म उसी दिन हो गया था!) मेरे बच्चे भी मुझे प्रोत्साहित करते हैं और बहुत सहायता करते हैं। वे मुझे और अधिक करने के लिए प्रेरित करते हैं।''

केरल में घरों के निर्माण के लिए भागीदार के रूप में उन्होंने रोटरी को ही क्यों चुना, जिसके लिए उनके समूह ने एक मिलियन डॉलर की राशि निर्धारित की है, डॉ मूपन कहते हैं, ''इसमें कोई संदेह नहीं है कि, दुनिया भर में लोगों की सहायता करने वाले संगठनों में रोटरी का क़द काफी बड़ा है। समाज में हमारे दोस्त, स्थानीय लोग जिन्हें मैं जानता हूं - मंडल अध्यक्ष और पूर्व क्लब अध्यक्षों सहित लोगों ने बहुत काम किया है- हमेशा पैसे से नहीं, बल्कि अपना समय दे कर और कड़ी मेहनत से ... इस ने मुझे वास्तव में प्रभावित किया है। मैं रोटरी की वास्तव में सराहना करता हूं, एक आंदोलन के रूप में। यह अत्यंत पारदर्शी है और इसकी लेखा प्रणाली ठीक है, और ये सभी बड़े सकारात्मक कारण हैं। लेकिन निस्सन्देह इस का विचार रो क्लब केलीकट मिडटाउन से डॉ राजेश सुभाष और अब्दुल हमीद जैसे रोटेरियन दोस्तों के माध्यम से आया।

उन्होंने कहा कि ''यह तो केवल शुरुआत है और मैं रोटरी की साझेदारी में अफ्रीका, फिलीपींस आदि में लोगों के लिए और अधिक काम करना चाहता हूं। मेरा मानना है कि हम भारतीय लोग अन्य देशों की मदद के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं।''

डॉ मूपन को लंबे समय से जानने वाले डॉ सुभाष का कहना है कि ''एक सफल व्यवसायी के रूप में, उनकी टीम के लिए वह प्रासंगिक हैं और लक्ष्य को प्राप्त करने वाले हैं। लेकिन एक बार बोर्डरूम से बाहर आने के बाद, वह अपनी टीम के निजी मामलों में भी गहरी दिलचस्पी लेते हैं।बातों से ज़्यादा वो काम वाले

एक नजर में

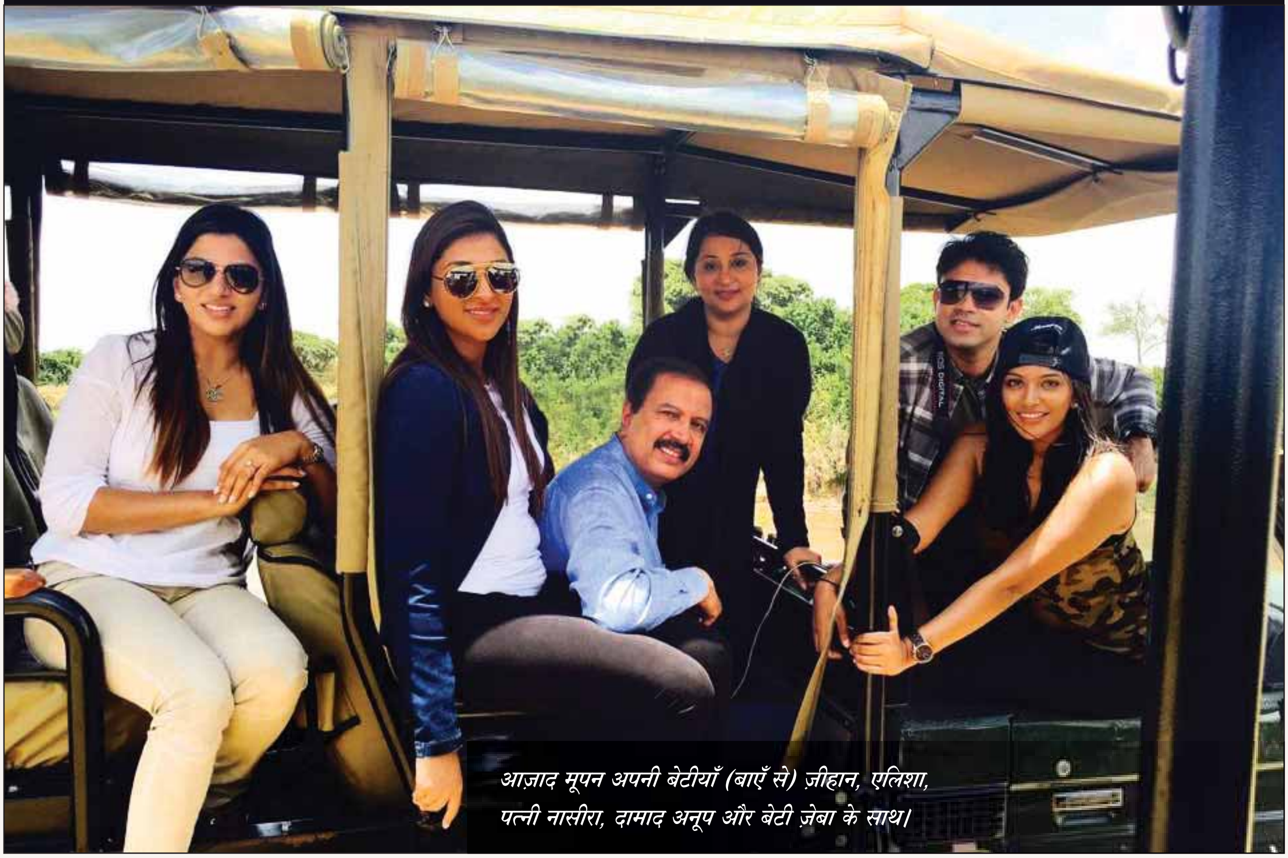

आज़ाद मूपन अपनी बेटीयाँ (बाएँ से) ज़ीहान, एलिशा, पत्नी नासीरा, दामाद अनूप और बेटी ज़ेबा के साथ।

आराम करना: मुझे इस बात से फायदा होता है कि मैं मन में कुछ नहीं रखता ... तकिये का स्पर्श मिलते ही मैं सो जाता हूँ और इसमें पाँच मिनट भी नहीं लगते हैं और यही मेरी पत्नी की मुख्य शिकायत भी है! स्वाभाविक रूप से अच्छी नींद आती है और ये मुझे तनाव मुक्त रखती है।

पढ़ना: पढ़ना मुझे अच्छा लगता है; इसमें से कुछ दर्शन और इतिहास से संबंधित हैं। मुझे आध्यात्मिक लेखन में भी आनंद आता है। आजकल मैं *द पावर ऑफ़ नाउ: अ गाइड टू स्पिरिचुअल एनलाइटमेंट* नामक (एकहार्ट टोल द्वारा लिखित) एक अद्भुत पुस्तक पढ़ रहा हूं। आपको भी इसे पढ़ना चाहिए। मैं प्रबंधन पर भी किताबें पढ़ता हूं - विशेष रूप से मानव संसाधन और वित्त - क्योंकि मैं प्रबंधन में प्रशिक्षित पेशेवर नहीं हूं। मैं डॉक्टर हूं जो एक व्यापारी बन गया।

मनोरंजन: मुझे टीवी पर खेल देखना पसंद है, खासकर क्रिकेट, लेकिन और खेल देखना भी पसंद है। मुझे फिल्में देखना पसंद है; ज्यादातर पारिवारिक फिल्में - भारतीय और पश्चिमी दोनों ही।

फिटनेस : मैं हर दूसरे दिन योग करता हूं और रोज़ाना 30 से 40 मिनट टहलता हूं। मैं ध्यान भी करता हूं। मैं सुबह लगभग 5 बजे उठता हूं और 9 बजे तक सुबह चार घंटे का समय, स्वयं के लिए होता है जिस दौरान मैं अपना अध्ययन और व्यायाम पूरा कर लेता हूं।

भोजन : प्रायः शाकाहारी; पर कभी-कभी नॉन-वेज भी खा लेता हूँ, जैसे कि अंडे और मछली, लेकिन ज्यादातर मुझे शाकाहारी भोजन पसंद है।

यात्रा और पसंदीदा शहर / देश: न्यूज़ीलैंड। वहां चारों तरफ प्रकृति फ़ैली हुई है, और अपने सबसे अच्छे स्वरुप में। यह बहुत सुंदर देश है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि न्यूज़ीलैंड में जहरीले सांप नहीं हैं।

सपना: मैं चाहूंगा कि मेरे समाधि-लेख से लोग मुझे एक अच्छे इंसान के रूप से पहचानें जो अपने परिवार, अपने देश, अपने आस-पास के लोगों से प्रेम करता था और विश्व का एक ऐसा नागरिक जो हर किसी में अच्छाई देखता था। सौभाग्य से, मैं ऐसे पेशे में हूं जहां बहुत से लोगों की मदद कर सकता हूं।

आदमी हैं, और उचित काम को बिना देर किए तुरंत करने में विश्वास रखते हैं।''

हमीद इसमें जोड़ते हैं, ''एक सफल उद्यमी से कहीं ज़्यादा, वो एक शानदार व्यक्ति है, उन में एक देहाती परिहास है लेकिन यह तभी सामने आता है जब वह अपने करीबी लोगों के साथ होते हैं। अपने लक्ष्यों को ले कर वे स्पष्ट हैं और उन्हें हासिल करने की क्षमता रखते हैं।'' यदि एक बार ''उन्होंने अपनी विश्वस्त प्रबंधन टीम को काम सौंप दिया, फिर उसमें दखल नहीं देते, बल्कि ज़्यादातर वक़्त अपने परिवार को देते हैं।''

उनकी परोपकारी गतिविधियों पर, हमीद कहते हैं, ''उनकी सहानुभूति और करुणा, समुदाय या देशों की सीमाओं के परे है। उन के लिए मानव जाति हर जगह एक समान है।''

डॉ मूपन बताते हैं कि वह 30 साल से स्वास्थ्य सेवा के व्यवसाय में हैं; ''हमने बहुत छोटे से शुरुआत की थी और आज 20,000 कर्मचारियों के साथ नौ देशों में विद्यमान हैं। हम एक सार्वजनिक कंपनी हैं, कई ट्रस्ट को मिला कर। इस (MIMS) अस्पताल में अलग से एक MIMS चैरिटेबल ट्रस्ट है जो अपने स्तर पर दान में काफी रूपये खर्च करता है। कुल मिलाकर, प्रति वर्ष हम लगभग ₹50 करोड़ धर्मार्थ गतिविधियों पर खर्च करते हैं, हालांकि, कानूनन हम खर्च करने के लिए बाध्य नहीं हैं, क्योंकि भारत में हम एक स्टैंडअलोन कंपनी नहीं है, जिसे सरकारी आदेश के अनुसार मुनाफे का कुछ प्रतिशत दान पर खर्च करना ज़रूरी हो। ज़्यादातर मुनाफ़ा हम भारत के बाहर से अर्जित करते हैं। लेकिन मैं जिस देश का वासी हूँ उस भारत में धर्मार्थ गतिविधियों में सार्थक रूप से शामिल होने के लिए प्रतिबद्ध हूं।''

सोमालिया में जहां भुखमरी है वहां हम भोजन भेजते हैं, और हाँ, इसके अलावा हर साल हम चिकित्सा परियोजनाएं करते रहते हैं।

उन्होंने कहा कि उनका ''संगठन सीरिया में एक शरणार्थी चिकित्सा शिविर का संचालन भी करता है; सोमालिया में जहां भुखमरी है वहां हम भोजन भेजते हैं, और हाँ, इसके अलावा हर साल हम चिकित्सा परियोजनाएं करते रहते हैं। पिछले साल सचिन तेंदुलकर के साथ हम एक ऐसे कार्यक्रम में शामिल हुए हैं जो 100 बच्चों की हृदय शल्य चिकित्सा करने में सहायता करेगा।''

भारत को भीतर और विदेश (दुबई), दोनों ओर से देखने के बाद, उन्हें क्या लगता है कि भविष्य में भारत किस ओर जा रहा है? ''हम सभी जानते हैं कि अगले 10-20 वर्षों में भारत का अहम् स्थान होगा हम पहले से ही उसके नज़दीक पहुंच रहे हैं और दुनिया के दो या तीन शीर्ष देशों में से एक होंगे।

विश्व के शक्ति केंद्र का स्थानांतरण हो रहा है, सिर्फ समय की बात है , वो दिन दूर नहीं जब शीघ्र

आज़ाद मूपन अपने परिवार के साथ।

ही भारत प्रमुख स्थान पर होगा। हमें खुद को तैयार करना होगा, और हमारे बच्चों को नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए तैयार रहना होगा। हमारे प्राचीन ज्ञान और बुद्धिमत्ता, इतने सारे धर्म, दार्शनिक और विचारकों के साथ, भारत उच्च कोटि का आध्यात्मिक और बौद्धिक नेतृत्व कर सकता है। ये क्षमता हमें अपने इतिहास और विरासत से मिली है। इसमें हम अपनी विशाल युवा जनसंख्या को और जोड़ दें, तो हम जानते हैं कि हमारा समय आने वाला है।''

हमारे प्राचीन ज्ञान और बुद्धिमत्ता, इतने सारे धर्म, दार्शनिक और विचारकों के साथ, भारत उच्च कोटि का आध्यात्मिक और बौद्धिक नेतृत्व कर सकता है।

लेकिन, डॉ मूपन कहते हैं, ''अफ़सोस की बात ये है कि हमें थोड़ी देर हो गई है। एक दिन किसी ने मुझसे पूछा कि मैं क्या चाहता हूं और मैंने कहा कि मैं 100 साल की तक जीवित रहना चाहूंगा, 2050 में भारत को विश्व मंच के शीर्ष पर देखने के लिए ... उस समय भारत 1 या 2 नंबर पर होगा।''

लेकिन आश्चर्य की बात तो ये है कि जिन क्षेत्रों में डॉ मूपन की रुचि है वही रोटरी के भी मुख्य फोकस क्षेत्र हैं जैसे बाल शल्य चिकित्सा और डायलिसिस सेंटर से लेकर अन्य स्वास्थ्य कल्याण गतिविधियाँ, गरीब देशों के चिकित्सा पेशेवरों को प्रशिक्षित करना और सामाजिक कल्याण गतिविधियाँ जैसे प्राकृतिक आपदा पीड़ितों के लिए घर बनाना इत्यादि। तो उन्होंने क्लब के सिर्फ एक मानद सदस्य होने के बजाय रोटरी में शामिल होने पर विचार क्यों नहीं किया?

वह मुस्कुराते हुए कहते है, ''चिकित्सा समिति या शैक्षिक समिति के सिवाय मैं किसी भी संगठन में सक्रिय नहीं रहा, लेकिन अब जब हमने ये साझेदारी शुरू कर दी है (केरल में घर बनाना), मैं भविष्य में यही करना चाहूंगा, आगे बढ़ना।''

रोटरी और एस्टर समूह के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर करने के दौरान मौजूद रहे रो इ निदेशक सी भास्कर इस साझेदारी को ले कर बहुत उत्साहित हैं, उन्होंने कहा कि वह ''एस्टर समूह के साथ हुए इस अनुबंध और साझेदारी को और आगे ले जाने'' के बारे में रो ई बोर्ड और टीआरएफ ट्रस्टीयों से बात करेंगे।

उन्होंने कहा, ''वो एक महान इंसान हैं, जिन्होंने अपनी संपत्ति का 20 प्रतिशत धन गरीबों के लिए, एक धर्मार्थ ट्रस्ट को दान कर दिया है और अब अपना 80 प्रतिशत समय परोपकारी कार्यों जैसे मुफ्त परामर्श और अफ्रीका, फिलीपींस, बांग्लादेश आदि के डॉक्टरों को प्रशिक्षण देने के इच्छुक हैं। वह रो इ जैसे संगठनों के साथ काम करने के लिए उत्सुक है। रोटरी को भी ठीक ऐसी ही अंतरराष्ट्रीय साझेदारी और सहयोग की तलाश है।''

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

एक रोटरी रैली पहुँची हिमालय

वी मुत्तुकुमारन

रोटरी के उदात्त आदर्शों ने हिमालय की शिखरों को स्पर्श किया है, वास्तव में भारत, नेपाल और भूटान के बीच 7,800 किलोमीटर की कार रैली के साथ रो ई मंडल 3131 के 10 अलग-अलग क्लबों के 22 सदस्य इस अत्यधिक-जोखिम भरे यात्रा में ठंड और रोमांच का आनंद ले रहे थे।

पीडीजी सुबोध एम जोशी के नेतृत्व में, रोटरी के प्रमुख अभियानों जैसे कि WinS, ग्लोबल वार्मिंग, पोलियो उन्मूलन और अंग दान के स्टिकर के सजीधजी सात कारों का काफिला रोटेरियन को लेकर यात्रा पर निकल पड़ा, जिसका उद्देश्य मार्ग में लोगों को इन अभियानों के बारे में शिक्षित करना था। क्रॉस-कंट्री हिमालयन रैली को पनवेल से डीजी शैलेश पालेकर ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया और 600 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद वे अपने पहले पडाव इंदौर पहुंचे। पीडीजी संजीव गुप्ता ने रहने की आरामदायक व्यवस्था की, जबकि डीजीएन गजेंद्र नारंग ने एक विशेष बैठक में रैली में शामिल सदस्यों की खूब प्रशंसा की।

रोटरी की उपलब्धियों को रेखांकित करने के लिए एक प्रेस मीट की व्यवस्था झांसी में की गई। बरेली में रोटेरियनों ने एक फ़िज़ियोथेरेपी सेंटर और जयपुर फुट निर्माण इकाई का दौरा किया। रोटरी क्लब बरेली हाईट, रो ई मंडल 3110 के आरटीएन अभिषेक कत्रु ने कहा, ''हम रैली के प्रतिभागियों से उत्साहित और प्रेरित हैं जिन्होंने रोटरी को इतना समय दिया है और पोलियो, WinS और ग्लोबल वार्मिंग जैसे समस्याओं के बारे में जागरूकता फैलाया है।''

एक शानदार स्वागत

नेपाल के गड्डा चौकी में, रोटरी क्लब धनगढ़ी, रो ई मंडल 3292 के रोटेरियन ने कार रैली में शामिल सदस्यों का शानदार स्वागत किया। नेपाल के पर्यटन राज्य मंत्री माया भट्ट ने धनगढी में एक विशेष कार्यक्रम में भारतीय रोटेरियन का स्वागत किया। बुटवल में, प्रतिनिधियों को स्थानीय क्लब द्वारा निष्पादित की जा रही चिकित्सा परियोजनाओं - अस्पताल, कैथ लैब, एमआरआई केंद्र और डायलिसिस इकाई - का भ्रमण कराया गया, इन सभी परियोजनाओं को लगभग ₹10 करोड़ खर्च किए जा रहे है।

इसके बाद रैली पलपा, पोखरा से होते हुए काठमांडू के रास्ते आगे बढ़ी, उन्होंने एक पर्वत पर स्थापित मनोकामना मंदिर का दौरा किया। पीडीजी केशव कुंवर ने काठमांडू में रैली का स्वागत किया जहाँ से उन्होंने सुबह में माउंट एवरेस्ट का सुंदर नजारा देखने के लिए एक पहाड़ी उडान भरी। ''इस प्रकार की कार रैली संपूर्ण विश्व में पोलियो को समाप्त करने और बच्चों को जलजनित बीमारियों से बचाने के लिए जागरूकता फैलाने के लिए रोटरी बेहतर कार्य कर रही है। यह स्वयं को और अपने बच्चों को भयानक बीमारी से सुरक्षित रखने के लिए लोगों में

PDG सुबोध जोशी (बाँए) और कुमार विधाता (रोटरी क्लब पुणे हडापसर) भूटान के उच्चतम मोटरेबल रोड़ पर।

जागरूकता का सृजन करता है,'' रो ई मंडल 3292 के डीजीएन राजीब पोखरेल ने कहा।

पशुपतिनाथ मंदिर का दर्शन करने और डीजीएन तथा और अन्य पीडीजी द्वारा बधाई प्राप्त करने के बाद, वे इटाहारी की ओर रवाना हो गए, जहाँ उनके सम्मान में रोटेरियन ने संगीत और नृत्य के साथ दावत दिया।

रोटरी क्लब पुणे साउथ के सुधांशु गोरे ने एक अनाथ लड़की के एक वर्ष के खर्च के लिए ₹12,000 दान दिया। कार रैली भारत में वापस होकर दार्जिलिंग पहुंची और डीजीएन सुभासिस चटर्जी ने दल के लिए रहने की आरामदायक व्यवस्था की। शून्य डिग्री तापमान के बीच दार्जिलिंग में सूर्योदय का अनुभव यादगार बन गया।

रोटेरियन एक रिवर रॉफ्टिंग एडवेंचर पर।

बर्फ का साम्राज्य

भूटान में फु येंटशोलिंग और पारो के बीच से यात्रा करते समय, उन्होंने शून्य से 7 डिग्री कम तापमान का अनुभव किया और वहाँ का सड़क बर्फ से पूर्ण रूप से आच्छादित था, जिससे होकर ड्राइविंग करना रोमांचकारी और साहसिक कार्य था। इसके बाद दल थिम्पू पहुँचा, जो एक सुनियोजित शहर है जहाँ खरीदारी के अनेकों बढ़िया विकल्प उपलब्ध हैं। पुणखा में कुछ सेवा परियोजना का दौरा करने के बाद रोटेरियन ने दोपहर का भोजन किया और वॉटर राफ्टिंग का आनंद उठाया। घीलेपु से, रोटरी के कारवें ने भारत में प्रवेश किया। बांग्लादेश की सीमा पर, भारतीय सेना ने उन्हें जलपान कराया और अपने मार्गदर्शन में क्षेत्र का दौरा कराया। रैली में शामिल सदस्यों ने सिलीगुड़ी में एक ब्लड बैंक परियोजना का दौरा किया।

धनबाद में यह एक शानदार स्वागत था और आरआईडीई कमल संघवी के साथ एक लंबी कार यात्रा के बाद आगंतुकों को सहज महसूस कराने के लिए सभी जरूरी व्यवस्थाएँ की गई थी। डीजीएन राजन गंडोत्रा, पीडीजीएस संदीप नारंग और संजय खेमका ने भी अपना योगदान दिया।

स्मृति और सृष्टि, PDG सुबोध जोशी की बेटियाँ और पत्नी स्नेहा, पशुपतिनाथ मंदिर में।

अंतिम पड़ाव

डीजी निखिलेश त्रिवेदी ने रायपुर में रैली के सदस्यों का स्वागत पीडीजीएस राकेश और साहू के??? साथ विचार-विमर्श करने के लिए दोपहर के भोजन के लिए किया। 20 दिनों के बाद कार रैली ने महाराष्ट्र के नागपुर में प्रवेश किया। एक फैलोशिप सम्मेलन के बाद क्रिकेट टूर्नामेंट के विजेताओं को पुरस्कार दिया गया।

मार्ग में, उन्होंने इंद्रपुर में प्रवेश किया, जहाँ उन्हें भिग्वान, कुरकुंभ और पुरंदर के रोटरी क्लबों द्वारा सम्मानित किया गया। इंदापुर के रोटेरियन ने रैली का संगीतमय बैंड के साथ स्वागत किया और ग्रैंड फिनाले का आयोजन लोनी, हडपसर के पास किया गया, और नौ क्लबों के साथ डीजी पल्लेकर ने डीजीएन रश्मि विनय कुलकर्णी के साथ मिलकर भव्य स्वागत समारोह की मेजबानी की।

इस बृहद साहसिक कार्यक्रम को समाप्त करते हुए, रैली के नेतृत्वकर्ता पीडीजी जोशी ने कहा, ''रोटरी प्लेटफॉर्म पर नेपाल और भूटान के पडोसी देशों के साथ मिलना एक अद्भुत अनुभव था। हम कार रैली के दौरान अनेक प्रमुख रोटरी गतिविधियों को प्रदर्शित कर सकते हैं और यह सीमा पर रोटरी के विचारों को साझा करने का एक शानदार अवसर था।''

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रोटरी द्वारा आपके लिए

रोटरी अंतर्राष्ट्रीय कैसे आपके रोई शुल्क को आपके लिए काम में लाती है?

दुनिया में परिवर्तन लाने एवं दूसरों से जुड़ने के लिए आपको और आपके क्लब को आवश्यक उपकरण प्रदान करके रोटरी अंतर्राष्ट्रीय आपके अनुभव को बढ़ाने के लिए समर्पित है। आपके शुल्क इसे संभव बनाते है। रोई जो प्रदान करती है उसका सर्वाधिक लाभ उठाने के लिए यहाँ कुछ बिन्दु है:

चुनौती: हमारे क्लब को बढ़ने की आवश्यकता है।
रो ई कैसे मदद कर सकती है: *rotary.org/membership* पर वर्तमान सदस्यों को व्यस्त रखने, संभावित सदस्यों के साथ जुड़ने, नए सदस्यों का स्वागत करने, और अपने क्लब को विकसित करने के लिए संसाधनों को खोजिए।

हमारा क्लब संभावित सदस्यों से जुड़ना चाहता है।
मैनेज मैम्बरशिप लीड्स उपकरण के माध्यम से, रो ई उन लोगों से क्लबों एवं मंडलों को जोड़ती है जिन्होंने रोटरी में रुचि दिखाई है। *rotary.org/membership* पर जाइए।

मैं जगह बदल रहा हूँ और जुड़ने के लिए एक नया क्लब ढूँढना चाहता हूँ।
rotary.org पर जाकर क्लब फ़ाइंडर द्वारा या अपने स्मार्टफोन में क्लब लोकेटर एप को डाउनलोड करके आप अपनी सुविधा अनुसार क्लब को ढूंढ सकते है।

ग्रांट सेंटर से भयभीत मत होइए। हालांकि यह पहली नज़र में भारी लग सकता है, पर यह अत्यधिक प्रयोक्ता मैत्रीपूर्ण है।

सैली प्लेट,
रोटरी क्लब मेरिएटा मेट्रो, जोर्जिया

पाकिस्तान में रोटरी का End Polio कार्यक्रम।

भारत में रोटरी प्रोजेक्ट के माध्यम से स्कूली बच्चों को बेहतर बैठने का आनंद मिलता है।

क्लब बदलने का फॉर्म *my.rotary.org/member-center/member-relocation* पर उपलब्ध है।

मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो एक अच्छा रोटेरियन बनेगा।

उन्हें अपने क्लब से जुड़ने के लिए आमंत्रित कीजिये या *my.rotary.org/member-center/member-referral* पर उनकी जानकारी दर्ज करके उन्हें अन्य क्लब के पास भेजिये।

मैं एक सफल क्लब परियोजना के बारे में प्रचार करना चाहता हूँ।

रोटरी शोकेस: *rotary.org/showcase* के माध्यम से अपनी परियोजना की जानकारी दीजिये एवं तस्वीरों एवं प्रभाव को साझा कीजिये।

मैनेज मैम्बरशिप लीड्स पृष्ठ एक शानदार उपकरण है! मैं पहले ही चार संभावित सदस्यों से जुड़ चुका हूँ जो अगले महीने हमारे क्लब में आ रहे है।

एडम बोलिंग,
रोटरी क्लब सैंडी स्प्रिंग्स, जोर्जिया

मैं एक अनुदान के लिए आवेदन करना या किसी आवेदन की स्थिति जानना चाहता हूँ।

rotary.org/our-programs/grants पर मौजूद रोटरी के ग्रांट सेंटर से शुरुआत कीजिये। सभी आधिकारिक भाषाओं में प्रत्यक्ष सहायता प्रदान करने के लिए क्षेत्रीय अनुदान अफसर भी उपलब्ध है।

मैं चाहता हूँ कि मेरे समुदाय के लोग हमारे क्लब एवं हमारे कार्यों के बारे में अधिक जाने।

रोटरी का पीपल ऑफ एक्शन अभियान समुदाय में आपके क्लब द्वारा लाये गए प्रभावों के बारे में बताने के लिए संसाधन उपलब्ध करवाता है। आपको मिलेगा इस्तेमाल-में-आसान मेसेजिंग, स्थानीय कार्यक्रमों के लिए विचार, सामाजिक मीडिया सहायक, और प्रिंट एवं वीडियो विज्ञापन सामग्रियों के साथ-साथ कैसे-करें मार्गदर्शिकाएँ। *rotary.org/brandcenter* पर अधिक जानिए।

मेरे क्लब के पास एक परियोजना का विचार है, लेकिन एक वैश्विक अनुदान हेतु साझेदारी करने के लिए हमें एक क्लब की तलाश है।

अन्य क्लबों के परियोजना पृष्ठों को देखने के लिए *ideas.rotary.org* पर जाइए। साझेदारों को लुभाने के लिए क्लब एवं मंडल नेतृत्वकर्ता एक पृष्ठ का निर्माण कर सकते है।

हमने सैन डिएगो अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एक ब्रांडिंग अभियान चलाया था जो अविश्वसनीय रूप से सफल रहा। अभियान ने पीपल ऑफ एक्शन के विडियोस, बैकलिट पोस्टर और सामाजिक मीडिया को एक साथ लाया।

स्कॉट केर
रोटरी क्लब सेन डिएगो
डाउनटाउन ब्रेकफास्ट

एक स्थानीय कार्यक्रम के लिए मैं रोटरी के बारे में सामग्रियों की तलाश में हूँ।

तुरंत उपयोग किए जा सकने वाले संसाधनों के लिए *shop.rotary.org* पर जाइए जो रोटरी और आपके क्लब के बारे में जागरूकता फैला सकते है।

मैं जानना चाहता हूँ कि क्या रोटरी को मेरी निजी जानकारी देना सुरक्षित है।

रोटरी लागू होने वाले क़ानूनों का पालन करती है इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि हमारे सदस्यों की निजी जानकारी सुरक्षित रहे। *my.rotary.org/privacy-policy* पर रो ई की गोपनीयता नीति के बारे में जानें।

©The Rotarian

RIPE मार्क भारत में

ऊपर : *RIPE मार्क मलोनी (बाएं से) DGN शब्बीर शाकिर, अश्विनी, DGE राजेन्द्र मधुकर भामरे, RIDE भरत पांड्या, रो ई मंडल 3030 के DG राजीव शर्मा, PDG किशोर केडिया, DGND रमेश मेहर और PDG महेश मोकलकर।*

नीचे : *(बाएं से) PRID शेखर मेहता, RIPE मलोनी, RIDE कमल संघवी और सोनल कोलकाता में।*

ऊपर : RIPE मलोनी और RIDE पांड्या।

नीचे : RIPE मार्क मलोनी, RIDE संघवी, सोनल और रो ई मंडल 3250 के वरिष्ठ नेता।

बाएं : *RIPE मलोनी के साथ रो*
ई मंडल 3030 के DGN शब्बीर
शाकिर।

ऊपर : *RIPE मलोनी भारतीय*
भोजन का आनंद लेते हुए। RIDE
पांड्या और DGE भामरे भी चित्र
में शामिल है।

बाएं : *RIDE पांड्या और*
RIPE मलोनी (बैठे हुए)। उन्होंने
2019-20 के थीम मौज़े पनहे हैं।

ऊपर से : महिला रोटेरियनों के साथ भुवनेश्वर में RIPE मलोनी।

चेन्नई में रोटरेक्टरों के साथ RIPE मलोनी, RIDE सी भास्कर, रो ई मंडल 3232 के DGE जी चंद्रमोहन और PRID पी टी प्रभाकर।

मंडल 3030 के होने वाले नेताओं के साथ RIPE मलोनी, RIDE पांड्या और DGE भामरे।

चित्र: रशीदा भगत

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

उत्तर-पूर्व में विश्वास का

रशीदा भगत

हाँ! ये सभी बच्चे हैं... चहकते, खिलखिलाते, मुस्कुराते हुए और चमकदारआँखों के साथ, दोनों स्थानों पर, एक तो लायज़ों फ्रेंडशिप स्कूल, खोमुनोम गाँव में, मणिपुर के चुराचंदपुर जिले के सिंगगट ब्लॉक में जहां रोटरी क्लब बंगलुरु ऑर्चर्ड्स के अध्यक्ष डी रविशंकर ने एक शानदार और विशाल इमारत में ₹40 लाख से अधिक का निवेश किया है और दूसरा उसी जिले में, हैप्पीनेस होम जिसका संचालन एक नेकदिल ब्रदर राम करता है। सिंगिंगट स्कूल की तरह ही यहाँ भी बच्चे मुस्कुराते हुए फूलों से हमारा स्वागत करते हैं और गीत के साथ नृत्य की प्रस्तुति देते हैं।

लेकिन फर्क ये है कि इस हैप्पीनेस होम और नज़दीकी मर्सी होम में जो सिस्टर्स ऑफ़ फ्रांसिसकन क्लैरिस्ट कॉन्ग्रेगेशन (एफसीसी) द्वारा चलाया जाता है, दोनों में क़रीब 100 बच्चे रहते हैं जिनमें अधिकाँश एचआईवी और एड्स से संक्रमित हैं।

मणिपुर नशीली दवाओं की लत के लिए बदनाम है और पिछले दो दशकों से इसने शेष भारत के स्वास्थ्य विशषज्ञों का ध्यान अपनी ओर खींचा है, क्योंकि दवाओं को इंजेक्ट करने के लिए सुइयों को साझा करने की वजह से एचआईवी/एड्स की संक्रमण दर बढ़ गई है। रविशंकर जो उत्तर-पूर्व के लोगों के लिए कुछ ठोस करना चाहते हैं, खासकर, इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर यात्रा करने के बाद, कर्नल क्रिस्टोफर रेगो (सेवानिवृत्त) के साथ, सीईओ सनबर्ड ट्रस्ट जो बच्चों के लिए शिक्षा और अन्य कल्याणकारी गतिविधियाँ प्रायोजित कर रहा है, उन्होंने हैप्पीनेस होम में लड़के और लड़कियों के लिए अलग अलग दो शौचालय ब्लॉक बनाने में मदद की है।

सिंगिंगट ब्लॉक के खोमुनोम गांव में एक स्कूल और इजीरॉन्ग

पुरानी पीढ़ी, जिसने बहुत संघर्ष और हिंसा देखी है पूर्वाग्रह से ग्रस्त है, लेकिन आज हमारे पास युवा पीढ़ी के साथ काम करने का मौका है।

निर्माण

गांव के एक छात्रावास में पानी की टंकी बनाने के लिए वे पहले ही ₹1 करोड़ दान कर चुके हैं, ''मैंने हमारी कंपनी हारा हाउसिंग में अपने पार्टनर बीएसएन हरि से लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय बनाने के, बच्चों के अनुरोध पर विचार करने के लिए कहा। उन्होंने तुरंत कहा, आप जो कहेंगे मैं करूंगा, पर मैंने कहा नहीं मेरे लिए मत करो। खुद जाओ, स्वयं यहाँ की परिस्थिति और आवश्यकताओं को देखो फिर निर्णय करो। हरी मेरे साथ आया था, आश्वस्त हुआ और इन सुंदर शौचालयों को बनाने के लिए ₹11.2 लाख का दान कर गया,'' रविशंकर कहते हैं।

हैप्पीनेस होम के ब्रदर राम कम बोलते हैं, लेकिन कर्नल रेगो बताते हैं कि अपने परिवार के सदस्य की दुखद मृत्यु के बाद उन्होंने एचआईवी पीड़ित बच्चों और ऐसे अनाथ बच्चों की परवरिश शुरू कर दी, जिनके माता-पिता एड्स से मर गए थे। उन्होंने अपने घर को एक आवासीय सुविधा में परिवर्तित कर दिया, बाद में आस-पास की जमीन खरीदकर इसका विस्तार किया।

उनके सपने

यहाँ मेरी मुलाक़ात दो किशोरी बहनों - डायमंड और रूबी से हुई, इस राज्य मणिपुर के निवासियों के लिए बिलकुल उपयुक्त नाम, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'रत्नों की भूमि' - जो अपने छोटे भाई के साथ 12 साल से यहां रह रही हैं।

हमारे लिए तैयार किए गए मनोरंजन कार्यक्रम के लिए पारंपरिक मणिपुरी वेशभूषा में, सिर पर बांस और फूलों से बने सुंदर हेडगेयर लगाए हुए, रूबी मुझसे कहती है, बिना किसी किसी लाग लपेट के, जिससे लगता है कि पहले भी कई बार ये कहानी सुना चुकी है: ''मेरी माँ की मृत्यु 2012 में हो गई थी और 2018 में मेरे पिता का निधन हो गया था। मैं और मेरा भाई रोज़ाना दवाई लेते हैं; पर मेरी बहन को दवाई की ज़रूरत नहीं है।'' वह 19 साल की है और छह साल से यहाँ रह रही है, कहती है, ''यहाँ का जीवन अच्छा है।'' उसका सपना एयर होस्टेस बनने का है, जबकि 16 साल की डायमंड एक फैशन डिज़ाइनर बनना चाहती है।

सेल्फ-हेल्प बच्चें अपना खाना खुद बनाते हुए।

कर्नल क्रिस्टोफ़र रेगो और रोटरी क्लब बेंगलोर ऑर्चर्डर्स के अध्यक्ष डी रविशंकर, महिला SHG प्रतिनिधियों के साथ।

छुटने तक पानी में चल कर बच्चे स्कूल जाते हैं।

कर्नल रेगो ने दोहराया कि हैप्पीनेस होम या मर्सी होम के सभी बच्चे एचआईवी से पीड़ित नहीं हैं; ''वे उन अनाथ बच्चों को भी रखते हैं जिनकी देखभाल के लिए कोई नहीं है। जो लोग संक्रमित हैं, मेडिसिन्स सैंस फ्रंटियर्स संस्था उन्हें ज़रूरी दवाएं प्रदान करता है; इसका पुख्ता इंतज़ाम है और इसकी निगरानी वे नियमित रूप से करते हैं। आपने देखा बच्चों को नाचते गाते; उनका उत्साह और ऊर्जा देखी। समय के साथ-साथ, इस संक्रमण के इलाज के लिए नई और बेहतर दवाएं भी आएंगी,'' वे कहते हैं।

मर्सी होम की प्रमुख, एफसीसी की सिस्टर एनी पोरुन्नोनील का कहना है कि प्रांत में इसकी शुरुआत 1996 में हुई थी, उस वक़्त वह डिस्पेंसरी में नर्स थी। उसके साथ चार सिस्टर और थीं और उनमें से कुछ ने ना केवल समुदाय के बच्चों को पढ़ाया था बल्कि टीकाकरण भी किया था। 1980 के आसपास पोलियो प्रतिरक्षण में उनकी भागीदारी उन्हें स्पष्ट रूप से याद हैं। ''इस क्षेत्र में तब पोलियो ड्रॉप्स के लिए कोई कोल्ड चेन नहीं थी और पोलियो ड्रॉप्स को हम बर्फ से भरे फ्लास्क में ले जाते थे।''

1996 में जातीय संघर्ष का एक बदसूरत दौर आया और उसी समय के आसपास नशीली दवाओं की लत भी बढ़ रही थी। हमें खेतों में नशेड़ी पड़े मिलते थे, और वे हमारे पास आते तो सर्दी, खांसी और बुखार से पीड़ित होते थे, हम उनका इलाज करते थे। सुइयां साझा करने की वजह से कई पुरुषों को एचआईवी संक्रमण हो गया था और हमने देखा कि पुरुषों की मृत्यु के बाद,

महिलाएं विधवा हो रही हैं, लेकिन तब तक वे एचआईवी से संक्रमित हो चुकी होती थीं,'' साँस छोड़ते हुए उसने कहा।

मुख्य रूप से नन्स छोटे बच्चों के एचआईवी / एड्स से प्रभावित होने और वक़्त से पहले मरने को ले कर चिंतित थीं। इसलिए, उन्होंने संक्रमित बच्चों को आश्रय दिया जो अनाथ भी थे। ''आज हमारे पास 50 बच्चे हैं, और शुक्र है कि वे सभी एचआईवी से संक्रमित नहीं हैं।''

फंडिंग पर, सिस्टर पोरुन्नोनील का कहना है कि एफसीसी में लगभग 180 सिस्टर्स हैं, जिन्हें मासिक भत्ता मिलता है और इस भत्ते से, होम को चलाने के लिए प्रत्येक ₹200 महीने का योगदान करती हैं। स्थानीय लोग भी मदद करते हैं; आगे कहती हैं ''आज सुबह ही एक दयालु महिला ने हमें ₹2,000 का दान दिया। पोषण में सहायता के लिए कर्नल रेगो का सनबर्ड ट्रस्ट हर महीने मर्सी होम को ₹10,000 देता है- मुख्य रूप से दूध और अंडे के लिए, ये संक्रमण की दवा के रूप में आहार है, प्रोटीन युक्त पौष्टिक भोजन लेना बच्चों की जरूरत है।'' उस बार, रेगो अपने साथ बच्चों के लिए, गद्दा बनाने वाली कंपनी कर्ल-ऑन द्वारा दान किए गए 60 कंबल और चद्दर लेकर गए थे।

आत्मनिर्भर बच्चे

अब रेगो एक ऐसी कहानी सुनाते हैं जो हृदय विदारक और आनन्ददायी दोनों है; यह बताती है कि भारत के कुछ छोटे बच्चे किस तरह की कठोर परिस्थितियों में रहते हैं और वर्णन करती है कि अपने बच्चों को बुनियादी शिक्षा दिलवाने के लिए उत्तर-पूर्व के लोग किस हद तक जा सकते हैं।

''कई गाँव पहाड़ी क्षेत्रों में स्थित हैं, और जब एक गाँव में 40 और दूसरे में 60 झोपड़ियाँ हों, तो आपके यहां हर जगह स्कूल नहीं हो सकते। यहाँ एक केंद्रीय विद्यालय है जहां आस-पास के गाँवों के बच्चों को पहाड़ियों की ट्रेकिंग कर नीचे आना पड़ता है, वे नदी पार कर, भारी बारिश में, कीचड, जोंक जैसी चुनौतीयों का सामना करते हुए स्कूल पहुँचते हैं।''

इस सब से बचने के लिए, जंगलों या पहाड़ियों में दूर दराज रहने वाले परिवार अपने बच्चों के रहने के लिए स्कूल के पास ही छात्रावास ढूंढते हैं। ''लेकिन ज्यादातर लोगों के लिए, जो हद से हद चावल या केले का व्यापार करते हैं, छात्रावास महंगा है और वे इसका खर्चा वहन नहीं कर सकते। इसलिए आत्मनिर्भर बच्चे की उत्पत्ति हुई। उसके माता-पिता की कोशिश रहती है कि स्कूल के किसी करीबी गाँव के झोपड़े में कोई कोना मिल जाए। बच्चे, अक्सर भाई-बहन होते हैं, इन सभी की उम्र 6, 7 या

1980 के आसपास पोलियो प्रतिरक्षण में उनकी भागीदारी उन्हें स्पष्ट रूप से याद हैं। इस क्षेत्र में तब पोलियो ड्रॉप्स के लिए कोई कोल्ड चेन नहीं थी और पोलियो ड्रॉप्स को हम बर्फ से भरे फ्लास्क में ले जाते थे।

सिस्टर **एनी पोरुन्नोलील**
(जिन्होंने पोलियो प्रतिरक्षण में मदद की हैं)

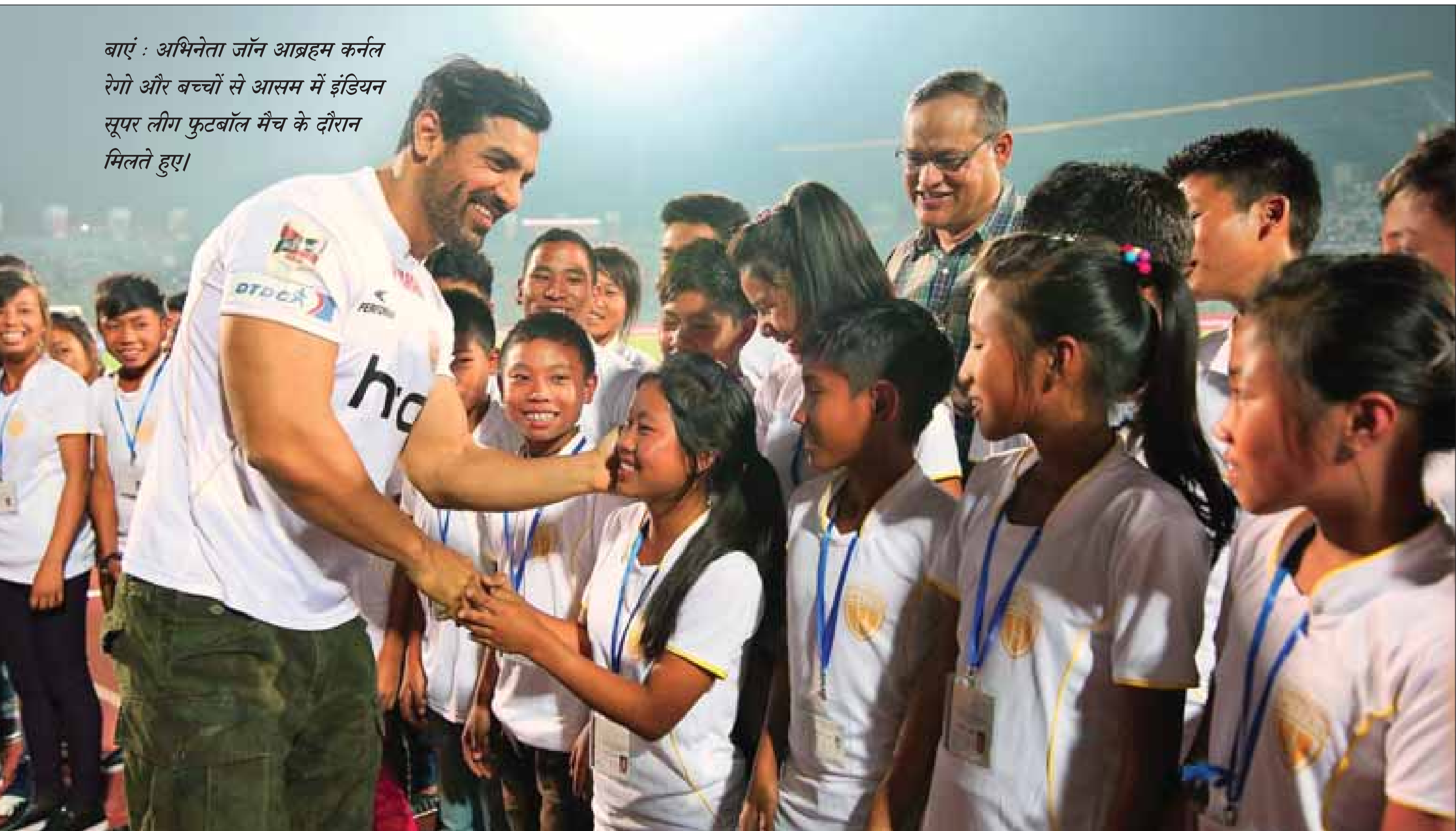
बाएं : अभिनेता जॉन आब्रहम कर्नल रेगो और बच्चों से आसम में इंडियन सूपर लीग फुटबॉल मैच के दौरान मिलते हुए।

ऊपर : कर्नल रेगो, रविशंकर, उनके बिज़नेस पार्टनर बी एस एन हरि, सुनंदा हरि और पाओला रविशंकर, ईजिरॉन्ग हॉस्टल में पानी की टंकी के उद्घाटन समारोह में।

शीर्ष : मनोरंजन कार्यक्रम के लिए पारंपरिक मणिपुरी परिधान पहने हुए कुछ लड़कियाँ।

8 साल होती है, आमतौर पर उन्हें घर के बाहर एक छोटी सी जगह दी जाती है, मूलतः रसोई के रूप में।''

रेगो आगे जो बताएँगे उससे आपका दिल पसीज जाएगा ... क्योंकि अधिकांश माता-पिता किराए का भुगतान नहीं कर सकते, इसलिए झोपड़ी के मालिक को वे चावल की बोरी और सब्जियों के रूप में किराया देते हैं। उनके पास बच्चों को देने के लिए भी बहुत कम पैसे होते हैं, इसलिए वे उनके लिए चावल की बोरी, कुछ जलाऊ लकड़ी और कभी कभी कुछ सब्जियाँ पीछे छोड़ जाते हैं। रेगो कहते हैं, ''अक्सर बच्चों को अपने भोजन का प्रबंध खुद करना पड़ता है। वे थोड़े से आलू और प्याज खरीदते हैं, कभी-कभी नदी से मछली या घोंघे पकड़ते हैं या जंगल से

कुछ जड़ों या मशरूम खोद लाते हैं और स्कूल जाने से पहले खुद ही भोजन तैयार करते हैं।''

एक अनुरोध स्थानीय लोगों का

शिक्षा की प्रबल कामना और स्कूल के निकट बच्चों के लिए आवास की खोज के निरंतर संघर्ष के चलते, एक दिन रेगो जब भारतीय सेना में थे और इम्फाल में सीमा सड़क संगठन के साथ काम कर रहे थे, उन्हें, मणिपुर इंफाल से लगभग 80 किमी दूर, जहां सड़क मार्ग से पहुंचने में लगभग तीन घंटे लगते हैं, एक नागा गाँव इज़ीरोंग में, स्कूली बच्चों के लिए एक छात्रावास बनाने के लिए अनुरोध मिला, जिस से वे आश्चर्य में पड़ गए। जाहिर है, उस क्षेत्र में उन्होंने रेगो के काम के बारे में सुना था (*रोटरी समाचार* के फ़रवरी अंक में)। लेकिन गाँव एक घने जंगल के भीतर था और भारतीय सेना के एक सेवारत कर्नल रेगो को इस संघर्षशील क्षेत्र में, किसी षड्यंत्र की संभावना नहीं लगी, जहां स्थानीय लोग अक्सर सेना और विद्रोहियों के बीच फंस जाते हैं।

''उनका मुझसे अनुरोध करना, एक सेना के आदमी से मदद मांगना, अजीब लगा।'' कुछ स्थानीय दोस्तों की मदद से, अपनी सुरक्षा की गारंटी देने वाले, मैं उस गाँव गया और वहां जा के मुझे अच्छा लगा। उस वक़्त ग्राम प्रधान ने भूमि दान देने और गाँव से हर तरह की सहायता करने का संकल्प लिया। शुरुआती दिनों में, सुरक्षा के खतरे को देखते हुए, रेगो को बेहद सावधान रहना पड़ता था और वह ''अक्सर किसी को बिना बताए चुपके से निकल जाता था क्योंकि मुझे उस जगह पहुँचने के लिए घने जंगल से होकर गुजरना पड़ता था और अगर किसी ने आप पर कोई गोली चलाई, तो आप को मालूम भी नहीं चलेगा कि गोली आई कहां से थी! यहां तक कि अक्सर मेरे ड्राइवर को भी नहीं पता होता था कि हम कहां जा रहे हैं।''

निर्माण के लिए गांव ने काफी ज़मीन और लकड़ी का योगदान दिया। ''हमें पत्थरों की जरूरत थी, और इसकी ढुलाई की लागत बहुत ज़्यादा थी,'' रेगो मुस्कुराते हैं।

मदद के लिए आगे आयी गांव की बाल-सेना! वे दूर-दराज के खेतों से पत्थर खोद कर लाते थे और इनका उपयोग इमारत की नींव भरने के लिए किया गया। असम राइफल्स ने इम्फाल से सीमेंट और निर्माण सामग्री लाने में मदद की और ''एक अत्यन्त दयालु ब्रिगेडियर ने छत के लिए मुझे पहले से रंगी हुई 300 से अधिक टिन की चादरें दे दी थीं।''

इस प्रकार, ''एक अनुभवी भिक्षुक'' की तरह, फरवरी 2014 में रेगो ने इस छोटे से गाँव में एक परियोजना शुरू की, जिसमें केवल 45 परिवार थे और छह महीने के भीतर ही एक सुंदर छात्रावास निकल के आ गया । ग्रामीणों को

इजाइरॉन्ग में सनबर्ड फ्रेंडशिप हॉस्टल में बच्चों के साथ कर्नल रेगो।

उनके परिश्रम के लिए उचित वेतन दिया गया था, ''क्योंकि वे बेहद गरीब हैं, निर्वाह के लिए ज़रूरी फसल उगाने वाले किसान हैं, अगर किसी साल वहाँ सूखा पड़ता है, तो वे भूखे रहते हैं, और हर झोपड़ी में आपको चाला (एक प्रकार की रोटी), ऊपर जड़ें, सब्जियाँ, जड़ी-बूटियाँ आदि मिल जाएँगी।''

देखते ही देखते हॉस्टल छोटे-बड़े करीब 45 बच्चों से भर गया, शुरुआत में तो बच्चों ने उन्हें दिए गए छोटे-छोटे रसोई घरों में अपने लिए खाना बनाया, बाद में उन्हें एक दान दाता मिल गया और ''हमने रसोई व भोजन कक्ष का निर्माण किया; मेरे सहपाठी रहे एक मित्र ने एक सौर ऊर्जा यंत्र उपलब्ध करवा दिया और पहली बार इन बच्चों ने प्रकाश बल्बों के नीचे पढ़ाई की!''

एक व्यक्ति ने गिटार, दूसरे ने कंप्यूटर दान कर दिया और ये स्थान संगीत और खुशीयों से भर गया ।

बच्चों का सैलाब

ये बात शीघ्र ही चारों तरफ फ़ैल गई और हॉस्टल में ''स्वयं-सेवी बच्चों का जमघट लग गया, अगले साल हमारे पास 150 हो गए; संख्या तीन गुना बढ़ गई थी।''

तीसरे वर्ष, 2016 में, एक भीषण त्रासदी हुई भूकंप के रूप में, जिसका केंद्र पड़ोस के गाँव में था। ग्रामीणों को किसी नए स्थान पर बसने के लिए कहा गया, एक ही रात में उस गाँव के 60 बच्चे इस छात्रावास में आ गए और बच्चों की संख्या बढ़कर 247 हो गई।

इस बात पर, रेगो ने स्कूल प्रबंधन को सख्ती से कहा कि आप हॉस्टल में इतने सारे बच्चों की भीड़ नहीं रख सकते,यह उनकी मान-मर्यादा से समझौता है, उन्हें एकांत और स्थान दोनों की आवश्यकता है। ''लेकिन ग्रामीणों ने हमें यह कहते हुए भावनात्मक रूप से ब्लैकमेल किया कि यदि आप हमारे बच्चों को यहां आने और पढ़ने की अनुमति नहीं देंगे तो हो सकता है बाद में उन्हें आतंकवादी संगठनों में शामिल होने के लिए मजबूर किया जाए। और किस मान-मर्यादा और जगह की बात कर रहे हैं आप? आज तक उन्हें इस तरह का आराम नसीब नहीं हुआ है। आप शौचालय या पानी की चिंता न करें, बस उन्हें यहां रहने दें, वे इंतज़ाम कर लेंगे,'' रेगो याद करते हैं।

वह कहते हैं कि इन आदिवासी क्षेत्रों में एक पारंपरिक छात्रावास मॉडल काम नहीं करेगा। ''आप तो 60 बच्चों का छात्रावास बना देंगे पर आदिवासी लोगों को जानते हुए कि उनके यहां हर बच्चे के लिए अलग से कंबल, चादर, गद्दे नहीं होते । दो भाई-बहन या कभी-कभी तीन भी एक साथ सोते और ओढ़ते हैं। इस तरह 60 बच्चों का ये छात्रावास 120 या 150 का बन जाता है!''

इस चुनौती से निपटने के लिए, एक बार फिर से वे मदद मांगने निकल पड़े (2016 में, कठोर परिश्रम के बाद उन्हें अशोक फेलो, घोषित कर दिया गया, एक उपनाम, जो धन एकत्रित करने में मदद करता है) और दोस्तों से मदद ले कर सिर्फ बाँस का उपयोग कर उन्होंने छात्रावास का विस्तार किया और अतिरिक्त बच्चों को उसी में समायोजित किया। जिस प्रकार की सद्भावना और ख़्याति वह अर्जित कर रहे थे, उसे देखते हुए, असम राइफल्स ने उन्हें हर तरह से समर्थन दिया, क्योंकि भारतीय सेना के लिए स्थानीय लोगों को यह जताने का बढ़िया मौक़ा था कि उनके और उनके बच्चों के प्रति सेना संवेदनशील है।

लेकिन जल्द ही वहां पानी की किल्लत हो गई क्योंकि हॉस्टल में ज़रुरत से ज़्यादा भीड़भाड़ हो गई थी, तब इससे निजात दिलवाने आए रविशंकर, ₹6 लाख की लागत से 75,000 लीटर क्षमता वाला पानी का टैंक बनाने के लिए। ''इसके बाद हम एक किसान से जमीन का टुकड़ा खरीदना चाहते थे ताकि बच्चों की ज़रुरत के लिए जैविक अन्न उगा सकें।'' और रवि ने कहा: मइसे खरीद लोफ़ साथ ही उसके लिए 4

इंफ़ोसिस बेंगलोर में मणिपुरी युवाओं का दौरा।

लाख रुपये का चेक दे दिया, मफ रेगो कहते हैं।

अविश्वास को धीरे-धीरे ख़त्म करना

रेगो बताते हैं कि मणिपुर में रोजगार के सीमित अवसरों की वजह से, कुछ लोगों को ही भारत में अन्यत्र नौकरी मिल पाती है। जिन्हें रोजगार नहीं मिल पाता, वे या तो रॉबिन हुड बनने की उम्मीद में आतँकवादी बन जाते हैं, समानांतर सेना से उन्हें वेतन मिलता है, यहां तक कि रैंक भी; उनकी सबसे बड़ी मजबूरी है,घर में भोजन का नहीं होना। या फिर वे म्यांमार की सीमा पर चले जाते हैं और ड्रग्स, अपराध या इससे भी बदतर मानव तस्करी में संलग्न हो जाते हैं। मुख्य रूप से गरीबी और नौकरी का नहीं होना ही उन्हें इसमें घसीटता है, और भाई-बहन की शिक्षा इसका एक बड़ा कारक है।

इस धारणा को बदलने के लिए कि शेष भारत उत्तर-पूर्व की परवाह नहीं करता, उन्होंने इन बच्चों को शिक्षित करने के लिए छए के बाहर के लोगों से समर्थन मांगा। एक बार जब बच्चा शिक्षित हो जाता है और उसे अच्छी नौकरी मिल जाती है, तो वह पूरे परिवार को गरीबी से बाहर निकालने में सक्षम हो जाता है।

उन्होंने वहां स्थानीय लोगों के साथ काम और बातचीत करते हुए महसूस किया कि उनकी पिछली पोस्टिंग मिजोरम की बजाय मणिपुर में, शेष भारत के लिए आक्रोश और नाराजगी अधिक थी। इसलिए उन्हें, वहां के बच्चों को भारत के बाकी हिस्सों से जोड़ने का विचार आया, बच्चों को मणिपुर से अपने गृह नगर बेंगलुरु भेजने के लिए उन्होंने असम राइफल्स की मदद ली। उन्होंने 35 बच्चों को, जिनमें से ज्यादातर हाई स्कूल स्तर के थे, बेंगलुरु का शानदार अनुभव दिया। हम उन्हें इन्फोसिस कैंपस ले गए, सेना उन्हें घुड़सवारी आदि के लिए ले गई, ऐसी ही एक यात्रा की समाप्ति पर एक लड़की ने कहा: मुझे नहीं पता कि हमारे यहां के लोग इतने मूर्ख क्यों हैं! अब मुझे पता चला कि बेंगलुरु भी हमारा है, पहाड़ियां, समुद्र, सब कुछ तो है मेरा, भारत में मैं कहीं भी बस सकती हूं, नौकरी कर सकती हूं। फिर हमारे लोग उसे क्यों चाहते हैं जो अपेक्षाकृत इतना छोटा है?

रेगो कहते हैं, उसकी मानसिकता में इस प्रकार का परिवर्तन होना हमारे लिए अचरज की बात थी। पुरानी पीढ़ी, जिसने बहुत संघर्ष और हिंसा देखी है पूर्वाग्रह से ग्रस्त है, लेकिन आज हमारे पास युवा पीढ़ी के साथ काम करने का मौका है।

ग्रामीणों ने हमें यह कहते हुए भावनात्मक रूप से ब्लैकमेल किया कि यदि आप हमारे बच्चों को यहां आने और पढ़ने की अनुमति नहीं देंगे तो हो सकता है बाद में उन्हें आतंकवादी संगठनों में शामिल होने के लिए मजबूर किया जाए।

कर्नल **क्रिस्टोफ़र रेगो**

निरंतरता

रेगो कहते हैं कि लोग उनसे पूछते रहते हैं कि वह अपने स्कूल या हॉस्टल को लगातार कैसे चला पाएंगे। ''जब आप ऐसे क्षेत्रों में काम करते हैं जहां गरीब से गरीब लोग रहते हैं, तो उन्हें पैसे देने के लिए मजबूर करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। मैंने कभी-कभी सख्त होने की कोशिश की है और कहा कि ठीक है जब तक निर्धारित फीस का भुगतान नहीं किया जाएगा, तब तक बच्चे को परीक्षा देने की अनुमति नहीं दी जाएगी, लेकिन मैंने देखा कि दो, तीन बच्चे स्कूल छोड़ गए, जिसमें से एक मैकेनिक की दुकान पर काम करता है। ये देख कर मुझे बहुत बड़ा झटका लगा और मैंने मान लिया कि ये गरीब किसानों के बच्चे हैं और इनमें से 70 - 80 प्रतिशत को प्रायोजित करने के अलावा हमारे पास और कोई विकल्प नहीं है।''

अली असगर जाजंअली इजाइरॉन्ग स्कूल में बच्चों को पढ़ाते हुए।

रेगो ने अपनी निरंतरता की परिभाषा को बदल दिया है; ''जब हमारे इस छोटे मित्र को नौकरी मिल जाएगी और 10-15 साल बाद वो अपने परिवार को गरीबी से बाहर निकाल लेगा, यही होगी निरंतरता। उन्होंने एक दमदार प्रेजेंटेशन बनाया है शेष भारत को नॉर्थ-ईस्ट के वंचित बच्चों तक पहुंचने के लिए, और कई जगह से विभिन्न रूपों में मदद आनी शुरू हो गई है... कंप्यूटर, गद्दे और कंबल, बिल्डिंग के लिए। ''आदर्श रूप से माता-पिता को इसे स्थायी रूप से संचालित करने के लिए कुछ ना कुछ ज़रूर करना चाहिए, लेकिन वे लोग इतने गरीब हैं कि वे ट्यूशन के ₹250 का भुगतान भी नहीं कर सकते हैं।''

लड़कियाँ पारंपरिक बाँस नृत्य का प्रदर्शन करती हुई।

फेसबुक पर 3.5 मिलियन हिट मिलने वाले उनके एक वीडियो को देखने के बाद, विजयलक्ष्मी पोद्दार ने एक छात्रावास को प्रायोजित किया है। उन्हें लगता है कि बच्चों को स्कूल के नज़दीक रहने के लिए छात्रावास में रखना सबसे अच्छा है। ''यदि वे पूरे वर्ष हमारे साथ रहेंगे, तो हम उनकी मानसिकता, विचारधारा पर काम कर सकते हैं और लंबे समय से चली आ रहे नकारात्मक सामग्री को हटा सकते हैं।''

छात्रावास का एक फायदा यह भी है कि एक छात्रावास में ''हमें 10 -12 गांव के बच्चे एक ही जगह मिल जाते हैं और हम दोस्ती के रिश्तों की शुरुआत कर सकते हैं। हमारा अंतिम लक्ष्य है छात्रावास को एक बड़े सामुदायिक केंद्र में परिवर्तित करना जहां स्वास्थ्य सेवा केंद्र, आजीविका प्रशिक्षण, जैविक कृषि गतिविधि आदि होंगी।''

रेगो भाग्यशाली हैं कि सरकार और भारतीय सेना दोनों का रवैया सनबर्ड ट्रस्ट के प्रति अनुकूल, सहयोगात्मक है। ''वे हमें किसी भी राजनीतिक, धार्मिक या अन्य जघन्य गतिविधियों में उलझते हुए नहीं देखते। लेकिन फंड के लिए सरकारी मशीनरी को झकझोरना अपने आप में एक चुनौती है।''

इस मायने में, रविशंकर जैसा ''एंजेल इन्वेस्टर'' उनके लिए एक ईश्वरीय वरदान है!

विश्वास का निर्माण

रेगो कहते हैं कि सनबर्ड ट्रस्ट के तीन साल के कठोर परिश्रम के बाद ''अब लोग हम पर भरोसा करने लगे हैं, जो इन क्षेत्रों में आसान नहीं है। क्योंकि आज तक आज तक उन्होंने जो देखा है वो है बंदूक और हिंसा। हम कहते हैं: हमारे पास कोई एजेंडा नहीं है और यहां आपके साथी बन कर आपकी मदद करने, आपके साथ काम करने के लिए आए हैं। जब वे अपने बच्चों को प्रायोजित होते हुए, स्कूल और हॉस्टल बनते हुए देखते हैं, वे खुशी से उछल पड़ते हैं। विशेष रूप से जब हम कहते हैं कि हम मानवतावादी मंच पर काम कर रहे हैं।''

उनकी टीम भी यह प्रमाणित करती है। बैंक ऑफ अमेरिका मेरिल लिंच के उपाध्यक्ष रह चुके, ''अलियासगर जंजाली हमारे इजीरॉन्ग स्कूल में स्कूल लीडर के रूप में शामिल हुए हैं। उन्होंने यहां काम करने के लिए कॉर्पोरेट जगत का त्याग कर दिया। इसी तरह, आईआईटी बॉम्बे से एमटेक सोनल सेठिया, ग्लासगो विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट के साथ, रोजगार के अपार अवसरों को ठुकरा कर आज सिंगनगेट स्कूल में स्कूल लीडर है,'' रेगो कहते हैं। इसी तरह, एक बिट्स पिलानी स्नातक, अश्वथी और बिपिन धाने आईआईटी खड़गपुर से पीजी हैं, जो असम में माजुली में स्कूल चलाता है।

अंत में, उन्होंने कहा कि उन्होंने 21 बच्चों को स्नातक करने में मदद की है और इनमें तीन डॉक्टर, एक वकील, एक एमबीए और एक होटल प्रबंधन में स्नातक हैं। ''प्रत्येक स्नातक बच्चा, हमारे द्वारा किये जा रहे कार्यों का राजदूत है, और बात एक से दूसरे तक फैलती जाती है। हम उन्हें यह समझाने का प्रयास करते हैं कि भारत में किसी जगह बैठा कोई व्यक्ति आपके बच्चे की चिन्ता करता है, उसकी शिक्षा का भुगतान करता है। हम पूरी लगन से ग्रामीणों, स्वयं सहायता समूहों आदि के माध्यम से प्रयास करते हैं और उनके इस डर को भी दूर भगाते हैं की हम सेना को जानकारी दे सकते हैं। ना ही हम यहां उनकी जमीन या जंगल छीनने आये हैं। कुछ ही समय में पूरा गाँव हमारे साथ हो जाता है और गाँव - गाँव तक हमारे भरोसे का आधार विस्तृत और बड़ा हो गया है, आज हम लगभग 100 गाँवों को कवर करते हुए 23 क्षेत्र के 2,300 बच्चों को प्रायोजित कर रहे हैं।''

लेकिन, रेगो कहते हैं, ''इसमें से कुछ भी मेरी पत्नी मर्ना और बच्चों राहुल और रिया के अपार समर्थन के बिना संभव नहीं होता। मर्ना बेंगलुरु में हमारे बच्चों को ट्यूशन देती है।''

रविशंकर का कहना है, कि ''सनबर्ड ट्रस्ट ने इस संघर्ष पूर्ण क्षेत्र में जो विश्वास और भरोसा अर्जित किया है, भारत के लोगों को उस का लाभ उत्तर-पूर्व में शांति, स्थिरता और विकास के लिए करना चाहिए।''

चित्र: रशीदा भगत और सनबर्ड ट्रस्ट से रायन लोबो

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

श्रीलंका के अजन्मे बच्चों के लिए रोटरी का अनोखा तोहफा

टीम रोटरी न्यूज़

यह श्रीलंका का एक अस्पताल है, जो छह मिलियन लोगों की सेवा करता है, और उसके कर्मचारी 600 महिलाओं की सेवा करते है। हर दिन, यहाँ 40-70 बच्चे पैदा होते है।

कोलंबो का रोटरी क्लब एक परियोजना में लगातार संसाधन लगाए जा रहा है जो 2004 की क्रिसमस के दूसरे दिन से शुरू हुई थी जब प्रलयंकारी सुनामी ने श्रीलंका में 200,000 लोगों की जानें ली थी।

लहरों द्वारा ढहाई गई बहुत सी इमारतों में से एक था गाल्ल स्थित महामोदरा मैटरनिटी हॉस्पिटल। वह 1940 के दशक से वहाँ था, और अब वह बस अब खत्म हो चुका था और पूर्णतः बेकार हो चुका था। दक्षिणी श्रीलंका में ऐसी कोई जगह नहीं थी जहाँ महिलाएं बच्चों को जन्म दे सकें। सामान्य अस्पताल घायल लोगों से भरे हुये थे, और उस वक्त मातृत्व अस्पताल को इतनी कम प्राथमिकता दी जा रही थी कि कोई उसकी तरफ देख भी नहीं रहा था जब तक कि रोटेरियन आगे नहीं आए।

रोटरी क्लब कोलंबो, PRIP के आर रविन्द्रन जिसके एक सदस्य है, ने पीडीजी कर्स्टीन थोवर्ट (जर्मनी की रहने वाली जो उस वक्त श्रीलंका में छुट्टियाँ व्यतीत कर रही थी) के माध्यम से जर्मनी के 200 से अधिक रोटरी क्लबों एवं 13 मंडलों के साथ संपर्क स्थापित करना शुरू किया। इसके पश्चात 6,000 से अधिक जर्मन रोटेरयनों ने एक जन्म क्लीनिक के पुनर्निर्माण के लिए 1.5 मिलियन यूरो दान किए। परियोजना का विस्तार हुआ और हजारों रोटेरियन और अन्य जैसे दी हेलमुट कोल फ़ाउंडेशन, टीआरएफ़, इत्यादि श्रीलंका की सबसे अच्छी रोटरी परियोजना में से एक को करने के लिए एक साथ आए।

''सुनामी के बाद से पंद्रह साल बीत गए है, लेकिन अस्पताल के साथ रोटरी की भागीदारी अभी भी अटूट है,'' रोटरी क्लब कोलंबो के एक सदस्य और रोई मंडल 3220 के पीडीजी सेनाके अमरसिंघे कहते है।

आज, गाल्ले स्थित मातृत्व अस्पताल, जिसकी लागत ₹250 मिलियन श्रीलंकाई रुपये (1.4 मिलियन डॉलर) से अधिक है, और रोटेरियनों द्वारा वित्तपोषित है, की 20 इमारतें है। इसमें 27 प्रसूति-कक्ष बिस्तर, आठ ऑपरेटिंग कक्ष, और एक 9 बिस्तर वाला नवजात गहन देखभाल कक्ष है। जर्मनी के निजी क्षेत्र के दानकर्ताओं से अतिरिक्त 128.8 मिलियन श्रीलंकाई रुपये (718,517 डॉलर) प्राप्त हुये थे और टीआरएफ़ ने 120 मिलियन श्रीलंकाई रुपये (668,384 डॉलर) दिये थे।

जर्मनी के दानकर्ता केवल मौद्रिक मदद देने तक ही नहीं रुके। डॉक्टरों और नर्सों के एक दल ने नई तकनीकों का प्रशिक्षण देने एवं उपकरणों का उपयोग सिखाने के लिए जर्मनी से आकर चार बार अस्पताल का दौरा किया। दो बार डॉक्टरों एवं नर्सों का एक श्रीलंकाई दल उनके कौशलों को निखारने के लिए जर्मनी गया। जानकारी का यह आदान-प्रदान स्त्रीरोग एवं शिशु देखभाल के क्षेत्र पर केन्द्रित था।

उपकरणों की एक नई खेप, जिनमें अधिक नवजात वेंटिलेटर, शिशु इंक्यूबेटर, नवजात सीपीएपी मशीन, एक नवजात रिसस्क्युरेटर और अन्य उपकरण

शामिल थे, को स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों, कोलंबो के रोटेरियनों और जर्मनी से पीडीजी कर्स्टीन थोवर्ट की मौजूदगी में 12 फरवरी 2019 को अस्पताल को सौंपा गया।

दक्षिणी श्रीलंका के बहुत से बच्चे आज रोटरी और जर्मनी एवं दुनिया भर के रोटेरियनों के कारण जी रहे है, ''जिन्होंने रखने के बजाय देने का फैसला किया था। वे उन रोटेरियनों के कारण मुस्कुराते है, हंसते है, और उनके माता-पिता को खुशी देते है जिन्होंने कहा था, जैसा कि मदर टेरेसा ने कहा था: 'मैं जानती हूँ कि मैं जो करती हूँ वह सागर की एक बूंद के बराबर है; लेकिन यदि वह एक बूंद सागर में नहीं होती तो सागर अपेक्षाकृत कम होता।''' अमरसिंघे आगे कहते है। ■

रोटेरियन पुबुडु डी सोय्ज़, रोटरी क्लब कोलोम्बो के अध्यक्ष, कुमुदु वारनकुलसूरिया PDG सेना के अमेरासिंघे, रोटेरियन मोहमदल्ली और जर्मनी से आए PDG कर्स्टिन, अस्पताल में स्वस्थ्य मंत्रालय अधिकारियों के साथ।

जहाँगीर

एन इंटीमेट पोर्ट्रेट ऑफ अ ग्रेट मुग़ल

रोबिन गुप्ता

जहाँगीर के उनके हाल ही में प्रकाशित चित्रण, जो पहले ही शर्मा का काफी माना हुआ विषय है, और जिसे वह इस सम्मोहक चित्रण में विश्वास के साथ आगे बढ़ाते हुए कहती है कि जबकि जहाँगीर की छवि एक कमज़ोर आदमी की रही है।

वास्तव में, एक बेपरवाह राजकुमार और एक उपेक्षणीय शासक होने से उलट, जहाँगीर ने अपने पूरे उथल-पुथल भरे जीवन में जबर्दस्त महत्वाकांक्षा और ताकत दिखाई। जब उसका राज्यारोहन संकट में था, तो जहाँगीर ने शक्तिशाली अकबर के खिलाफ ही बगावत कर दी। बल्कि जहाँगीर ही वो पहला मुग़ल था जिसने मेवाड़ के अजेय राणाओं को पराजित करने के बाद उनकी निष्ठा हासिल की थी, एक ऐसा अद्भुत कारनामा जिसे अकबर भी नहीं कर पाया था।

वास्तव में अधिकांश पहलुओं में चौथा मुग़ल बादशाह जहाँगीर उस मुग़ल सल्तनत के लिए निर्णायक था जिसके लिए बखूबी कहा गया है कि ‰मुग़लों जैसा न कभी कोई युग था और ना ही कभी होगा। उसकी हर चीज़ महान, भव्य, असाधारण थी। बादशाह के प्रताप से लेकर शाही सभा के वैभव तक; वास्तुकला की उसकी भव्यता और विशालता से लेकर कला एवं संगीत के उसके गौरव तक; एक बेमिसाल विलासिता और क्रूरता से लेकर बुद्धिमत्ता और सहनशीलता तक जो शायद पहले ही कभी देखी गई हो; इसके द्वारा दिखाई गई समृद्धि से लेकर इसके द्वारा पीछे छोड़ी गई अराजकता तक: विश्व के इतिहास में, मुग़ल सल्तनत की तुलना केवल रोमन साम्राज्य से ही की जा सकती है।

सौंदर्यशास्त्र के अलावा ध्यान देने योग्य बात यह है कि पार्वती शर्मा के अनुसार, बादशाह जहाँगीर के शासनकाल में वार्षिक राजसी आय आश्चर्यजनक रूप से 56 मिलियन पाउंड स्टर्लिंग थी। तुलनात्मक रूप से, उस समय ब्रिटिश राजगद्दी पर जहाँगीर के समकक्ष के पास ब्रिटिश राजकोष में प्रतिवर्ष आधा मिलियन पाउंड स्टर्लिंग थे। मुग़ल सल्तनत का शाही राजस्व भारत की स्थिरता और समृद्धि और, इसके सुव्यवस्थित प्रशासन को प्रतिबिंबित करता है। इसके अलावा, मुग़ल शासन के अंतर्गत प्रान्तों में सापेक्षिक शांति थी जिसकी वजह से कला का अभूतपूर्व उत्थान हुआ।

जहाँगीर को प्रकृति की सुंदरता से असीम आनंद की प्राप्ति होती थी। खिलते हुए कनेर के फूलों की घाटी से गुजरते हुए, उसने अपने साथ चल रहे सभी लोगों को उनकी पगड़ियों को कनेर के फूलों के गुलदस्तों से सजाने का आदेश दिया। जिसने ऐसा नहीं किया उसे अपनी पगड़ी जब्त करनी पड़ेगी। एक अन्य रोचक अस्थिर मिजाज में, जब उसने जाल फेंककर एक बार में ही दर्जनों मछलियाँ पकड़ ली थी, तो उसने उनकी नाक में मोती लगाकर उन्हें पानी में छोड़ दिया था।

बेशक, उसका एक अन्य सच यह है कि वह एक बादशाह था - सत्रहवीं शताब्दी में उस समय के सबसे शक्तिशाली साम्राज्य का एक बादशाह। वह इतना शक्तिशाली था जिसकी कल्पना करना आज संभव नहीं है; इतना शक्तिशाली जो मनुष्य को रोग विज्ञान की दृष्टि से आत्मकामी बनाता है, भले ही फिर वह फूलों और बारिश के प्रति आविर्भाव प्रतिक्रिया देता हो।

जहाँगीर के शासनकाल का शर्मा द्वारा किया गया वर्णन वास्तव में उसकी सामयिक छवि है क्योंकि यह किताब एक ऐसे भारत को दर्शाती है जो धार्मिक रूप से सहिष्णु, यथोचित रूप से खुला और बहुलवादी था। जहाँगीर के शासन में मुग़ल जागीर का एक बहुत बड़ा हिस्सा काफी हद तक धर्मनिरपेक्ष था। हालाँकि यह संभव है कि जहाँगीर की हिन्दू राजपूत माँ और साथ ही उसकी राजपूत पत्नी ने बादशाह के धार्मिक नजरिये को प्रभावित किया होगा, यह देखा जाता है कि उसकी सार्वजनिक छवि में, जहाँगीर एक कट्टर मुसलमान के रूप में सामने आया है। ■

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

31 जनवरी 2019 तक दक्षिण एशिया से शीर्ष 5 दान देनेवालें मंडल (अंतरिम अद्यतन) :

अंचल	मंडल	कुल अंशदान US डॉलर में
5	3190	$1,527,296
4	3141	$1,205,412
5	3131	$452,401
4	3150	$435,441
4	3012	$327,241

अनुदान रिपोर्टिंग समयसीमा

सभी चालू अनुदानों की 31 मार्च, 2019 तक की गतिविधियों की अन्तरिम रिपोर्ट 31 मई, 2019 तक जमा हो जानी चाहिए जिसके बाद अनुदान, रिपोर्टिंग के लिए विलंबित हो जाएंगे। हमारे रिकॉर्डस के अनुसार बहुत से अनुदान ऐसे है जो 31 मार्च 2018 पर समाप्त होने वाली अवधि के लिए अभी तक रिपोर्टिंग हेतु विलंबित है। ऐसे क्लबों/मंडलों, और साथ ही उनके अंतर्राष्ट्रीय साझेदारों, के नए अनुदान आवेदन संस्थान द्वारा स्वीकार नहीं किए जाएंगे यदि उन क्लबों/मंडलों के कोई भी अनुदान की रिपोर्ट विलंबित है तो।

ऑनलाइन रिपोर्ट के साथ संस्थान में निम्न सहायक दस्तावेज़ों की मूल प्रतियाँ जमा करनी है:

रिपोर्टिंग दस्तावेज़	अंतरिम रिपोर्ट	अंतिम रिपोर्ट
ऑन लैन रिपोर्ट जमा करें	हाँ	हाँ
बिल/इनवॉइस/रसीदें अपलोड करें	लागू नहीं	हाँ
अंडरटेकिंग को अपलोड करें	लागू नहीं	हाँ
लाभार्थी की जानकारी अपलोड करें	लागू नहीं	हाँ
निम्न दस्तावेज़ों की मूल कागजी प्रति आवश्यक है		
मूल उपयोगी प्रमाणपत्र और रसीदें/भुगतान विवरण	हाँ	हाँ
मूल/प्रमाणित सत्य प्रति में बैंक विवरण	हाँ	हाँ
रिफंड, यदि कोई	लागू नहीं	हाँ

सीएसआर-वित्तपोषित वैश्विक अनुदान

रोटरी मंडलों/क्लबों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे कॉर्पोरेट से सीएसआर कोष हासिल कर सकें ताकि उनके क्षेत्र में रोटरी के ध्यानाकर्षण क्षेत्रों के तहत सीएसआर-वित्तपोषित वैश्विक अनुदान कार्यान्वित हो सके। रोटरी संस्थान (भारत) वर्तमान में 36 सीएसआर-वित्तपोषित वैश्विक अनुदान कार्यान्वित कर रहे है और चार अनुदान पहले ही संबन्धित कॉर्पोरेट के पास रिपोर्ट जमा करके बंद किए जा चुके है।

प्रमुख दानों के अपडेटेड दिशानिर्देश:

एक निर्देशित दान या नामित अक्षय निधि को करने की प्रक्रिया में निम्नानुसार संशोधन किए गए है:

- सबसे पहले, दानकर्ता/उपहार देने वालों को उपहार की जानकारी साझा करने की आवश्यकता है (नीचे दिये गए मानचित्र में जैसे दर्शाया गया है), जिससे कि हमारे उपहार प्रबंधन दल को उपहार अनुबंध बनाने में मदद मिल सके।

निर्देशित दान	नामित अक्षय निधि
कोष का नाम, दानकर्ता का नाम, सदस्यता आईडी, राशि, ध्यानाकर्षण क्षेत्र, मंडल	कोष का नाम, दानकर्ता का नाम, सदस्यता आईडी, राशि, उपहार का नाम/प्रकार, मंडल

अनुबंध के तैयार होने के बाद उसे दानकर्ता/उपहार देने वाले को अग्रेषित किया जाएगा।

- दूसरा, दानकर्ता को हस्ताक्षर किया हुआ उपहार अनुबंध (पीडीएफ़ में या मूल प्रति में) हमारे कार्यालय के पते पर प्रस्तावित दान के साथ प्रमुख दान के संसाधन के लिए भेजना होता है।
- अंतिम उपहार अनुबंध, विधिवत हस्ताक्षरित, को उपहार आईडी के साथ दानकर्ता/उपहार देने वाले के साथ उनके रिकॉर्ड के लिए साझा किया जाएगा।

पूरी प्रक्रिया को पूर्ण होने में 10-12 व्यावसायिक दिनों का समय लगता है और सिस्टम में निर्देशित उपहार आईडी को दिखने में अतिरिक्त पाँच व्यावसायिक दिन लगते है। यदि आपका वैश्विक अनुदान आवेदन कतार में है तो कृपया निर्देशित उपहार की प्रक्रिया को काफी पहले शुरू कर दें।

जनवरी 2019 क्लब इनवॉइस

1 जनवरी को क्लब द्वारा बताई गई सदस्यता के आधार पर, क्लब इनवॉइस क्लबों को मेल कर दिये गए है। कृपया ध्यान दें कि भारत के क्लब उनके जनवरी इनवॉइस में दिये गए 'बैंक/इलेक्ट्रॉनिक ट्रान्सफर' का इस्तेमाल करके ऑनलाइन भुगतान कर सकते है; पिछले इनवॉइस में दी गई जानकारी अब सही नहीं है और उससे भुगतान नहीं होगा।

रोटरी संस्थान (भारत) को योगदान

जैसा कि आयकर अधिनियम 1961 के अनुसार आवश्यक है कि सभी दानकर्ता जो रोटरी संस्थान (भारत) में योगदान दे रहे है उन्हें योगदान फॉर्म/पत्र में उनका परमानेंट अकाउंट नंबर लिखने या हमें पैन कार्ड की स्कैन की गई प्रति भेजें, ताकि वर्तमान वित्तीय वर्ष में मिले योगदानों की रिपोर्टिंग की जा सके।

पुरस्कार

एक रोटेरियन, रोटरी क्लब या सेवा में हमारे साझेदारों का उनके समर्पण और मूल्यवान योगदानों के लिए धन्यवाद करने हेतु बहुत से पुरस्कार है। इन पुरस्कारों के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया देखिये: *https://my.rotary.org/en/learning-reference/learn-topic/awards*

सूचना पत्र

यदि आपने पहले से ही माय रोटरी पर अकाउंट खोल रखा है, या अपने मौजूदा सब्स्क्रिप्शन में बदलाव करने के लिए, देखिये: *https://my.rotary.org/en/news-features/newsletters*

वीडियो

विभिन्न विषयों जैसे हम कौन है, हमारे कार्य, 2019 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन भाषण इत्यादि पर रोटरी वीडियो *http://video.rotary.org/* और *https://vimeo.com/rotary* पर उपलब्ध है। ■

कथकली - नृत्य की गतिविद्या

सीता रत्नाकर

''भारत की समृद्ध सांस्कृतिक लीलाओं में शायद कथकली सबसे मोहक पारंपरिक प्रदर्शन कला है... इस विशिष्ट रूप से व्याख्यात्मक नृत्य को नाटकीय गतिविद्या द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जिसमें शारीरिक बलगति का एक विस्तृत रूप से परिभाषित कोड है, जो मनोरम भावपूर्ण हाव-भाव निरूपण के साथ संयोजन करता है।''

- के अय्यप्पा पणिक्कर, विख्यात मलयालम कवि।

भारत के प्रत्येक शास्त्रीय नृत्य की आतंरिक सुन्दरता किसी कहानी को नृत्य के माध्यम से प्रकट करने के असंख्य तरीकों में समाहित होती है। प्रत्येक शैली की अपनी विशिष्ट विशेषताएं होती है, हालाँकि वे सभी भरत द्वारा लिखित नृत्य ग्रंथ, नाट्य शास्त्र, की व्याकरण पर ही संरचित की गई है।

कथकली में, निरी तड़क-भड़क एवं प्रतिपादन की प्रबलता एक अतिश्योक्तिपूर्ण परिमाण प्रदान करती है। इस नृत्य रूप की उत्पत्ति केरल में हुई थी और यह अधिकांश तौर पर हिन्दू मंदिरों के अंदर किये जाने वाले अन्य भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के विपरीत पारंपरिक रूप से नाट्यशालाओं में प्रस्तुत किया जाता था। इसे केवल पुरुष नर्तकों द्वारा प्रस्तुत किया जाता था और इसमें दक्षिण भारत की प्राचीन एथलेटिक और मार्शल आर्ट परम्पराओं की हरकतें शामिल है। संगीत, नृत्य, नाट्य और साहित्य के सौन्दर्य संकलन के माध्यम से यह इन्द्रियों को आकर्षित करता है और इसे नर्तकों द्वारा पहने जाने वाले प्रभावशाली श्रृंगार, अलंकृत वेशभूषा और रंगीन मुखौटों के माध्यम से आसानी से पहचाना जा सकता है।

कथकली जिसका शाब्दिक अर्थ है (कथा) कहानी और (कलि) नृत्य, केवल 17वीं शताब्दी में एक पूर्ण विकसित शास्त्रीय कला के रूप में उभरा लेकिन यह कूडीयट्टम जैसी प्राचीन लोक कलाओं के समय से ही अस्तित्व में है जो 1 CE में अस्तित्व में थी। कूडीयट्टम या कुट्टीयट्टम जैसा कि इसे जाना जाता है, एक पारंपरिक प्रदर्शन कला है जो कूथू, एक लोक कला जो संगम युग के समय की है और जिसे आधिकारिक तौर पर यूनेस्को द्वारा 'मानवता की एक मौखिक और अस्पृश्य विरासत की एक उत्कृष्ट कृति' के रूप में मान्यता प्राप्त है, के तत्वों के साथ प्राचीन संस्कृत रंगमंच का एक संगम है।

कथकली एक स्वांग संबंधी नृत्य है जहाँ किसी कथा को कलात्मक रूप से नाटक का रूप दिया जाता है और यह कलाकारों और दर्शकों के लिए आवधिक अंतराल के साथ सुबह से लेकर शाम तक प्रस्तुत किया जाता है। पहले नाटक कई रातों तक चलते थे लेकिन आजकल, प्रस्तुतियां जबर्दस्त रूप से छोटी हो गई है। नृत्य, नाटकों पर आधारित होते है जिसे अत्तकथा कहा जाता है और ये रामायण, महाभारत और भगवत पुराण से लिए जाते है। अत्तकथा (अभिनीत कथा) संस्कृतनिष्ठ मलयालम प्रारूप में लिखी गई है जो किसी प्रस्तुति में हरकत और आलाप को पहचानने में मदद करती है। कथकली पहले मंदिरों के बाहर खुले आंगन में प्रस्तुत किया जाता था जब तक कि मंदिर परिसर में प्रस्तुतियों को सुगम बनाने के लिए *कुत्तमपालम* नामक विशेष रंगमंचों का निर्माण नहीं किया गया। मंच ज्यादातर खाली होते है और *कलिविलक्कू* (नृत्य के दीप) से जगमग होते है जिनका उपयोग कुट्टीयट्टम के समय से ही किया जाता है। बिजली के आविष्कार से पहले रात में ये दिये ही रोशनी प्रदान करते थे और नर्तकों के चेहरे की भाव-भंगिमाओं और उनकी भावनाओं पर प्रकाश डालने के लिए यह परंपरा आज भी जारी है।

कथकली इसके *अहार्य* के माध्यम से आसानी से पहचाना जाता है जिसमें अलंकृत वेशभूषा, मुकुट, चेहरे का मुखौटा और चमकीले रंग से पुते हुये चेहरे शामिल है। चेहरे का मेक-अप विस्तृत और जटिल होता है और इसको करने में लगभग चार घंटे लगते है और इसे उतारने में दो घंटे लगते है। इस मेक-अप के मार्गदर्शक को *चौत्तिक्करण* कहते है जो प्रशिक्षण और मंच-प्रस्तुति के लिए भी एक महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है। नर्तक फर्श पर अपनी पीठ के बल लेटता है और फिर विशेषज्ञ उसके चेहरे को पेंट करता है। मेक-अप एक निर्धारित दिशा-निर्देशों के तहत होता है जिससे दर्शकों को देवताओं, राक्षसों, संतों और जानवरों के चरित्रों को पहचानने में मदद मिलती है। कुछ रंग विशेष मिजाज और मुद्रा से जुड़े होते है। आमतौर पर, हल्का हरा श्रृंगार या प्रेम का प्रतीक होता है, लाल रौद्र रूप या गुस्से का और पीला अद्भुत या ताज्जुब का। कथकली एक अभिनेता को उसके द्वारा निभाए जाने वाले किरदार में ढालने के लिए इन मूल रंग पैटर्नों का अनुसरण करता है।

सात बुनियादी मेक-अप प्रकारों का उपयोग चावल के पेस्ट और सब्जियों के रंग से बने प्रमुख रंगों के साथ किया जाता है जिन्हें चेहरे पर लगाया

जाता है। *पच्चा* (हरा) के साथ शानदार मूंगा लाल रंग से पुते होठ कृष्ण, विष्णु, शिव, राम, अर्जुन और सूर्य जैसे महान पात्रों को दर्शाते है। चेहरे को बड़ा दिखाने के लिए जबड़े की हड्डी पर कुट्टी के कट-आउट को चिपकाया जाता है। *ताती* (लाल) का इस्तेमाल रावण, दुशासन और हिरण्यकश्यप जैसे दुष्ट पात्रों को दर्शाने के लिए किया जाता है। *कारी* (काला) का इस्तेमाल जंगल वासियों, शिकारियों और माध्यमिक किरदारों को दर्शाने के लिए उपयोग किया जाता है। असुरों और अधर्मियों के पात्रों को दर्शाने के लिए भी काले रंग का इस्तेमाल लाल रंग की धारियों और पट्टियों के साथ किया जाता है। ऊपर उठी हुई मूछें आम है और सफ़ेद रंग के रस से बना एक बिंदु नाक से जुड़ा हुआ होता है जिससे मानवों की तुलना में पात्र अधिक शानदार प्रतीत होते है। इस मेक-अप को *काठी* कहा जाता है।

राक्षसी पात्र मुँह के कोनों से बाहर निकलने वाले बड़े-बड़े दांत भी पहनते है। पीला रंग संतों, भिक्षु और महिलाओं का कोड है। चमकीले पीले, नारंगी या केसरी *मिनुक्का* (उज्ज्वल, चमकदार) सीता, द्रौपदी या मोहिनी जैसी महान धार्मिक स्त्रियों के पात्रों को दर्शाने के लिए उपयोग की जाती है। जो पुरुष महिलाओं की भूमिका निभाते है वो अपनी बाईं ओर एक जूड़ा लगाते है और उसे स्थानीय क्षेत्र की आम शैली में सजाते है। पारंपरिक कथकली में दुर्जनों, खलनायकों, राक्षसों और कुछ विशेष पात्रों द्वारा *ताड़ी* (दाड़ी) पहनी जाती है। लाल दाड़ी बुरे पात्रों के लिए होती है; काली दाड़ी गैर मामूली पात्रों के लिए होती है और सफ़ेद दाड़ी एक दिव्य पात्र को दर्शाती है, जिसकी आत्मा और चेतना पवित्र होती है जैसे कि हनुमान। *टेप्पू* गरुड़, जटायु और हंस जैसे विशेष पात्रों के लिए होता है जो हिन्दू पौराणिक कथाओं में संदेशवाहक का कार्य करते थे। पात्रों के स्वरूप में निखार लाने के लिए चेहरे के मुखौटे और मुकुट का भी इस्तेमाल किया जाता है। वेशभूषा और मेक-अप, अभिनेता को उसके मानवीय स्वरूप से अलौकिक स्वरूप में बदल देते है।

कथकली की ललित कला गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से जीवित है और यह पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती रही जब तक कि 20वीं शताब्दी के अंत तक इसने भारत की अन्य सभी शास्त्रीय कलाओं की तरह विलोपन का सामना नहीं किया। 1927 में, प्रसिद्द कवि वल्लाथोल नारायण मेनन और मुकुंद राजा ने इस कला अभिरूप को पुनर्जीवित करने के लिए केरल कलामंडलम की स्थापना की। 1933 में, कोचीन के महाराजा ने इसे उत्कृष्टता के एक संस्थान के रूप में विकसित करने के लिए चेरुथुरुथी गाँव में ज़मीन का एक टुकड़ा और एक ईमारत दान की। यह केरल सरकार के सांस्कृतिक मामलों

के विभाग के तहत एक अनुदान सहायता संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है और इसे 2007 में भारत सरकार द्वारा 'डीम्ड यूनिवर्सिटी फॉर आर्ट एंड कल्चर' का दर्जा दिया गया। कलामंडलम ने कुछ बेहतरीन कथकली नर्तकों को प्रशिक्षित किया है जिसमें रमनकुट्टी नायर, कृष्णा प्रसाद, वासु पिशारोदी, केसवान नाम्बूथिरी और कवुंगल चाठुन्नी पणिक्कर शामिल है।

परंपरागत रूप से, कथकली एक पुरुष कला रूप था जिसमें पुरुष स्त्रियों की वेश भूषा में महिला पात्रों की भूमिका भी निभाते थे जिसे *स्त्री वेषम* कहा जाता था। प्रशिक्षण अक्सर सख्त होता था और इसे उच्च स्तरीय शारीरिक फिटनेस की आवश्यकता होती थी। मार्शल आर्ट परंपरा से गृहीत शारीरिक मसाज, ओजपूर्ण नृत्य हरकतों के लिए शरीर को अनुकूल बनाने हेतु कथकली प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण पहलू बन गया। पुरुषों के इस प्रमुख गढ़ में महिलाओं का प्रवेश अनेक वर्षों तक एक अपराध समझा जाता था। कथकली नृत्य नाटिका में भाग लेने वाली पहली प्रलेखित महिला त्रिपुनिथुरा की कात्यायिनी थी और इस मंदिर नगरी में अब एक अखिल महिला कथकली मंडली है। मृणालिनी साराभाई पहली महिला नर्तकी के रूप में सम्मानित है जिन्होंने कथकली को व्यापक रूप से भारत और विदेशों में लोकप्रिय बनाया। वह गुरु थाकाज्ही कुंचु कुरूप की शिष्या थी और उन्होंने 1949 में अहमदाबाद में दर्पण अकैडमी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्ट्स की स्थापना की जहाँ उन्होंने कथकली में अनेक नर्तकों को प्रशिक्षित किया। डॉ कनक ने भी सात वर्ष की उम्र में गुरु *पांचाली* पणिक्कर से कथकली सीखने के लिए रूढ़ियों को तोड़ दिया। लेकिन कथकली नर्तकी शशिकला कहती है कि आज भी महिलाओं के लिए इसकी प्रस्तुति देना बहुत कठिन है। वह कहती है, ''मैं एक रूढ़िवादी परिवार से हूँ और मेरे दादा-दादी पुरुषों की दुनिया में मेरे प्रवेश के खिलाफ थे। केवल मेरे पिता ने मेरे निर्णय का समर्थन किया था। उन्होंने मुझसे कहा कि अगर मैं अपने निर्णय को लेकर अटल हूँ तो मैं कुछ भी कर सकती हूँ। मैंने बहुत चुनौतियों का सामना किया है लेकिन यह साबित करने के लिए मैंने कड़ी मेहनत की है कि मैं भी किसी पुरुष से कम योग्य नहीं हूँ और अब मैं यह दिखाना चाहती हूँ कि मैं बेहतर कर सकती हूँ।''

कथकली प्रदर्शन के लिए तैयार होते हुए एक कलाकार।

कथकली परंपरा में डूबी हुई है लेकिन नर्तक व्यापक पहुँच के लिए अन्य संस्कृतियों की कथाओं का प्रयोग करके कुछ नया करने का प्रयास कर रहे है। सदानम बालकृष्णन ने *हेला,* यूरिपिदीस द्वारा ग्रीक त्रासदी का एक मनोरंजन और शेक्सपियर के *ऑथेलो* और कोर्नेइल के *ले सिड* का कथकली शैली में सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया। दिलचस्प रूप से, कथकली और जापानी थिएटर, *नोह* में अनेक समानताएं पाई जा सकती है। दोनों ही शैलियों में पारंपरिक रूप से पुरुष महिलाओं की भूमिका समेत सभी भूमिकाएँ अदा करते थे। भावनाओं को जहाँ मुख्य रूप से शैली के अनुरूप भाव-भंगिमाओं से व्यक्त किया जाता है वहीं वेशभूषा पात्रों के स्वरूप को बयां करती है। दोनों शैलियों में एक शानदार नृत्य प्रस्तुति के माध्यम से विशिष्ट आकर्षण उत्पन्न करने के लिए अलंकृत मुखौटे, वेशभूषा, मेक-अप और उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। जैसा कि अरुंधती रॉय ने *द गॉड ऑफ़ स्माल थिंग्स* में लिखा है, ''इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कहानी शुरू हो गई, क्योंकि कथकली ने बहुत पहले ही यह खोज लिया था कि महान कथाओं का राज़ यह है कि उनका कोई राज़ नहीं है। महान कथाएँ वे होती है जिन्हें आपने सुना है और जिन्हें आप दोबारा सुनना चाहते है। जिनसे आप कहीं भी परिचित हो सकते है और उन्हें अपना सकते है। वे आपको रोमांच और छलावे भरे समापन के साथ छलती नहीं है।''

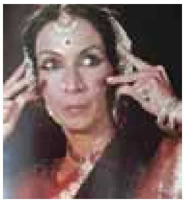

मृणालिनी साराभाई पहली महिला नर्तकी के रूप में सम्मानित है जिन्होंने कथकली को व्यापक रूप से भारत और विदेशों में लोकप्रिय बनाया।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Rotary PEOPLE OF ACTION

कैंसर देखभाल के लिए रोटरी क्लब बांद्रा ने दान की तीन गाड़ियाँ

मस्रूर अली एक रक्त संग्रह वेन को टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल को सौंपते हुए। चित्र में PDG प्रफुल शर्मा भी शामिल हैं।

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब बॉम्बे बांद्रा, रोई मण्डल 3141, ने पटेल इंटीग्रेटेड लॉजिस्टिक्स और सैंट ज़ेवियर स्कूल (जयपुर) के भूतपूव छात्र के साथ मिलकर टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल (टीएमएच) को ₹63 लाख की तीन गाड़ियाँ दान की ताकि अस्पताल द्वारा नियमित अंतराल पर आयोजित किए जाने वाले विभिन्न रक्त दान शिविरों से रक्त इकट्ठा करने में सुविधा हो सके।

जनवरी 2017 के बाद से दान किए गए ये वाहन, दल के सदस्यों और शिविर सामग्री के साथ-साथ इकट्ठा किए गए रक्त को नियमित अंतराल पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने के लिए बहुत मददगार रहे। ''ये वाहन इस बात को सुनिश्चित करते है कि रक्त को निर्धारित समय में विभिन्न अवयवों में विभाजित कर लिया जाए, जिससे कि बहुमूल्य रक्त संसाधन को बढ़ाया जा सके,'' इस क्लब के एक पुराने सदस्य और पटेल इंटीग्रेटेड लॉजिस्टिक्स के निदेशक सय्यद के. हुसैन कहते है।

मसरूर अली, क्लब के पूर्व अध्यक्ष, 2016-17, आगे कहते है कि जनवरी 2017 से दिसंबर 2018 तक, अस्पताल इन सुसज्जित रक्त बैंक वाहनों की मदद से 344 रक्त दान शिविरों एवं 21 प्लेटलेट दानकर्ता पंजीकरण शिविरों का आयोजन कर सका। अब तक लगभग 28,880 यूनिट रक्त इकट्ठा किया जा चुका है। शिविरों से अस्पताल तक समय पर रक्त यूनिटों के परिवहन, ''शीत श्रृंखला को बरकरार रखने एवं इकट्ठा किए गए बहुमूल्य रक्त को खराब होने से बचाने के कारण 35,000 से अधिक मरीज लाभान्वित हुये है,'' टाटा मेमोरियल अस्पताल के जॉनसन लुकोस कहते है।

परियोजना की अवधारणा तब बनी जब रोटेरियनों ने अस्पताल को पहला वाहन सौंपा। ''जब हमें एक गाइड द्वारा अस्पताल की सैर कराई जा रही थी, तो हम टीएमसी द्वारा कैंसर के इलाज के लिए यहाँ आने वाले मरीजों को संभालने में दिखाई जाने वाली संवेदनशीलता से प्रभावित हुये,'' हुसैन कहते है। डॉक्टरों ने कहा कि हर दिन कैंसर मरीजों के रक्त-आधान के लिए अस्पताल को 90 यूनिट रक्त की आवश्यकता होती है, पर यह केवल एक वाहन से मुश्किल है। टीएमसी एक साल में 6,300 बड़ी सर्जरियाँ करता है, सभी में रक्त/प्लेटलेट आधान की आवश्यकता होती है। रक्त की कमी एक स्थायी चिंता थी और इसे स्वेच्छिक दानकर्ताओं एवं मरीज के परिवार/मित्रों द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता था। रक्त की गुणवत्ता के लिए यहाँ कड़े मानक अपनाए जाते है और मांग को पूरी करने के लिए अस्पताल को दो और वाहनों की आवश्यकता थी।

जबकि उनके द्वारा दी गई पहली गाड़ी का प्रदर्शन उत्कृष्ट था, समस्या यह थी कि वाहन को 6 घंटों के भीतर ही अस्पताल लौटना होता था क्योंकि रक्त को अवयवों में विभाजित किया जाना होता था; इसलिए दो और वाहनों की आवश्यकता थी।

एक बार फिर रोटरी क्लब बॉम्बे बांद्रा, पटेल इंटीग्रेटेड लॉजिस्टिक्स और सैंट ज़ेवियर स्कूल के भूतपूर्व छात्र बाकी का पैसा जुटाने के लिए एक साथ आए और अस्पताल को अन्य दो वाहन दान किए गए। ■

रोटरी क्लब बॉम्बे बांद्रा के सदस्य।

रोटरी क्लब ठाणे स्तन कैंसर की स्व-पहचान करने को बढ़ावा देता है

टीम रोटरी न्यूज़

स्तन कैंसर, जो तेज़ी से भारत में फैल रहा है, के निवारण और उसकी जल्द पहचान पर जागरूकता फैलाने के लिए, रोटरी क्लब ठाणे, रो ई मंडल 3142, ने उसके सीएसआर साझेदार बेयर इंडिया के साथ मिलकर माइक्लीनिकेयर की एक अनोखी खोज का समर्थन किया। ''यह हाथों में पकड़ा जा सकने वाला एक उपकरण है जो 10 मिनट के अंदर एक महिला को स्व-परीक्षण करने देता है,'' क्लब अध्यक्ष अजय केलकर ने कहा।

यह स्तन में कोई भी छोटी गांठ की जल्द पहचान करने में अत्यंत मददगार है, और ''इस उपकरण के माध्यम से एक महिला 5 मिमी तक की छोटी गांठ का पता लगा सकती है। यह परीक्षण ना केवल चीर-फाड़ से मुक्त है बल्कि यह दर्दरहित एवं विकिरण-मुक्त भी है,'' उन्होंने आगे कहा।

इसका प्रबंध स्वयंसेविकाओं द्वारा किया गया था और दो दिन में 275 महिलाओं को इस उपकरण का इस्तेमाल करके स्व-परीक्षण के लिए प्रशिक्षित किया गया। शिविर से पूर्व, जिसका आयोजन क्लब के रोटरी हॉल में हुआ था, व्हाट्सएप जैसे सामाजिक मीडिया मंचों पर इसका काफी प्रचार किया गया। पंजीकरण प्रक्रिया ऑनलाइन थी और जिनकी जांच की गई उनके परिणाम मोबाइल नंबरों पर साझा किए गए।

''इस परीक्षण के लिए जो महिलाएं आई थी वे सभी शिक्षित एवं मध्यम वर्ग से थी; उन्हें वास्तव में यह परियोजना पसंद आई और हमारे क्लब ने इस परियोजना को बड़े स्तर पर ले जाने की योजना बनाई है ताकि बड़ी संख्या में महिलाओं तक पहुँचा जा सके,'' केलकर ने कहा।

हाथों में पकड़ा जा सकने वाला यह उपकरण बैटरी-संचालित है और काफी छोटा है (लगभग 9"x3.5" का)। परीक्षण के लिए बेंगलुरु से माइक्लीनिक ने उसका दल भेजा था, जिसने परीक्षण किए थे। यह परीक्षण वर्तमान में बेंगलुरु में माइक्लीनिक पर उपलब्ध है और इसकी कीमत लगभग 900 है। परियोजना का निधीयन बेयर इंडिया द्वारा किया गया था। ■

शिरोल अस्पताल को डायलिसिस मशीन दिया गया

रोटरी क्लब शिरोल, रो ई मंडल 3170, द्वारा रोटरी क्लब सेंट्रल चेस्टर काउंटी, रो ई मंडल 7450, यूएस, और टीआरएफ के साथ साझेदारी में वैश्विक अनुदान के अधीन महाराष्ट्र के कोल्हापुर मंडल के जयसिंहपुर में बी ए बीर्नाले अस्पताल को तीन डायलिसिस मशीनें सौंपी गई।

शिरोल (अमरसिंह पाटिल) और जयसिंहपुर (नीता माने) के मेयरों और क्लब के सदस्यों की मौजूदगी में डीजी आनंद कुलकर्णी और सह-पार्टनर रोटेरियन वसंत प्रभु ने अस्पताल को उपकरण सौंप दिया। ■

बी ए बिरनाले अस्पताल को डायलिसिस मशीनों को सौंपते हुए। PDG आनंद कुलकर्णी (बाएं) चित्र में शामिल हैं।

शब्दों की दुनिया

लेखक के जेकेट से उन्हे कभी मत आँकिए

संध्या राव

ट्विंकल खन्ना को पढ़कर अहंकार चूर हो गया। शब्दों का आनंद लेते हुये जिस दुनिया का वह वर्णन करती है वह भावना, परिज्ञान और मसाले से भरी हुई है।

ट्विंकल खन्ना को पढ़कर अहंकार चूर हो गया। शब्दों का आनंद लेते हुये जिस दुनिया का वह वर्णन करती है वह भावना, परिज्ञान और मसाले से भरी हुई है।

मैं हमेशा से स्वयं पर ऐसा व्यक्ति होने पर गर्व महसूस करती थी जिसने कभी किसी किताब का आंकलन उसका आवरण देखकर नहीं किया जब तक कि आत्म-मूल्य की इस अति सच्ची भावना ने मुझे अपने ही द्वारा खोदे गए गड्ढे में नहीं गिरा दिया (मैं हमेशा से इस अजीब वाक्यांश का इस्तेमाल करना चाहती थी!) क्योंकि जब तक मैं *द लेजेंड ऑफ लक्ष्मी प्रसाद* के एकदम अंत तक नहीं पहुंची तब तक मैं उसे नीचा नहीं दिखा पा रही थी। उसकी लेखिका में सच्ची प्रतिभा है।

ट्विंकल खन्ना काफी समय तक चर्चा में रही, शुरुआत में डिंपल और राजेश खन्ना की बेटी होने के कारण सुर्खियों में रहकर, और फिर थोड़ा बहुत एक अदाकारा होने के कारण भी। काफी लंबे समय तक शांत रहने और उसके बाद अक्षय कुमार से शादी और पारिवारिक ज़िंदगी जीने के बाद, वह फिर सामने आई, इस बार *टाइम्स ऑफ इंडिया* और *डीएनए* में छपे उनके ब्लॉग और कॉलम में काफी सशक्त और तार्किक ख़यालों वाली एक लेखिका के रूप में खबरों में आकर। उनका लेखन ना केवल अच्छी तरह लिखा हुआ था, बल्कि वह साहसी था, और राजनैतिक एवं अन्य बातों का उनका अवलोकन दक्ष था। फिर 2015 में उनकी पहली किताब आई मिसेज फनीबोन्स, एक ना के बराबर दिखने वाली टैगलाइन के साथ जो है, 'वह आपकी तरह है और मुझे बहुत पसंद है,' हेलेन फील्डिंग्स की *ब्रिजेट जोंस डायरी* की परिपाटी पर लिखी हुई जो मुझे बहुत पसंद आई थी।

चाहे जो भी हो, परिचय में उनका वर्णन करती हुई इस पंक्ति से मुझे अंदाजा हो जाना चाहिए था: 'वह उस भयानक त्रासदी से बाल-बाल बची जब बॉलीवुड ने उनके दिमाग को मटर के दाने जितना सिकोड़ने का प्रयास किया था, परंतु वह सही समय पर इससे बाहर निकली और चमत्कारपूर्ण ढंग से सकुशल बच गई।' हम में से कितने लोगों के पास स्वीकार करने की हिम्मत होती है, उसे चीख-चीख कर कहने की बात तो छोड़ ही दीजिये, कि हमने जो किया उसमें हम असफल रहे? इस संकेत के बावजूद भी, बौद्धिक दंभ ने मेरी नज़र को धुंधला कर दिया और यद्यपि मैंने मेरी माँ को *मिसेज़ फनीबोंस* की एक प्रति तोहफे में दी थी जिन्हें किताबें पढ़ने एवं वर्ग-पहेलियाँ हल करने की सनक है, फिर भी मैंने कई हफ्ते गुजरने के बाद भी इसे पढ़ने के योग्य नहीं समझा।

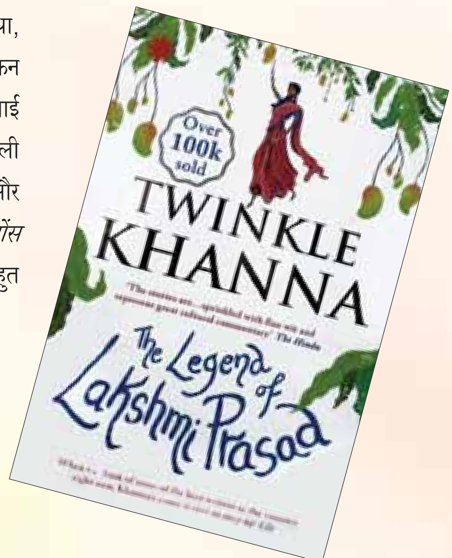

बहरहाल, यदि आप सोचते है कि ट्विंकल खन्ना को अपना नाम पसंद है, ''तो इसे पढ़िये: ...मैंने बच्चे (जिसे प्रेमपूर्वक 'नन्हा शैतान' कहा जाता है) को मेरी माँ के घर लाने का निश्चय किया ताकि वह मेरे अलावा परिवार के अन्य सदस्यों को भी तंग कर सके। मैं वहाँ पहुँचती हूँ और प्यारी माँ उनकी सबसे अच्छी मित्र, हनी, के साथ बैठी है और उनकी मित्र, बबल, को बुलाने की कोशिश कर रही है। हनी! बबल! डिंपल! क्या किसी को अब भी कोई आश्चर्य

है कि क्यों मेरा नाम स्प्रिंकल और रिंकल से तुकबंदी में रखा गया?''

2016 में आई *द लेजेंड ऑफ लक्ष्मी प्रसाद।* जबकि इस प्रकाशन की थोड़ी सी खबर दर्ज की गई, 2018 में आई *पाजामास आर फोर्गिविंग* की केवल ना के बराबर हुई। अब यह बहुत हो रहा था, किताबों की खातिर! कुछ जिज्ञासा हुई। इसलिए आखिरकार मैंने एमेज़ॉन से इन किताबों को ऑर्डर कर दिया और उन्हें श्वेता बच्चन (हाँ, जया और अमिताभ की बेटी) नन्दा द्वारा लिखित *पेरेडाइस टावर्स* के साथ फौरन प्राप्त किया। आखिरकार, प्रकाशन रंगभूमि पर बॉलीवुड के बच्चों का दौर चल रहा था। हालांकि, खोलने के बाद, किताबें अलमारी में चली गई, बमुश्किल ही देखी गई।

कुछ दिन पहले परिवार के साथ छुट्टियों पर जाने से पूर्व मैंने उसे बाहर निकाला। मैंने ट्विंकल खन्ना को पढ़ना शुरू किया और इस बार उन्होंने मुझे सम्मोहित कर लिया। लेखन सहज, गुंजायमान, ऊटपटाँग हुये बिना हल्का, पूर्णतः असंकोची और कभी-कभी, काफी मर्मस्पर्शी है। *द लेजेंड ऑफ लक्ष्मी प्रसाद* ने मुझे ताज्जुब में डाल दिया कि कैसे वह इतना सब जानती है - कुछ दंभ है, पर अधिकतर सच्ची उधेड़-बुन - क्योंकि बिना जाने आप कैसे इतनी सरलता से फिर भी इतनी गहराई से इंसान होने के बारे में लिख सकते है। यह तीन लघु कथाओं और एक बड़ी कथा का सेट है, एक लघु उपन्यास जैसा ही। विषय वस्तु अलग है, पात्र और स्थान अनोखे है, और कथन के अपने स्वर है।

लघु उपन्यास, जिसे मैंने खोजा था, कोयम्बटूर के रहने वाले एक स्कूल ड्रॉपआउट अरुणाचलम मुरुगनंथम की कहानी का एक काल्पनिक विवरण था जो महिलाओं द्वारा कम लागत में स्वयं बनाए जा सकने वाले किफ़ायती सैनिटरी नैपकिन का आविष्कार करके सुविधाओं से वंचित महिलाओं की ज़िंदगी में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। किताब पढ़ने के बाद, मैंने मुरुगनन्थन द्वारा दी गई टेड टॉक को सुना: उसने मेरी आँखों में आँसू ला दिये हालांकि मैं जनता और कहानी सुनते हुये स्वयं उस आदमी के साथ हंस रही थी। ट्विंकल खन्ना खूबसूरती से उस आदमी की भावना और उसके मिशन को अपने वृत्तान्त *'द सैनिटरि मैन फ्रोम दी सैक्रड लैंड'* में लिखती है। संयोग से, *मिसेज़ फनीबोन्स* और *द लेजेंड ऑफ लक्ष्मी प्रसाद* दोनों हिन्दी अनुवाद में उपलब्ध है।

मुझे एहसास हुआ कि ट्विंकल खन्ना का काल्पनिक वर्णन हिन्दी फिल्म पेडमेन का आधार है। आगे, आकस्मिक होने वाले एक इत्तेफाक से, 23 जनवरी को *द हिन्दू* में एक खबर छपी जिसका शीर्षक था 'भारतीय गाँव पर बनी एक लघु फिल्म को मिली ऑस्कर की स्वीकृति।' 26 मिनट की इस फिल्म, *पीरियड् एंड ऑफ सेंटेन्स* उत्तर प्रदेश के एक गाँव की स्थानीय महिला की कहानी है जो मुरुगनंथम की क्रांतिकारी किफ़ायती पैड बनाने वाली मशीन से नियमित आय और स्त्री स्वच्छता तक पहुँच हासिल करती है। इसका निर्देशन पुरस्कार विजेता ईरानी-अमेरिकी फ़िल्मकार रायका जेहताब्ची ने किया था और ''*द पेड प्रोजेक्ट* की रचना है जो लॉस एंजेलिस के ओकवुड स्कूल के प्रेरित छात्रों और उनकी अध्यापिका, मेलिसा बर्टन, के एक प्रेरित समूह द्वारा स्थापित संगठन है।''

कहानियाँ अनिवार्य रूप से अधिक कहानियों तक ले जाती है। ट्विंकल खन्ना ने कहा है कि उनकी पसंदीदा किताब एंटोन डी सैंट-एक्ज़ुपेरी द्वारा लिखित *द लिटल प्रिंस* (फ्रेंच में ले पेतित प्रिंस) है ''क्योंकि एक बच्चों की किताब होने से अधिक, यह प्रेम और तन्हाई की दृष्टांतकथा है।'' यह महत्वपूर्ण है क्योंकि अक्सर बच्चों की किताबों को वह इज्ज़त नहीं मिलती जिसकी वह हकदार होती है। उतनी ही महत्वपूर्ण है एक अखबार को दिये गए साक्षात्कार में उनकी टिप्पणी: ''कुछ किताबें है जैसे फ्रेडरिक बैकमेन द्वारा लिखित *अ मैन कॉल्ड ओवे* या एलिस मुनरो की कोई भी किताब जिन्हें पढ़कर मैं निराशा में खिड़की पर अपना सर पटकती हूँ क्योंकि मैं उनकी तरह नहीं लिख सकती हूँ। और फिर मैं प्रसिद्ध लेखकों, मैं उनका नाम नहीं लूँगी, की किताबें पढ़ती हूँ और तुरंत ही मुझे अपना लेखन बेहतर लगने लगता है।'' जो वह कहती है उससे उनकी स्पष्ट शैली की एक झलक देखने को मिलती है, जो निश्चित रूप से उनके लेखक की उज्वल विशेषताओं में से एक है।

उनकी तीसरी किताब एक उपन्यास है। *पजामास आर फोर्गिविंग* केरल के एक आवासिक आयुर्वेदिक क्लीनिक से शुरू होती है। हालांकि यह *लक्ष्मी प्रसाद* जितनी सम्मोहक नहीं है, तब भी इसमें एक वास्तविक वृत्त है जो इसे ताज़गी देने वाला बनाता है भले ही जिस प्रेम कथा के इर्द-गिर्द यह घूमती है वह उतनी दिलकश ना हो। फिर भी, मैं उनकी अगली किताब की प्रतीक्षा कर रही हूँ और यदि आपने उन्हें अभी तक नहीं पढ़ा है, तो आपको जल्द ही उन्हें पढ़ना चाहिए।

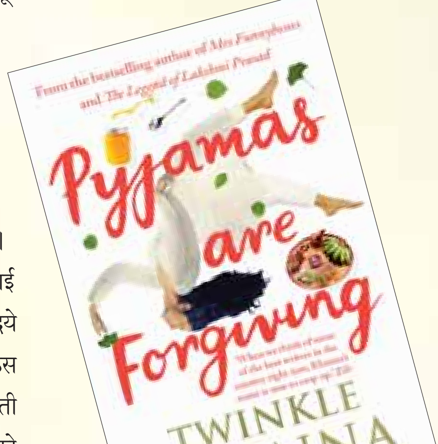

जैसा कि मिसेज फनीबोन्स कहती है, ''बाबा ट्विंकदेव के एक कथन को उद्धृत करते हुये: एक मूर्ख अपनी नाक ऊंची करके चलता है जबकि समझदार अपनी नाक को हमेशा किताबों में गढ़ाए रखता है। पढ़ने का आनंद लीजिये!''

वास्तव में। पढ़ने में आनंद लो!

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

Rotary News Subscription Remittances

You can pay the
Rotary News / Rotary Samachar
subscription online

Our Bank details:

Bank	:	HDFC Bank SB Account
Branch	:	Egmore, Chennai
A/c Name	:	Rotary News Trust
A/c No.	:	50100213133460
IFSC Code	:	HDFC0003820

E mail us following details:

Name of Club

President/Secretary's name

Amount/Date of transfer/UTR Number

For physical payment by cheque or cash in bank, write **Club Name only** without prefixing "Rotary club of". Eg. Rotary Club of Delhi Central should be written: Delhi Central.

RI Exchange Rate - March 2019

$1 = ₹71

Rotary at a glance

Rotarians	:	1,214,363
Clubs	:	35,787
Districts	:	538
*Rotaractors	:	155,020
Clubs	:	9,734
*Interactors	:	547,492
Clubs	:	23,804
RCC	:	10,200

**Estimated*

As on February 15, 2019

Membership Summary

As on February 1, 2019

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	114	4,709	206	40	232	199
2982	68	3,042	151	65	117	53
3000	128	5,349	505	232	679	199
3011	81	3,469	725	47	115	25
3012	89	3,606	799	53	131	56
3020	76	4,021	224	54	466	349
3030	91	4,903	604	78	324	166
3040	95	2,087	230	33	135	142
3053	68	3,055	541	9	57	96
3054	128	6,252	1,084	77	324	475
3060	102	4,302	552	59	131	141
3070	103	3,114	323	45	164	58
3080	79	3,373	269	73	226	109
3090	77	1,971	64	36	39	122
3100	78	1,930	117	11	78	146
3110	115	3,798	321	25	52	104
3120	75	3,197	387	31	63	52
3131	131	5,454	1,204	94	310	90
3132	96	3,846	394	38	214	151
3141	95	5,588	1,327	110	271	84
3142	95	3,484	646	73	204	64
3150	95	3,552	357	60	248	109
3160	72	2,535	148	24	48	81
3170	126	5,695	615	56	346	164
3181	77	3,435	314	51	265	111
3182	84	3,345	256	27	278	95
3190	127	5,031	682	124	368	52
3201	142	5,360	345	93	134	49
3202	130	5,042	262	76	444	47
3211	139	4,431	282	6	97	128
3212	99	4,081	312	95	284	142
3231	78	3,249	255	48	216	305
3232	117	4,793	758	113	347	82
3240	88	3,099	393	44	163	168
3250	101	3,919	699	58	216	176
3261	73	2,651	354	8	105	43
3262	90	3,403	418	37	77	76
3291	147	3,721	721	82	135	600
India Total	**3,769**	**147,892**	**17,844**	**2,285**	**8,103**	5309
3220	71	1,997	286	76	204	73
3271	85	1,456	245	51	19	15
3272	145	2,570	367	50	38	38
3281	203	5,626	820	221	94	188
3282	148	4,269	488	114	48	42
3292	117	4,570	697	121	127	113
S Asia Total	**4,538**	**168,380**	**20,747**	**2,918**	**8,633**	**5,778**

Source: RI South Asia Office

यक्ष्मा मुक्त भारत के लिए एक अभिविन्यास संगोष्ठी

टीम रोटरी न्यूज़

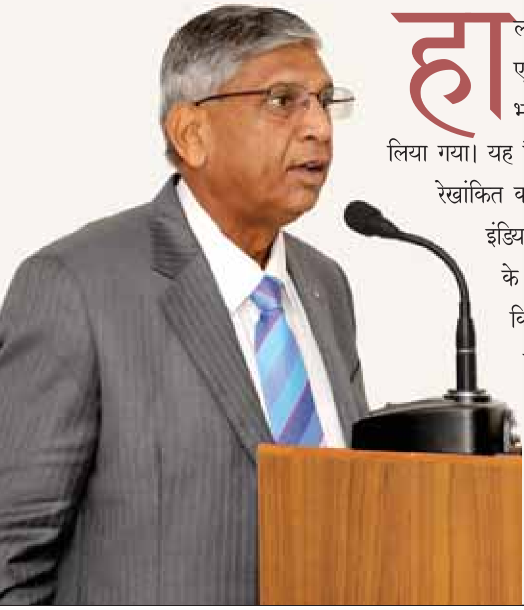

PRID वाई पी दास

हाल ही में रो ई मंडल 3232 ने रोटेरियनों के लिए एक संगोष्ठी आयोजित की, जिसमें यक्ष्मा मुक्त भारत की दिशा में कार्य करने का संकल्प लिया गया। यह बैठक हमारे देश में यक्ष्मा की गंभीरता को रेखांकित करने के लिए आयोजित किया गया। रोटरी इंडिया नेशनल टीबी कंट्रोल एंड अवेयरनेस कमेटी के अध्यक्ष, पीआरआईडी वाई पी दास ने बताया कि वैश्विक यक्ष्मा के 25 प्रतिशत मामले भारत में पाए गए हैं, इसलिए हर मिनट एक व्यक्ति इस बीमारी से काल के मुँह में समा रहा है। उन्होंने प्रतिनिधियों से समुदाय में जागरूकता फैलाने और इस बीमारी से जुड़े सामाजिक कलंक को प्रभावी ढंग से निपटने का आग्रह किया।

रोटरी इंडिया टीबी कंट्रोल कमेटी के सह-अध्यक्ष (दक्षिण) डॉ हिसामुद्दीन पापा ने बताया कि सक्रिय मामले-खोजने की जरूरत क्यों पड़ी और पुरानी बातों को याद करते हुए बताया कि किस तरह से मंडल ने सुदूर क्षेत्रों में यक्ष्मा रोग से निपटने के लिए अपना पहला यक्ष्मा स्क्रीनिंग वैन समर्पित किया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन की डॉ. सुमा ने वर्ष 2025 तक यक्ष्मा को समाप्त करने के लिए सहयोग के अवसरों की संभावनाओं की खोज की। उन्होंने केंद्र सरकार के यक्ष्मा नियंत्रण कार्यक्रम से संबंधित विभिन्न योजनाओं के बारे में भी बताया।

डीजी बाबू पेरम ने मंडल स्तर पर पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और विभिन्न क्लबों द्वारा छाती की जाँच कार्यक्रम के लिए मंडल निधि से ₹5 लाख दिया। डॉ पी श्रीनिवासन, निदेशक - सामुदायिक सेवा स्वास्थ्य, ने धन्यवाद ज्ञापन किया। ■

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP

Statement about ownership and other particulars about Rotary Samachar to be published in the first issue of every year after the last day of February

1. Place of Publication	:	Chennai - 600 008
2. Periodicity of its publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	P T Prabhakar
Nationality	:	Indian
Address	:	15, Sivasami Street Mylapore Chennai 600 004
4. Publisher's Name	:	P T Prabhakar
Nationality	:	Indian
Address	:	15, Sivasami Street Mylapore Chennai 600 004
5. Editor's Name	:	Rasheeda Bhagat
Nationality	:	Indian
Address	:	25, Jayalakshmipuram 1st Street, Nungambakkam Chennai - 600 034
6. Name and address of individual who owns the newspaper and partner or shareholders holding more than one percent of the total capital	:	Rotary News Trust Dugar Towers, 3rd Floor 34, Marshalls Road Egmore Chennai - 600 008

I, P T Prabhakar, declare that the particulars given are true to the best of my knowledge and belief.

Chennai - 600 008
1st March, 2019

sd/-
P T Prabhakar

रोटरी-सीएसआर स्वच्छता को बढ़ावा देती हैं

टीम रोटरी न्यूज़

काशीपुर के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3110, ने शहर के सरकारी स्कूलों में स्वच्छता और पेयजल की सुविधा प्रदान करने के लिए प्रतिष्ठित पेपर निर्माताओं नैनी समूह, के साथ गठबंधन किया है। जब रोटरी फाउंडेशन (इंडिया) ने वैश्विक अनुदान के लिए सीएसआर फंड स्वीकार करने के लिए अपना दरवाजा खोला, तो पवन अग्रवाल, कॉर्पोरेट के प्रबंध निदेशक, और क्लब के सदस्य, ने कंपनी के सीएसआर निधि को क्लब के WinS और आधारभूत शिक्षा और साक्षरता परियोजना के लिए आवंटित किया।

रोटेरियन ने छह स्कूलों को चिन्हित किया, जहाँ की बुनियादी सुविधाओं की स्थिति खराब थी और WASH सुविधाओं की कमी थी; इतना ही नहीं शिक्षकों और छात्रों के बीच वाश के बारे में जानकारी, सोच और इस्तेमाल से संबंधित ज्ञान की कमी थी।

रोटरी क्लब काशीपुर के रोटेरियन, बच्चों को हाथ धोने का तरीका सिखाते हुए।

क्लब के सहयोग के परिणामस्वरूप 1,200 से अधिक छात्रों को बेहतर स्वच्छता के लिए प्रोत्साहित किया गया और उन्हें साबुन से प्रति दिन हाथ धोने और उसे अपनी दिनचर्या का एक हिस्सा बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके अतिरिक्त, इस परियोजना ने सभी स्कूलों में लड़के-लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय का निर्माण करने और स्थायी हैंडवाशिंग स्टेशन स्थापित करने में मदद की। शिक्षकों और सहायक कर्मचारियों, स्थानीय और धार्मिक नेताओं को अपने संबंधित स्कूलों और समुदाय में कार्यक्रम को लागू करने के लिए प्रशिक्षित किया गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह परियोजना अपने जीवन-काल से अधिक समय तक चलें।

प्रत्येक स्कूल में स्वच्छता कर्मचारियों का वेतन तीन वर्षों के लिए कॉर्पोरेट द्वारा वहन किया जाएगा, जिसके बाद इसकी जिम्मेदारी स्कूलों को उठानी होगी। क्लब के सदस्य नियमित रूप से स्कूलों का दौरा करते हैं और स्कूल प्रबंधन समिति के साथ विचार-विमर्श करते हैं।

शिक्षा को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों में क्लब समुदाय में स्कूल के बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने के लिए एक और अनुदान का इस्तेमाल करने की तैयारी कर रहा है। ■

रायगढ में छात्रों के लिए साफ पानी

डी जी निखिलेश त्रिवेदी और छत्तीसगढ़ के उच्च शिक्षा मंत्री उमेश पटेल पानी शुद्ध इकाई के उद्घाटन पर।

छत्तीसगढ़ के उच्च शिक्षा मंत्री उमेश पटेल ने डीजी निखिलेश त्रिवेदी, रो ई मंडल 3261 की उपस्थिति में रायगढ़ में चार सरकारी स्कूलों में पेयजल शुद्धिकरण इकाईयों का उद्घाटन किया। क्षेत्र में पानी में उच्च क्षारीय स्तर को ध्यान में रखते हुए, छात्रों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए रोटरी क्लब रायगढ़ स्टील सिटी, रो ई मंडल 3261, ने स्कूलों को इन इकाईयों को दान में दिया। तारापुर सरकारी हायर सेकेंडरी स्कूल, नंदली हायर सेकेंडरी स्कूल, काचर हायर सेकेंडरी स्कूल, और कटार गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल चार स्कूल थे जहाँ पेयजल शुद्धिकरण इकाईयाँ स्थापित की गई। क्लब के अध्यक्ष टेकलाल जी ने कहा कि क्लब ने शहर के विभिन्न हिस्सों में 32 वाटर कूलर लगाएं हैं। ''इस परियोजना से छात्रों को स्वच्छ पेयजल प्राप्त करने और क्षेत्र में रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने में मदद मिलेगी।''

क्लब के रोटेरियन ने चार अन्य स्कूलों में सैनिटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन भी स्थापित किए हैं। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

गोरखपुर में रोटरी स्किल सेंटर

टीम रोटरी न्यूज़

महिलाएँ रोटरी सिंगर स्किल डेवलपमेंट सेंटर में सिलाई सीखती हुई।

राम नारायण लाल गर्ल्स इंटर कॉलेज में एक सिंगर रोटरी स्किल डेवलपमेंट सेंटर शुरू किया गया, जिसमें रोटरी क्लब गोरखपुर, रो ई मंडल 3120 ने रो ई मंडल 5610 (साउथ डकोटा, यूएस) और टीआरएफ के साथ मिलकर वैश्विक अनुदान परियोजना के अधीन 45 सिलाई मशीनें दान में दी।

DG स्तुति अग्रवाल प्राथमिक विद्यालय के छात्रा से बातचीत करते हुए।

राष्ट्रीय शिक्षा सोसायटी के साथ एक एमओयू के बाद जुलाई 2018 से केंद्र ने कार्य करना शुरू किया। वर्तमान में सेंटर में 160 महिलाओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है और उन्हें अपनी सिलाई कक्षाओं के लिए सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे के बीच कोई भी समय चुनने की आजादी हैं। केंद्र की देखरेख का जिम्मेदारी परियोजना निदेशक पुरविनारायण पांडे के कंधों पर है।

'सीखने के दौरान कमाएँ' की संकल्पना को अपनाते हुए, व्यावसायिक केंद्र विभिन्न स्कूलों और संस्थानों से काम लेता है। कमाई का 80 प्रतिशत हिस्सा प्रशिक्षुओं को दिया जाता है, शेष राशि का इस्तेमाल उपभोग्य सामग्रियों की खरीद और ओवरहेड खर्च के लिए किया जाता है।

क्लब रोटरी प्राथमिक विद्यालय चलाता है जो शिवपुर साहबगंज में स्थित हैं और जिसकी उद्घाटन तत्कालीन रो ई अध्यक्ष चार्लस डब्ल्यू पेटेंगिल और PRIP नितीश लहरी ने 1964 में किया था। क्लब के सचिव एम पी कंदोई कहते हैं ''यह 73 वर्षीय कल्ब की हमारी विरासत हैं। हम स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस यहाँ इस स्कूल में मनाते हैं।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गति

रोटरी क्लब कुंबकोणम - रो ई मंडल 2981

लाइफ अगेन फ़ाउंडेशन के साथ साझेदारी में आयोजित की गई एक कैंसर जागरूकता मैराथन में 3,000 से अधिक लड़कियों ने हिस्सा लिया। अभिनेत्री गौतमी मुख्य अतिथि थी। इस अवसर पर क्लब ने जरूरतमन्द महिलाओं को 500 सिलाई मशीनें एवं साड़ियाँ भी दान की गई।

रोटरी क्लब उलुंदूरपेट - रो ई मंडल 2982

क्षेत्र को हरा-भरा बनाने की पहल के अंतर्गत क्लब ने सेंथानाडु गाँव में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण मुहिम का आयोजन किया। रोटेरियनों ने इस प्रयास में ग्रामीणों को भी सम्मिलित किया।

रोटरी क्लब अकोला सेंट्रल - मंडल 3030

जुबिली इंग्लिश हाई स्कूल के विद्यार्थियों के लिए अकोला क्वीन्स के इनर व्हील क्लब के साथ एक पर्यावरण-अनुकूल गणेश मूर्ति निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया। डीजी राजीव शर्मा कार्यशाला में मौजूद थे।

रोटरी क्लब पुदुक्कोट्टई पैलेस सिटि रो ई मंडल 3000

एक प्लास्टिक विरोधी मुहिम के तहत, क्लब सदस्यों ने एक साप्ताहिक बाज़ार में व्यापारियों एवं सब्जी विक्रेताओं के मध्य जागरूकता पैदा करने के लिए पर्चे बांटे। क्लब अध्यक्ष काशीनाथन और उनके दल ने फुटकर विक्रेताओं से पॉलिथीन की थैलियाँ लेकर उन्हें कपड़े की थैलियाँ बांटी।

विधियाँ

रोटरी क्लब बलोत्रा - रो ई मंडल 3054

रोटरी भवन में एक आयुर्वेदिक शिविर का आयोजन किया गया और 60 से अधिक मरीजों को दवाइयाँ बांटी गई। रोटेरियनों ने माँ आईनाथ गौशाला को ₹5,000 दान किए जो अपाहिज गायों एवं बछड़ों की देखभाल करता है।

रोटरी क्लब सूरत - रो ई मंडल 3060

समाज सेवी युगल रोटेरियन नरेंद्रकुमार और भवानीबेन मेहता ने एक शमशान में ₹9 लाख की लागत वाला एक सौर संयंत्र और एक वॉटर हीटर दान किया। डीजी पिंकी पटेल ने अधिकारियों को यह सुविधाएं सौंपी।

रोटरी क्लब होशियारपुर - रो ई मंडल 3070

पीडीजी परविंदर जीत सिंह ने ज़िला सत्र न्यायाधीश अरोरा के साथ, ज़िला न्यायालय में कुर्सियों एवं पंखों से सुसज्जित एक प्रतीक्षालय का उद्घाटन किया ताकि वादियों को राहत मिल सके।

रोटरी क्लब अंबाला - रो ई मंडल 3080

दौरे पर आए एक अमेरिकी युगल - एक शीर्ष रक्षा फर्म में काम करने वाली श्लाघा आर्चिबाल्ड और एटॉर्नी जॉन आर्चिबाल्ड - और स्कूली बच्चों के मध्य एक बातचीत का आयोजन किया गया। उन्होंने 'आधुनिक युवा की आकांक्षाओं' पर चर्चा की।

रो ई मंडल 3090

परवीन जिंदल, एक पीडीआरआर जो डीजीएनडी (2021-22) चुने गए थे, का मंडल रोटरेक्टर और रोटेरियनों द्वारा अभिनंदन किया गया। अब तक तीन पीडीआरआरों मंडल गवर्नरों के रूप में चुने जा चुके है।

मंडल गति

रोटरी क्लब इलाहाबाद नॉर्थ - मंडल 3120

त्यौहारी सीज़न के उत्सव के अंतर्गत सिविल लाइंस, प्रयागराज, के 50 से अधिक कर्मचारियों को मिठाइयों, कपड़ों एवं फलों से भरे तोहफे प्रदान किए गए।

रोटरी क्लब सोनपथ - मंडल 3132

दीपावली और भाऊबीज त्यौहारों के अवसर पर जरूरतमन्द महिलाओं को रोटेरियनों ने साड़ियाँ, ब्लाउज़ पीस और नमकीन बांटे। इस सांकेतिक भाव ने आसपास के क्षेत्र में रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि की।

रोटरी क्लब बॉम्बे सी फेस - रो ई मंडल 3141

कर्तव्यों के परे जाकर स्वार्थहीन सेवा करने के लिए तीन लोगों एवं तीन संगठनों को व्यावसायिक उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किये गए।

रोटरी क्लब डोम्बिवली ईस्ट - रो ई मंडल 3142

क्लब की चिन्हक परियोजना बालमेला, स्कूली विद्यार्थियों के बीच में एक प्रतिभा खोज, का आयोजन अभिनव विद्यालय और रोटरी भवन में किया गया। पीडीजी उल्हास कोल्हाटकर ने इस रंगारंग कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब गुंटूर विकास - रो ई मंडल 3150

रो ई मंडल 6920, यूएसए, के छह क्लब और टीआरएफ़ के साथ साझेदारी में एक वैश्विक अनुदान परियोजना के तहत आंध्रप्रदेश के गुंटूर और प्रकासम जिलों के 82 सरकारी स्कूलों में 2,800 से अधिक डेस्क दान की गई। कार्यक्रम में आरआईडीई कमल संघवी मुख्य अतिथि थे।

विधियाँ

रोटरी क्लब कादरी - रो ई मंडल 3160

रोटेरियनों, आंगनवाड़ी कर्मचारियों और सरकारी एवं निजी क्षेत्र के पराचिकित्सकों की सहभागिता में विश्व पोलियो दिवस पर एक जागरूकता रैली निकाली गई। लगभग 800 लोगों ने हिस्सा लिया। निबंध लेखन और वाग्मिता प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई थी।

रोटरी क्लब सेवन हिल्स धारवाड़ - रो ई मंडल 3170

इस अखिल महिला क्लब द्वारा सुविधाओं से वंचित महिलाओं के लिए एक पाँच दिवसीय कपड़े के थैले बनाने की कार्यशाला का आयोजन किया गया। 25 प्रतिभागियों द्वारा 1,000 से अधिक ऐसे थैले बनाए गए।

रोटरी क्लब शनिवारसाँठे - रो ई मंडल 3181

आशा स्फूर्थी परियोजना के तहत, क्लब ने एक आंगनवाड़ी में बच्चों को आकर्षित करने के लिए उसकी दीवारों को रंगबिरंगी तस्वीरों से रंगा। कर्मचारियों से भी पर्यावरण को साफ एवं हरा-भरा रखने का अनुरोध किया गया।

रोटरी क्लब तिरुपुर मिडटाउन - रो ई मंडल 3202

एक विचारशील भाव से, परिसर में 50 पौधों को रौपने के अलावा, तिरुपुर के समीप वेल्लाकोविल के तीन सरकारी स्कूलों में क्लब ने 2,000 किताबें एवं खेल सामग्री दान की।

रोटरी क्लब पर्लसिटि तूतिकोरिन - रो ई मंडल 3212

धरती के रक्त - पानी - को बचाओ नारे के तहत स्कूल एवं कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए एक मिनी मैराथन का आयोजन किया गया। डीजी एस राजगोपाल ने रैली को हरी झंडी दिखाई जिसमें 600 से अधिक छात्र सम्मिलित हुये थे।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित

एल गुणाशेकरण द्वारा रुपांकन

चार सवाल

सम्मेलन में अपने क्लब अध्यक्ष-निर्वाचित को भेजना

2019 रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अध्यक्ष **जॉन ब्लौंट के साथ**

1 आपका पहला सम्मेलन कौन सा था?

वह 1988 में फिलाडेल्फिया में था। मैं अपनी माँ, बेटी और पत्नी को ले गया था, तो यह एक पारिवारिक यात्रा थी और साथ ही रोटरी सम्मेलन में जाने का बहाना भी। मैं कुछ सत्रों में गया, और फिर हमने फिलाडेल्फिया का आनंद लिया। वह एक शानदार यात्रा थी, लेकिन वह मेरे लिए एक यादगार सम्मेलन नहीं था क्योंकि मैंने वास्तव में उसमें भाग नहीं लिया था।लेकिन जब मैं कुछ वर्षों बाद नवनिर्वाचित गवर्नर था, मैं पोर्टलैंड, ऑरेगोन में हुए सम्मेलन में गया था। वह अद्भुत था। मैंने रोबर्ट फुल्घम जैसे वक्ताओं को सुना, जो अपनी किताब *आल आई रियली नीड टू नो आई लर्न्ड इन - किंडरगारटन* के लिए प्रसिद्द है। वह विलक्षण थे। मैं अपने अधिकांश भाषणों को उनके एक उद्धरण के साथ खत्म करता हूँ। उस सम्मेलन ने मेरी समझ को और व्यापक कर दिया कि मैं किस जगह जा रहा हूँ।

2 क्लबों को अपने निर्वाचित अध्यक्षों को किसी सम्मेलन में क्यों भेजना चाहिए?

1983 में, मेरे क्लब - सेबस्टोपोल का रोटरी क्लब, कैलिफ़ोर्निया - के सदस्यों ने निश्चय किया कि हम अपने अध्यक्ष-निर्वाचित को प्रति वर्ष सम्मेलन में भेजेंगे, चाहे कितना भी खर्चा आए। पहले वर्ष हमने देव मेडसन को भेजा। वह अपने साथ एक अनुदान संचयन के विचार को लाए जिसने हमारे क्लब में की जाने वाली चीजों को पूर्ण रूप से बदल दिया। जब वह वहाँ थे तो उन्हें यह विचार दूसरे क्लब से मिला। इसने पिछले सालों में बहुत पैसा कमाया। हमारी लागत निकलने के बाद भी लम्बे समय तक हमने उस व्यक्ति को भेजने के फल का आनंद लिया - यह किसी सम्मेलन में एक अध्यक्ष-निर्वाचित को भेजने का एक लाभ है।

हम अभी भी अपने अध्यक्ष-निर्वाचित को प्रति वर्ष भेजते है, बिना उस जगह की परवाह किये। वे सम्मेलन के जादू से बहुत ही प्रभावित, बहुत ही प्रेरित होकर, बहुत परिवर्तन के साथ लौटते है। वे रोटरी से इतना लगाव रखते है और इसको लेकर इतने जुनूनी है कि वे अगला वर्ष हमारे और हमारे क्लब के माध्यम से दुनिया को परिवर्तित करने में व्यतीत करने जा रहे है। ऐसा क्यों है? वे दुनिया को एक सूक्ष्म जगत के रूप में देखते है। वे लोगों से मिलते है। वे विचारों को वापस लाते है, वे संबंध बनाते है। पिछले सालों में हमारा क्लब एक शानदार क्लब बन गया है - और मुझे लगता है इसका एक महत्वपूर्ण कारण है कि नवनिर्वाचित नेतृत्व को सम्मेलन की एक दीक्षा प्राप्त होती है।

एक रोटेरियन के रूप में, यात्रा करने के लिए सम्मेलन से पहले और बाद का समय भी शानदार है। प्रत्येक होटल, प्रत्येक रेस्टोरेंट अन्य रोटेरियनों से भरा होता है। वे सभी पिन लगाते है, ताकि आप एक शानदार बातचीत की शुरुआत कर सकें - और अंततः दोस्ती की।

3 प्रत्येक वर्ष किसी को भेजने की लागत को आपका क्लब कैसे प्रबंधित करता है?

हम सदस्यों के बकायों से इसके बजट का प्रबंधन करते है। हम कोई अनुदान संचयन और उसी के जैसा कुछ नहीं करते। किसी साल यह एटलांटा में आयोजित होगा, और हमें वहाँ जाना अन्य जगहों की अपेक्षा सस्ता पड़ेगा। किसी साल यह बैंकॉक में होगा, और हमें वहाँ बहुत पैसा खर्च करना पड़ेगा। इस प्रकार 10 वर्षों की अवधि में यह औसत पड़ेगा। यह निश्चित रूप से एक बड़ी राशी है, लेकिन जो मूल्य हमें इससे प्राप्त होते है उसके सामने यह कोई सवाल नहीं है।

4 इस वर्ष रोटेरियन हैम्बर्ग में क्या आशा कर सकते है?

सम्मेलन की थीम - *पलों को कैद करें* - एक महत्व की बात करती है। क्लब अनुकूल बनने की कोशिश कर रहे है ताकि वे उन्नति करना जारी रख सकें। हमारे पास एक नयी सामरिक योजना है। हम पोलियो को खत्म कर रहे है। इसलिए आज में जियो - आज पर ध्यान दो और उसे बेहतर बनाओ। यही बात इस सम्मेलन के क्षणों को कैद करने और लोगों से मिलने और इस जादुई अनुभव को प्राप्त करने पर भी लागू होती है।

हैम्बर्ग सम्मेलन में, हम रोटरी के मूल सिद्धांतों: नेतृत्व, अखंडता, सेवा, विविधता, और भाईचारे - पर सामान्य सत्रों को आधारित कर रहे है। हमने इन मुख्य मूल्य मुद्दों से संबंधित ब्रेकआउट सत्रों का चुनाव भी कर लिया है। ये ऐसे मूलभूत अंग है जो स्थिर है, हालाँकि आप अपने क्लब को बेहतर बनाने और उसे अपडेट करने हेतु कार्य करते है।

© The Rotarian

Rotary PEOPLE OF ACTION

गाज़ा पीढ़ितों के लिए घर

टीम रोटरी न्यूज़

पिछले वर्ष नवम्बर के दौरान तमिलनाडू में गाज़ा तूफ़ान द्वारा कहर बरपाने के बाद, कई लोगों ने अपने घरों एवं संपत्ति को खो दिया। रोटरी ऐसी स्थिति में आगे आई और प्रभावित इलाकों में बाढ़ पीढ़ितों को सहायता प्रदान की।

लाभार्थियों का एक ऐसा ही समूह था तंजावुर ज़िले के एक वर्णनातीत गाँव नेत्तोदई में रहने वाले 41 परिवार का, जिनके लिए रोटरी क्लब रामनाद रॉयल्स, रोई मंडल 3212, ने घरों को प्रायोजित किया। ''जब हम बाढ़ पीढ़ितों को राशन वितरित करने के लिए इस गाँव से गुजरकर अधिरमपाटिनम जा रहे थे, तो हम नहर के दोनों तरफ टूटे हुये घरों को देखकर दंग रह गए और हम नुकसान का आंकलन करने एवं यह देखने के लिए वहाँ रुके कि लोगों की मदद कैसे की जा सकती है,'' क्लब के सदस्य एन कार्तिकेयन कहते है।

रोटेरियनों ने नेत्तोदई एवं आसपास के गाँवों के ग्रामीणों को रसद दिया और इन लोगों की ज़िंदगियों को बहाल करने के तौर-तरीकों पर काम करने के लिए इकट्ठा हुये। उन्होंने सामाजिक मीडिया पर ग्रामीणों के लिए घरों के निर्माण करने के उनके इरादों का प्रचार किया और जल्द ही दान मिलने लगे। आईपीडीजी चिन्नादुरई अब्दुल्लाह जो इस प्रयोजन हेतु दान करने वाले पहले शख्स थे, ने 1 जनवरी को भारत के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के वैज्ञानिक सलाहकार, पोनराज के साथ मिलकर नए घरों का उदघाटन किया। गावों में सौर लैम्प भी लगाए गए है और ''दरियादिल लोगों के प्रत्येक दान को तंजावुर के आसपास प्रभावित इलाकों के 775 परिवारों के पुनर्वास हेतु राशन, कंबल, मोमबत्ती, पानी की बोतल, कपड़े, छत की टाइल्स, मचान और अन्य आवश्यक चीजों में परिवर्तित किया गया है,'' क्लब के अध्यक्ष सोमासुंदरम कहते है।

आपदा प्रबंधन रोटेरियनों के लिए नई चीज़ नहीं है, 2015 के तूफ़ान के बाद क्लब द्वारा किए गए व्यापक राहत कार्यों, जिनमें कडलूर के समीप एक गाँव में 23 घरों का निर्माण भी शामिल है, को याद करते हुये वह कहते है।

हाल ही में, क्लब ने यूएस में तमिल संगम ऑफ कैरोलिना और अब्दुल कलाम विज़न इंडिया मूवमेंट की मदद से अतिरिक्त 36 घरों का निर्माण किया है।

एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

PDG चिन्नादुरई अब्दुल्ला ग्रामीणों से बातचीत करते हुए।

सेहत हेतु सचेतन

शीला नाम्बियार

सचेतन, सचेत ध्यान, सचेत भोजन नए जमाने की शब्दावली लगती है जो हाल ही में प्रचलित हुई है। तो आपको आश्चर्य हो सकता है कि क्या यह सिर्फ नए जमाने की बातें है या इसमें कुछ है भी।

सचेतन के अभ्यास और इसके समरूपी ध्यान संबंधी प्रथाओं ने कई अध्ययनों, विशेष रूप से मेसाचुसेट्स विश्विद्यालय के सेंटर फॉर माइंडफुलनेस द्वारा किए गए अध्ययनों के सामने आने के बाद वैज्ञानिक ध्यान आकर्षित किया है। अध्ययन सामान्य मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, अवसाद, चिंता, पुराने दर्द, कैंसर से बहाली और दूसरों में फाईब्रोमायल्जिया में सुधार दिखाते है। इस मन-शरीर प्रक्रिया के माध्यम से शारीरिक बीमारियों में सुधार को अब रोग के मुख्य प्रबंधन के बहुत ही महत्वपूर्ण पूरक के रूप में स्वीकार किया गया है।

सचेतन क्या है?

सचेतन और कुछ नहीं बल्कि वर्तमान समय के प्रति सजग और उद्देश्यपूर्ण जागरूकता है। तो आप पूछ सकते है कि इसमे क्या अनोखा है! वर्तमान समय से अभिज्ञ होने के कारण हम अपनी जिंदगियों में अधिक व्यस्त और सम्मिलित रहते है।

क्या आप अपने सहकर्मी के साथ हुई बहस में तल्लीन होकर अपने अंदर गुस्से और उत्तेजना को उमड़ता हुआ महसूस करते हुए घर आए है? क्या अपने कभी पीछे मुड़कर देखा है और आश्चर्य किया है कि दिन कैसे बीत गया, जिसकी कोई याद ही नहीं है? क्या आपने कभी टीवी के सामने बैठकर भारी मात्रा में चिप्स खाई है जिसका आपको अंदाजा भी नहीं कि आप कितना खा चुके है। ये सभी अवचेतन के उदाहरण है जो प्रतीकात्मक और निरर्थक है (उदाहरण के लिए अधिक खाने या चिंता के फलस्वरूप)।

सचेतन पलायनवाद के बारे में नहीं बल्कि इस पल में पूरी तरह से मौजूद रहने के बारे में है। यह वर्तमान क्षण की उसके दर्द, पीड़ा, ख़ुशी, प्रसन्नता या असुरक्षा की भावनाओं के साथ समीक्षा (बिना किसी निर्णय के) करने की क्षमता और उसके स्वरूप को पहचानने के बारे में है। स्थिति के प्रति सचेत होना सबसे पहले हमें उसे स्वीकारने में मदद करता है और फिर जब आवश्यकता हो इसे बदलने के लिए हम जरूरी परिवर्तन करते है। इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि आप किसी से गुस्सा है या निराश है तो उस भावना को पहचाने कि वह क्या है और फिर खुद से उस क्रोध/निराशा के स्रोत को जानने हेतु सवाल करें इससे आपको उस परिस्थिति से बेहतर ढंग से निपटने में मदद मिलेगी बजाए उसपर आवेग और नासमझी से प्रतिक्रिया देने के। बल्कि, चिंता या दर्द की भावना से भागने की कोशिश करने के बजाए उसे अपनाना, हमें हमारे बारे में बहुत कुछ बताता है और हमारी आत्म-जागरूकता को बढ़ाता है।

बिना कोई निर्णय करते हुए उपस्थित रहने और वास्तविक समय में जो हो रहा है उसे स्वीकार करने के लिए तैयार रहने की आदत हमसे हमारे संबध को बदल देती है, परेशानी केवल यह है कि, हम इनपर ध्यान नहीं देते क्योंकि हम तेज़ी से जीवन जीने और ज्यादातर तस्वीरों एवं सामाजिक मीडिया के साथ आभासी वास्तविकता के माध्यम से तुलना करने, कामना करने और निर्णय लेने में बहुत व्यस्त होते है।

सचेत होना एक आदत है। हमारे दिमाग के विचार वास्तव में बीमारी पैदा कर सकते है या उसे बढ़ा सकते है या भावना को दबा सकते है; इसलिए हमारे विचार मायने रखते है। इसलिए उनके बारे में अभिज्ञ होना हमारी सेहत के लिए महत्वपूर्ण है। माइंडफुल्नेस बेस्ड स्ट्रेस रिडक्शन कार्यक्रम के संस्थापक, डॉ काबत-ज़िन्न ने विभिन्न चिकित्सीय दशाओं जैसे कि चिंता, दर्द और यहाँ तक कि त्वचा की स्थिति जैसे सोरायसिस के लिए सचेतन और सचेतन से जुड़े अभ्यासों के फायदों पर कई अध्ययन किये है। सचेत ध्यान का उपयोग करके इस तरह की स्थितियों में सुधार, हमारे द्वारा झेले जा रहे दर्द या बीमारी से संबंधित विचार प्रक्रिया की गहन जागरूकता का परिणाम प्रतीत होता है। हमारे दर्द या बीमारी के बारे में किसी खास तरीके की सोच वास्तव में उस दर्द को बढ़ाती है या बीमारी की दिशा को परिवर्तित करती है। इस बारे में अभिज्ञ होना कि हम हमारे दर्द या बीमारी के प्रति कैसी प्रतिक्रिया देते है या उस बारे में क्या सोच रखते है उन विचारों को बेहतर बनाने में हमारी मदद करेगा और इस तरह दर्द या बीमारी को परिवर्तित करते है। जब हम किसी नकारात्मक परिणाम के बारे में चिंतन करना शुरू करते है या यह जानते है कि जब हम चिंतित होते है तो हमारी पीठ का दर्द बढ़ जाता है तो हमारा सचेत रहना शारीरिक स्थिति की दशा को परिवर्तित करने में मददगार होता है।

अधिक सचेत रहने के तरीके

- साधारण चीज़ों पर ध्यान दें - यह एक शावर लेने जितना ही सरल हो सकता है। पानी, तापमान, ध्वनि और उस अनुभव को महसूस करने के प्रति सचेत रहे। इस बात से कोई मतलब नहीं कि आप उसका आनंद ले रहे है या नहीं। केवल उस पल और उस अनुभूती के प्रति सचेत रहें। इसे एक आदत बनाएं।

- साँस लेना - कितना सरल लगता है। हम कदाचित ही अपनी सांसों के प्रति सचेत होते है। दिन में नियमित अंतरालों पर अपनी सांसों पर ध्यान देने की आदत डालें। यह हर बार हो सकता है जब भी आप एक परियोजना से दूसरी पर जाते है, या एक ग्राहक से दूसरा ग्राहक के मिलने पर या जब आप किसी बरामदे को पार करते है या अपने लिए एक गिलास पानी लेते है; रुकिए और साँस लीजिये।
- अपने शरीर की सुनें - कभी-कभी हम इस बात से अभिज्ञ होते है कि हमारे शरीर में हल्का सा दर्द या बेचैनी है। हालाँकि हम वास्तव में इस बात पर ध्यान नहीं दे सकते कि हमारा शरीर कैसे चलता है या हम कैसे बैठते है, खड़े होते है, खाते है या व्यस्त रहते है।
- हम कैसे अपने कूल्हों, पैरों, पीठ, बाँहों को उपयुक्त स्थिति में रखते है? क्या शरीर के किसी हिस्से में तनाव है? क्या यह हमारे चलने या बैठने के तरीके से बढ़ गया है? क्या हम किसी तरफ के अंग को अन्य के मुक़ाबले अधिक पसंद करते है? क्या एक तरफ का अंग कमजोर है? क्या हमारा अंतर्भाग व्यस्त है? यह हमेशा हमारे द्वारा ध्यान दिए जाने वाले पहलू नहीं होते। ऐसा करने से हमें अपने शरीर के बारे में गहन जागरूकता महसूस होगी। यह बदले में हमें हमारे शरीर के अनुकूल रखता है, इसके खिलाफ काम करने के बजाए इसके साथ काम करता है। इसी को सही रखने के लिए चीजों को करता है।
- अपने विचारों से अवगत रहें - आपके दिमाग में चल रहे विचारों को पहचाने। उनका अवलोकन ना करें ना ही उनसे निराश हों। केवल उनसे अभिज्ञ रहें।
- अपनी सभी इन्द्रियों का उपयोग करें - समय-समय पर अपनी सभी इन्द्रियों का उपयोग करने की कोशिश करें। उदाहरण के लिए जब आप बाहर टहलने जाते है तो उस स्थान, गंध या ध्वनियों के प्रति सचेत रहें। जब आप खाना पका रहे हो, तो सब्जियों के रंग के प्रति सचेत रहें, जब चाकू उन्हें काट रहा हो तो उसे महसूस करें, उनके पकने पर उनकी बदलती खुशबू आदि को महसूस करें। बल्कि सब्जियों को काटना भी एक सचेत ध्यानमग्न प्रक्रिया हो सकती है!
- पूरी तरह से जुड़े - यह विशेषरूप से तब महत्वपूर्ण है जब आप लोगों से मिल रहे हो। उनके साथ पूरी तरह से जुड़ना ना केवल बेहतर समझ और रिश्ते की अनुमति देता है बल्कि उन्हें यह महसूस भी करवाता है कि आप उनके साथ मौजूद है और उनसे जुड़े हुए है। हमारी तेज़ी से भागती दुनिया में हम सरसरी तौर पर बातचीत करने के आदी होते है बिना सोचे समझे किसी को भी चिंता में डाल देते है, उसे महत्वहीन महसूस करवाते है और संपूर्ण बातचीत ऊपरी तौर पर होती है।
- अभ्यास करें - सचेतन आधारित ध्यान अभ्यास कम से कम दस मिनट तक चल सकता है। आप उनमें से कई को यूट्यूब पर ऑनलाइन देख सकते है। आप काबत-जिन्न द्वारा बताए गए ध्यान को आजमा सकते है। आप पूछ सकते है कि कैसे दस मिनट का ध्यान आपकी मदद करता है! प्रतिदिन इस तरह के ध्यान का दस मिनट अभ्यास करने से सचेतन की आदत आपके पूरे शरीर में रम जाती है। यह अभ्यास बॉडी स्कैन से लेकर वास्तविक माइंडफुल्नेस बेस्ड स्ट्रेस रिडक्शन - MBSR सत्र तक कुछ भी हो सकता है। एक नियमित अभ्यास तय करें जो आप प्रतिदिन दिन के उसी समय पर करते है। समय के साथ, यह आपके 'होने' का तरीका बन जाएगा ना कि 'करने' का।

सचेतन के लाभों की विशाल श्रृंखला है जिनमें रोग प्रबंधन से लेकर सेहत के सामान्य सुधार की भावना और बढ़ती उत्पादकता तक सब शामिल है। क्या आपको कभी आश्चर्य होता है कि कभी-कभी आप कुछ चीज़ों को क्यों नहीं कर पाते? जरूरत पड़ने पर आप अपना ध्यान केन्द्रित क्यों नहीं कर पाते? आप स्वयं को व्यक्त करने में कठिनाई क्यों महसूस करते है क्योंकि आपके विचार एक चीज़ से दूसरी चीज़ पर डगमगाते रहते है? जब आपको पता है कि आपको ज्यादा नहीं खाना चाहिए फिर भी आप अधिक मात्रा में क्यों खाते है या आप अपने दिमाग में चलने वाले अनंत भावुक विचारों के साथ क्यों नहीं सो पाते है? दिन-प्रतिदिन के आधार पर सचेत ध्यान और सचेतन का एक नियमित अभ्यास आपके दिमाग को शांत करने और अधिक शांतिपूर्ण, ध्यान केन्द्रित एवं सार्थक जीवन अनुभव को बनाने का उत्तर हो सकता है।

लेखिका एक आब्स्टट्रिशन और स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं और फिटनेस और जीवनशैली परामर्शदाता भी हैं। उन्होंने दो किताबें : Get Size wise, Gain to Lose *लिखि हैं।*
www.drsheelanambiar.com

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Rotary
PEOPLE OF ACTION

साइकिल से स्कूल जाना

टीम रोटरी न्यूज़

डी जी रमेश वंगाला (बीच में) के साथ छात्र लाभार्थी। चित्र में रोटरी क्लब हैदराबाद गाचीबोवली की अध्यक्ष टी एस शशिकला, PDG टी वी आर मूर्ति और तमन्नामु विजेन्द्र राव भी मौजूद हैं।

अपने बुनियादी शिक्षा और साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत, रोटरी क्लब हैदराबाद गाचीबोवली, रो ई मंडल 3150, ने 14 अन्य क्लबों के साथ मिलकर, विभिन्न सरकारी स्कूलों के वंचित लेकिन मेधावी छात्राओं के बीच 100 साइकिलें वितरित किया।

क्लब के सचिव देबजानी चटर्जी ने कहा,''ये बच्चे प्रति दिन स्कूल जाने के लिए लंबी दूरी तय करते हैं और साइकिल प्राप्त कर बहुत खुश थे क्योंकि इससे उन्हें पढ़ाई के लिए समय बचाने में मदद मिलेगी।'' क्लब के अध्यक्षा टी एस शशिकला ने सभी साइकिलों को प्रायोजित किया था।

कार्यक्रम में डीजी रमेश वंगाला, एजी उषा रानी और मंडल के अन्य क्लबों के रोटेरियन भी मौजूद थे। ■

स्वच्छ भारत के लिए साईकिल यात्रा

DG ए वेंकटाचलापति (दाएं से तीसरे) की उपासतिथी में निगम आयुक्त डॉ के विजयाकार्तिकेयन आयोजन को शुरू करते हुए।

रो ई मंडल 3201 द्वारा कोयंबटूर से कोचि तक 200 किलोमीटर की दूरी तय करने वाले 75 प्रतिभागियों की एक साइकिल रैली को कोयंबटूर निगम आयुक्त डॉ के विजयाकार्तिकेयन ने डीजी ए वेंकटाचलपति, आरपीआईसी राजादुरई माइकल और मंडल सचिव चेला राघवेन्द्रन की उपस्थिति में हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रोटरी दिवस मनाने के लिए आयोजित *स्वच्छ भारत के लिए साईकिल यात्रा* कार्यक्रम ने केवल स्वच्छता बनाएं रखने का संदेश फैलाया बल्कि इसने रोटरी की छवि को भी बढ़ावा देने में योगदान दिया।

105 आरएएफ बटालियन के रोटेरियन, रोटारेक्टरों, रोटेरियनों की पत्नियों और जवानों ने अगली शाम कोचि में नेदुम्बसेरी एयरपोर्ट पर सम ापन रेखा को छूने के लिए पालघाट, ओटापलम, वाडेनचेरी, त्रिशूर, इरिनजालकुडा और चालुदडी से होते हुए साईकिल की सवारी की। रोटरी क्लब अंगमली द्वारा आयोजित इस समापन-सत्र की अध्यक्षता पीडीजी सुनील जकारिया ने की।

उसी समय, महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती और विश्व पोलियो दिवस (24 अक्टूबर) मनाने के लिए 300 प्रतिभागियों के एक वॉकथॉन को प्रथम महिला वीना पैति ने झंडा दिखाकर रवाना किया। ■

On the racks

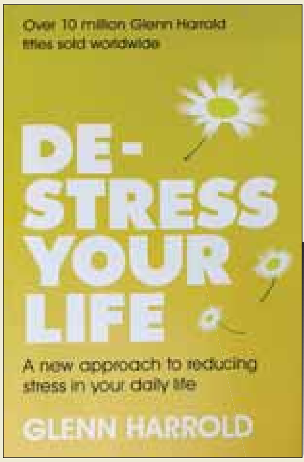

De-stress your life

Author : **Glenn Harrold**
Publisher : **Hachette India**
Pages : **183; ₹299**

The must-have book for de-stressing your life and embracing modern living.

Using tools and techniques such as meditation, regulated breathing and self-hypnosis, expert Glenn Harrold shows you how to cope with the pressures of modern life and create a happier, stronger and more resilient you. Through seven easy steps you will learn:

- What stress is and what causes it
- The mental and physical effects of stress
- Techniques to help you cope with stressful situations and problems
- Ways to be kinder to yourself and build a greater sense of self-worth

From finances and careers, relationships and self-image to time management and life goals, *De-stress your life* will teach you the skills, techniques and practices you need to achieve for a healthy work/life balance and find your own inner calm.

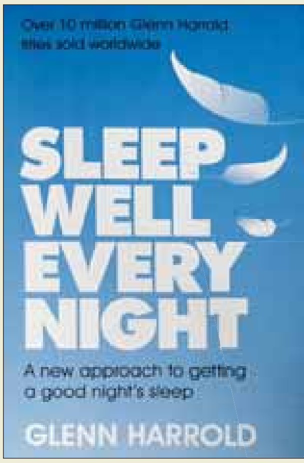

Sleep well every night

Author : **Glenn Harrold**
Publisher : **Hachette India**
Pages : **178; ₹299**

In this easy-to-follow six-stage programme, clinical hypnotherapist Glenn Harrold reveals how you can truly change the way you sleep.

By rethinking basic lifestyle choices and using 100 per cent natural remedies, including self-hypnosis, Harrold shows that a good night's sleep is only a step away. *Sleep well every night* will give you the tools and knowledge to:

- Understand what sleep is and why it's so important
- Identify common problems and know how to tackle them
- Make simple but powerful changes that will drastically improve your quality of sleep
- Eliminate the hidden causes of insomnia

With practical exercises, top tips and easy-to-follow techniques, this invaluable programme will help you sleep easier, better and longer. It's time to take back control of your day and night, reclaiming your right to a good night's sleep.

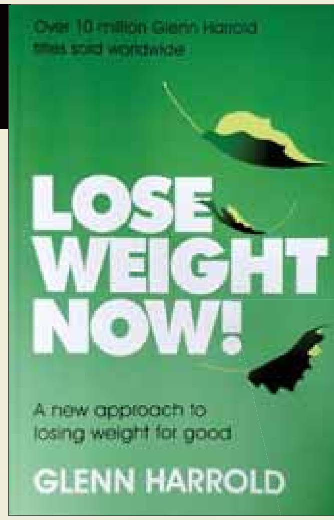

Loss weight now!

Author : **Glenn Harrold**
Publisher : **Hachette India**
Pages : **200; ₹299**

Do you want to lose weight and stay slim?

Do you wish it was easy to choose healthy foods?

Would you love to have the will-power to exercise regularly?

Do you wish losing weight was really, really easy?

Glenn Harrold has developed a safe and revolutionary approach that will transform your relationship with yourself and with food. He promises to give you total control of your weight, so you never need to diet again.

Successful weight loss starts in your head, not at the supermarket or at the gym, and Harrold's quick and easy exercises will change your mindset in an instant. Suddenly you will find it really easy to eat healthy food all the time, you'll want to get out and exercise, and you'll not even think about all those foods you know are bad for you but you normally can't resist.

Weight loss has never been easier. With Glenn Harrold you'll watch the pounds disappear forever — and you'll love it!

Compiled by Kiran Zehra
Designed by Krishnapratheesh S

एयरलाइन अर्थशास्त्र

LBW

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

1970 के आखिरी दशक में पहली बार मैंने दिल्ली, जहाँ मैं 1958 से रह रहा था, से मद्रास, जैसा कि उसे तब कहा जाता था, तक उड़ान भरी थी। कप्तान ने कहा, इस उड़ान को दो घंटे और बीस मिनट लगेंगे। हमने शाम 5 बजे प्रतिष्ठित आईसी 539 (या वो 540 था) से उड़ान भरी और 7.20 बजे उतर गए। भारत में तब केवल एक ही घरेलु हवाई कम्पनी थी, इंडियन एयरलाइन्स, जो करीब दस साल पहले एयर इंडिया, जो अंतर्राष्ट्रीय मार्गों पर उड़ता था, में विलय हो गई। अगले 30 वर्षों के लिए, इसे इन दो शहरों के बीच उड़ान भरने के लिए उतना ही समय लगा - 2 घंटे 20 मिनट।

तो मेरे आश्चर्य की कल्पना कीजिए जब निजी एयरलाइन की टिकट पर लिखा था प्रस्थान 1110 बजे और आगमन 1420 बजे। इसका मतलब तीन घंटे और 10 मिनट का समय। हेलो, मैंने स्वयं से पूछा, क्या मुझे एक-स्टॉप वाली फ्लाइट मिली है? या मैं किसी टर्बो-प्रोप प्लेन की उड़ान भर रहा हूँ? मैंने टिकट, एयरलाइन की फ्लाइट की समय सारणी, फ्लाइट ट्रैकिंग एप्स सभी पर चेक किया और सभी ने यही कहा कि यह अविराम फ्लाइट है।

इसलिए ट्विटर पर जाकर मैंने पूछा कि क्या दोनों शहर खिसक गए है। फिर से, 100 अजीब प्रतिक्रियाएँ मिलने के बाद, मुझे कोई संतोषजनक प्रतिक्रिया नहीं मिली जब तक कि किसी ने उत्तर में कहा कि इसका संबंध 'ऑन-टाइम प्रदर्शन' नामक एक सूचक से है। आप यह कहकर कि उड़ान में ज्यादा समय लगेगा, दावा करते है कि आपको देर नहीं हुई है। फिर जब आप सामान्य उड़ान समय - आखिरकार दूरी और जहाज के उड़ाने की गति दोनों समान रहते है - में उतरते है तो आप कहते है कि आपका बढ़िया ऑन टाइम प्रदर्शन है।

टिकिट पर प्रिंट हुये इस अतिरिक्त उड़ान समय के कारण वे देरी से उड़ान भर पाते है - जैसा कि मेरे साथ हुआ। हम 50 मिनट देरी से उड़े और 2 घंटे 20 मिनट के बाद समय पर पहुँच गए! और ऐसा तब हुआ जब एयरलाइन ने मुझे यह कहकर उड़ान के निर्धारित समय से दो घंटे पूर्व ही आने के लिए विवश किया कि विलंब होने पर वे इंतज़ार नहीं करेंगे। जले पर नमक छिड़कने के लिए उन्होंने बहुत महंगा टिकिट दिया था। साथ ही दो साल पूर्व वे जितना नाश्ता देते थे उससे आधे नाश्ते का उन्होंने दोगुना दाम लगाया। साथ ही यह एयरलाइन बीच की सीटों को छोड़कर बाकी सभी सीटों के लिए अतिरिक्त शुल्क लेती है। इससे तो शर्म भी शर्मिंदा हो जाएगी।

लेकिन मैंने मेरा बदला लिया। सीटबेल्ट के निशान के हट जाने के बाद, मैंने एक प्रीमियम सीट देखी और वहाँ चला गया। एयर होस्टेस, जो नई-नई एयर होस्टेस बनी थी, ने कहा कि मुझे इसके लिए अतिरिक्त शुल्क देना पड़ेगा। लेकिन मैंने उसकी ओर सख्ती से घूरा और वो बेचारी रफूचक्कर हो गई, शायद इसलिए क्योंकि वह किसी ऐसे व्यक्ति को तंग नहीं करना चाहती थी जो उसके कम-पसंदीदा दादाजी जैसे दिखते थे।

एयलाइन जितना नाश्ता देते थे उससे आधे नाश्ते का उन्होंने दोगुना दाम लगाया। साथ ही यह एयरलाइन बीच की सीटों को छोड़कर बाकी सभी सीटों के लिए अतिरिक्त शुल्क लेती है। इससे तो शर्म भी शर्मिंदा हो जाएगी।

लेकिन गंभीरतापूर्वक, दोस्तों, ये एयरलाइंस कर क्या रही है? एक परिवहन अनुसंधान संस्थान में लंबे समय तक एक सलाहकार होने के नाते, मैं परिवहन विशेष रूप से विमानन का एक विशेषज्ञ हूँ। मैं केवल यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि सरकार - सटीक तौर पर डीजीसीए - कैसे निजी एयरलाइंस को ग्राहकों का इतना खून चूसने दे रही है।

मुझे सामान्य अर्थशास्त्र समझ में आता है कि यदि मांग आपूर्ति से बढ़ती है तो कीमतें बढ़ती है। लेकिन हवाईसेवाओं के मामले में ऐसा नहीं है। वे जो चाहे शुल्क वसूलते है - उनकी लागत के मुक़ाबले या तो बहुत अधिक या बहुत कम। गतिशील मूल्यांकन का गणित पूर्ण रूप से लागत को नज़रअंदाज़ करता है। कीमतें पूर्णतः अपारदर्शी होती है।

चाहे जो हो, आराम से बैठने की मेरी खुशी दिल्ली में उतरने के ठीक बाद समाप्त हो गई। हमें एक बस में बैठकर पुराने अंतर्राष्ट्रीय टर्मिनल तक ले जाया गया जिसे अब टी2 कहा जाता है और अब कम लागत का ढोंग करने वाली एयरलाइंस के लिए नया घरेलू टर्मिनल है। 1986 में बना यह टर्मिनल वैसा दिखता भी है। केवल एक चीज़ जो बदली है वह है टर्मिनल में घुसते से ही शौचालय से आने वाली दुर्गंध। मैं शर्त लगा सकता हूँ कि वह भी 1980 के दशक की है। ■

RIPE मलोनी को मिला फेटा अनुभव

चित्र: रशीदा भगत

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020 | issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on 1st of every month

ADVT